बजरंग बली संगठन

इंदा छोई गांव की रामायण

इतिहास

PARDEEP GHORELA;ANIL KATIWAL;SUNIL HODKHASIYA

1/1/2017

AUTHOR

इंदा छोई गांव की रामायण का इतिहास

ग्राम इंदा छोई में रामायण का प्रारंभ सन 1979 के वर्ष से प्रारंभ हुआ |
तीन अलग-अलग स्थानों से लिखी गई रामायण को लाया गया, इन तीनों के लेखक अलग-अलग श्री यशवंत सिंह जी, श्री राधे श्याम जी और श्री जगन्नाथ जी थे
इन तीनों रामायण को आधार रखकर इन में से शुद्ध वर्तनी करके प्रजापति श्री प्रभाती राम जड़िया वर्मा जी व उनके सहयोगी मित्र गणों ने मिलकर रामायण को संशोधित कर फिर से लिखा |
हिंदुत्व के अनेक पूर्वजों ने रामायण के लिए मिलकर काम किया जिनमें गांव इंदा छोई के भी पूर्वज शामिल है
एक पूरी मंडली ने मिलकर रामायण को लिखा और उसके किरदार निभाए|
रामायण को फिर से संशोधित और शुद्ध करने में उनको 6 महीने से अधिक का समय लग गया |
रामलीला के आयोजन से होने वाली धनराशि से हनुमान मंदिर बनवाया गया जो कि आज भी गांव के पूर्व दिशा में विराजमान है
इसके बाद समय-समय पर दान मिलता रहा और गांव में उनसे प्राप्त हुआ धन गौशाला, बाबा निहाल गिरी समाध, भूमिया खेडा और अन्य स्थानों पर लगता रहा|
आज 2017 में इस रामायण को डिजिटल किया गया

"हिंदुत्व के अनेक पूर्वजों ने रामायण के लिए मिलकर काम किया जिनमें गांव इंदा छोई के भी पूर्वज शामिल है

- नंबरदार श्री राजेंद्र बिरथलिया वर्मा जी,
- श्री मूलचंद होदखासिया जी,
- श्री कृष्ण होदखासिया जी,
- मास्टर श्री गुलाब होदखासिया जी,
- श्री कृष्ण कांटीवाल जी,
- श्री बीरबल रावण गुरी जी,
- श्री भीम देमीवाल जी,
- श्री वीरू नांदवाल जी,
- सेठ श्री सत्यनारायण,
- श्री अमरनाथ नांदवाल जी,
- श्री धर्माराम किरोड़ीवाल जी,
- श्री सतबीर किरोड़ीवाल जी,
- श्री राजेंद्र बिरथलिया जी,
- श्री प्रभाती राम जड़ीया जी ,
- श्री बलिया राम बिरथलिया जी

आदि एक पूरी मंडली ने मिलकर रामायण को लिखा और उसके किरदार निभाए"

Member Of Indacchoi Ramayan

Pardhaan	Director	Stage Secratory	Cashier
Samsher Jailwal	Anil Katiwal		Anil Katiwal
9416122124	9812237711		9812237711

Sr No.	Name	Gottar	Son Of Shri	Contact No	Role
1	Anil kumar	Katiwal	Karishan Ram	9812237711	Ram, Sharwan
2	Bunty	Hodkhasiya	Karishan Ram	7700019298	Sita, Angad, Bhilni ,Vedpati
3	Sunil	Hodkhasiya	Harichand Singh	9812384132	Ravan, Kevat
4	Jagdeep	Kirodiwal	Satish Kumar	7357212510	Lakshman
5	Rinku (Tony)	Kundalwal	Surajbhan Singh	9067273575	Bharat
6	Rajbir	Birthaliya	Om Parkassh Singh	7900051330	Satru Ghan, Janak, Kumbhkaran
7	Mangal	Kaloia	Inder Singh	9468428108	Kaikayi, Vishvaa Mittar
8	Vinod	Jadiya	Rohatash Singh Bobali	7700033211	Hanumaan, Kaushalyaa
9	Rakesh	Parmwal	Dleep Singh	9068139861	Meghnath, Taara , Dooshan , Mantri
10	Samsher	Jailwal	Pooran Singh	9416122124	Dashrath, Sugreev
11	Ranvir (Rana)	Jadiya	Pyaare Laal Singh	9416671323	Maarich, ParshuRam
12	Ravi	Jadiya	Ramkishan Singh	-------------	Jataayu , Akshay Kumar, Soorpan Khaa, Naraantak
13	Sandeep	Kirodiwal	Lilu Ram Singh	------------	Khar, Sampaati, Makr Dhavaj
14	Rajesh	Kirodiwal	Changu Ram Singh	------------	Kaal Nevik, Mantri , Jaamvant,
15	Pardeep (Deepu)	Ghorela	Sunder Singh	9812595472	Vasisth, Sabaahu, Dadhibal, Lankini
16	Sonu	-------------	-----------------	-------------	Sumitraa , Dancer
17	Kuldeep	Birthaliya	Rajkumar Singh	98122556553	Gahoo, Baali, Ahi Ravan, Shringi Rishi, Ravan Mantri, Kevat
18	Parveen Kumar	Birthaliya	Rajkumar Singh	8685861371	Manthraa,
19					
20					

रावण और वेदपति

वेद पति अपने दिल में :- अहा! जबसे पिता मेरे कुशध्वज ऋषि ने यह प्रण किया कि मेरे पति विष्णु भगवान होंगे उसी दिन से उनके ध्यान में अपना जीवन बिता रही हूं .. परंतु प्रभु ने अभी तक मेरी कोई खबर नहीं ली है हे स्वामी जल्दी आओ और मुझे अपने साथ ले जाओ..

रावण का पर्दे के अंदर से आना और वेद पति को देखना

रावण :-ठंडी सांस में मन में हंस कर

दोहा :- निर्जन वन में सोमती ऐसी सुंदर नार
जैसे मोती कींच में चमकत है हर बार
नहीं नहीं यह तो उससे भी सुंदर है

दोहा :-इस निर्जन स्थान में तो कामिनी का वास
ज्यों अंधियारी रात में चंद्र देव का वास

वेदवती रावण से:- क्या विचार कर रहे हो महाराज

रावण वेदवती से:- हे देवी मैं इसका क्या जवाब दूँ आपकी सुंदरता ही दुनिया से निराली है

वेदवती रावण से :- हे ज्ञानी पुरुष विचारों की उलझनों को छोड़ो और अभिप्राय प्रकट करो

रावण वेदवती से :- हां-हां देवी भूल गया, हां देवी तुम्हारा नाम क्या है और तुम कौन हो ?

वेदवती रावण से :- मैं कुश ध्वज ऋषि की कन्या हूं मार्ग से भटकी हुई जोगन हूं .

रावण वेदवती से :- क्या अभी तुम्हारा विवाह नहीं हुआ

वेदवती रावण से :- हो चुका है

दोहा :- जिसे 14 भवन और 3 युग के भगवान कहते हैं
उसी को बस मेरा जीवन पति प्राण कहते हैं

रावण वेदवती से :- कल्पना ! झूठी बात ! मृगतृष्णा के पीछे दौड़ने वाली मृग नैनी, क्या धूप को अपनी मुट्ठी में बंद करने का इरादा कर रही हो औ भोली नादान इस इरादे को छोड़ दो .

दोहा :- तुझको सर्वदा तड़पाती रहेगी आस तेरी
हो नहीं सकती कभी इच्छा यह पूरी तेरी

वेदवती रावण से :- दोहा :-
इच्छा पूरी हो ना हो परंतु ,अब मैं विचारों को छोड़ नहीं सकती
एक बार जिस को पति मान लिया है ,उस से मुंह मोड़ नहीं सकती

रावण वेदवती से :- निस्संदेह ! तू अपने ध्यान में मग्न है देखो यह सुख बार-बार नहीं आते जब योवन कि यह झलक चली जाएगी तो इन दिनों को याद करके बड़ा पछताओगी

दोहा :-
पड़ा जो धूल है मनहरण अनमोल मोती है
हे सुंदर फूल तू क्यों पांव तले पाल होती है

वेदवती रावण से :- क्रोध से औ! घमंडी तू इस वासना का मैल चढ़ाकर मुझे मारना चाहता है

दोहा :-

मिले जो राज दुनिया का वचन पर वार दूंगी मैं
तेरी सोने की लंका को एक प्रण पर वार दूंगी मैं
रावण वेदवती से :- प्यार से सुंदरी होश कर
आंखें खोल तेरे ज्ञान को काहे का पर्दा पड़ा है
जानती नहीं तेरे सामने कौन खड़ा है
दोहा:-
तेरी कोमल जुबान से शब्द जो कड़वे निकलते हैं
यह तेरे तीखे बाण है जो प्रेम की गर्दन पर चलते हैं
वेदवती रावण से :-दोहा:-
समय आने पर ज्ञानी भी पाप के रास्ते चलते हैं
अनोखी बात यह है वजर भी मुट्ठी में गलती हैं
रावण वेदवती से :-क्रोध से समझा अरी अभागिन बाला तू अपनी बुद्धि से लाचार है
जो रावण का कहना मानने से इनकार है
दोहा:-
क्रोध को मेरे समझकर ,खेलती है खेल तू
बोलकर कड़वे वचन अग्नि पर डाले तेल तू
बैर कर रावण से जग में कौन रहने पाएगा
पुकार अपने सहायक को तुझ को कौन बचाने आएगा
वेदवती रावण से :- क्रोध से
शर्म कर हीय के अंधे कुछ तो शर्म कर
दोहा:-
रावण दुखिया को मत दुखा मैं खुद ही बेकार हूं
जीवन आशा कुछ नहीं अपने ही आप भार हूं
रावण वेदवती से :-क्रोध में बस बस अब आगे मत बोल
दोहा:-
बहुत सुन चुका हूं बंद कर अपनी कहानी को
इस अभिमान में खो दोगी आखिर जिंदगानी को
वेदवती रावण से :- क्रोध से क्या जिंदगी का मोह दिखाकर अपने वश में करना चाहता है
औ चंडाल यहां से चला जा
और कुछ शर्म है तो अपनी शक्ल ना दिखा
दोहा:-
देखना पापों का भी एक भारी पाप है
इसलिए ही मेरे मन में और पश्चाताप है
मन दुखा कर दिन का क्या हाथ तेरे आएगा
याद रख तुझको मेरा यह पाप ही खा जाएगा
रावण वेदवती से :-क्रोध में हो इतना अभिमान देवताओं के राजा का इतना अपमान
दोहा:-
जो हुआ अच्छा है वह ध्यान ही बेकार है (गर्दन पकड़ कर)
देख मेरा हाथ ही तेरे गले का हार है
वेदवती रावण से :- क्रोध में औ अन्यायी हाथ लगा कर तूने मेरी काया ही

भ्रष्ट कर दी | तेरे छूने से यह शरीर अशुद्ध हो गया| अब यह शरीर भगवान को नहीं पा सकता | इसलिए मैं इस शरीर को त्यागकर नया रूप धारण करूंगी और उसी से तेरी मौत का कारण बनूंगी |

दोहा:-

बना है सामने मेरे तू विकराल की मूरत

जनकपुरी से उठूंगी बनके तेरे काल की मूरत

पर्दे में जाना वेद पति का सीन समाप्त

दशरथ दरबार

दशरथ वशिष्ठ से:- हे गुरुजी! रघुवंश की समाप्ति के कलंक का टीका मेरे ही मनहूस माथे पर लगना था, वैसे तो मेरे भंडार में किसी भी मौज की कमी नहीं है

गुरु वशिष्ठ दशरथ से :- वैसे तो मनुष्य दिल के घोड़े दौड़ाता रहता है लेकिन अपनी यह कहानी किसी के समझ में नहीं आती | आपके चेहरे के ऊपर यह उतार चढ़ाव कैसे हुआ ? कृपा करके आप इस कहानी को हल कीजिए ताकि सब के दिल को धैर्य हो|

दशरथ वशिष्ठ से:- हे गुरु जी ! यह तो ईश्वर की कृपा है प्रजा खुशहाल है बैरी पायमाल है

परंतु हे गुरुजी एक ख्याल है जो मुझको तड़पाता रहता है

हे गुरु जी ! मैं अब तक औलाद से खाली हूं अगर एक पुत्र भी हो जाता तू इस राज्य को इसका पालनहार मिल जाता | हां किसी ने सच ही कहा है:-

चाँद चढ़ै ,सूरज भवै ,दीपक जले हजार

जिस घर में बालक नहीं वह घर निपट अंधियार

गुरु वशिष्ठ दशरथ से :- हां महाराज वह घर-घर नहीं होता बल्कि एक तरह का श्मशान हो जाता है जिस घर में बच्चा खेलता दिखाई ना दे| औलाद जिंदगी का सहारा और आंखों का तारा होता है | हे महाराज आप शीघ्र ही श्रृंगी ऋषि जी को बुलाइए और यज्ञ की तैयारी कीजिए आशा है ईश्वर आप की कामना पूरी करेंगे|

दशरथ वशिष्ठ से:- हां उनकी शोहरत की चर्चा तो अक्सर मैंने भी सुनी है और आप के कहने से और भी तस्दीक हो गया है

मंत्री जी आप जल्दी जाइए जिस तरह हो सके श्रृंगी ऋषि को साथ ले आइए मंत्री दशरथ से महाराज की आज्ञा का सदा पालन हो मैं आज ही जाता हूं और ऋषि जी को अपने साथ ले कर आता हूं और आप यज्ञ की तैयारी करें

मंत्री का जाना नृत्य का आना

दशरथ का दरबार

महाराज दशरथ और योग गुरु वशिष्ठ का साथ में विराजमान होना

दशरथ वशिष्ठ से:- ऋषिवर मंत्री जी को गए हुए बहुत दिन हो गए हैं लेकिन अभी तक लौटकर नहीं आए हैं और ना ही कुछ खबर ही लाए | मालूम नहीं श्रृंगी ऋषि जी मिले हैं या नहीं | बड़ी गलती की मंत्री
जी को भेज दिया असल में मुझे स्वयं ही जाना चाहिए था |

संदेशवाहक का दशरथ के दरबार में आना

दूत महाराज दशरथ से :- महाराज की जय हो ! मंत्री जी व श्रृंगी ऋषि जी तशरीफ ला रहे हैं और डियौडी पर विराजमान हैं उन्होंने दास को खबर करने के लिए भेजा है.

महाराज दशरथ दूत से :-क्या कहा ! श्रृंगी ऋषि जी तशरीफ ला रहे हैं !

द्वारपाल दशरथ के दरबार में सभी विराजमान सभा पत्तियों से :-

सुनो सुनो सुनो ! महाराजाधीराज दशरथ के दरबार में
तपस्वियों में महातपस्वी मुनियों में महामुनि विषयों में महर्षि वैद्य में महा वैद्य महामुनि श्रृंगी जी डियौडी पर विराजमान होकर पधार रहे हैं |

महाराज दशरथ दूत से :- अहोभाग्य सौभाग्य! मैं स्वयं ही उनके स्वागत के लिए चलता हूं|

गुरु वशिष्ठ दशरथ से :- मैं भी आपके साथ चलता हूं |

दोनों का स्वागत के लिए चले जाना

कुशलक्षेम वशिष्ठ पूछेंगे श्रृंगी ऋषि से

दशरथ श्रृंगी ऋषि से :- प्रणाम मुनिवर!

श्रृंगी ऋषि दशरथ से:- आनंद करते रहो राजन! कहो किस तरह हमें याद किया ?

दशरथ श्रृंगी ऋषि से :- दोहा:-

बहुत दिनों से ऋषि जी लगी हुई थी आस |
दर्शन करके आपके मीटा सकल दुख: त्रास ||
मिटा सकल दुख: त्रास मुनि जी धन-धन भाग हमारे
दशरथ का घर हुआ पवित्र जब से आप पधारे
दो कर जोड़ नमस्ते करता चरणों पडूं तुम्हारे
हुई बहुत तकलीफ आपको कष्ट उठाके पधारे

नाटक

दशरथ श्रृंगी ऋषि से :-हे मुनिवर ! कई दिनों से आपके दर्शन की अभिलाषा थी और मुझको पूर्ण आशा थी की आप अवश्य दर्शन देंगे चलिए दरबार को सुशोभित कीजिए और दरबार में सबको दर्शन दीजिए|

श्रृंगी ऋषि दशरथ से:- दोहा:-

क्यों की इतनी तकलीफ क्या है असल मुराद
किस कारण हम को किया राजन तुमने याद
राजन तुमने याद किया क्या अटका काम तुम्हारा है
विपत बड़ी तुम पर भारी कहे अनुमान हमारा है
हम वनवासी संन्यासी क्या देंवे तुम्हें सहारा
मेरे लायक काम जो हो किजौ जरा इशारा

नाटक

श्रृंगी ऋषि दशरथ से:- हे राजन् प्रसन्न व आनंदित रहो
कहो क्या कारण है जो हमको याद किया ?
जो बात कहनी है जल्दी कहो ?

दशरथ श्रृंगी ऋषि से :- हे ऋषि वर! दशरथ बहुत दुखिया और लाचार है

बल्कि जिंदगी तक बेजार है
चारों तरफ से निराशा छाई हुई है
केवल आपके दर्शनों ने ही धीर बंधाई है
यदि कुछ हो सकता है तो कुछ इमदाद कीजिए
वरना अपने हाथों से मुझे संयास दीजिए
मैं सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार हूं
केवल आपकी आज्ञा का इंतजार है
श्रृंगी ऋषि दशरथ से:- राजन ! कैसी बातें करते हो | तुम्हारे यह है उल्टे-सीधे फिकरे मेरी समझ में नहीं आते हैं ,व्यर्थ समय गवाने से क्या लाभ है इसलिए पहले तौलो और फिर मुंह खोलो
दशरथ श्रृंगी ऋषि से :-गाना
बहरे तबील हे ऋषि जी गई उम्र सारी गुजर
1. आज तक मेरे घर में पिसर ना हुआ|
यही रहती है चिंता मुझे रात दिन||
है जिनका कोई तख्ते जिगर न हूआ||
2. कोई इस के बराबर बीमारी नहीं |
पेश चलती मगर कुछ हमारी नहीं ||
हाय! विधाता ने बिगड़ी सवारी नहीं |
मेरी आहों का कुछ भी असर नहीं||
3. राज का कोई वारिसन वाली नहीं |
कोई मुझसा जमाने में खाली नही ||
कोई मुझ सा बढ़ कर सवाली नहीं ||
ध्यान दयालु लेकिन इधर ना हुआ |||

वार्तालाप

दशरथ श्रृंगी ऋषि से :- हे ऋषिवर जी ! लेकिन उमर का बहुत सा हिस्सा बीत चुका है | जवानी के दिन एक एक करके ढलने लगे है | बुढ़ापा आने लगा है | लेकिन आज तक औलाद से खाली हूं और मैं अपने तमाम उपाय कर चुका हूं | यहां तक कि लगातार तीन शादियां कर चुका हूं और दुनिया में भी बदनाम हो चुका हूं | गुरु जी !अब तो इस घर की रौनक थोड़े दिन की मेहमान है | बस आप आ गए हैं कृपया करके पुत्रेष्टि यज्ञ करके मुझे पुत्र के लिए आशीर्वाद दीजिए |

नाटक

श्रृंगी ऋषि दशरथ से:- हे राजन ! जो कुछ आपने कहा है मैंने अच्छी तरह से सुन लिया है , यों इस तरह आहे ना भरो ,बल्कि शीघ्र ही यज्ञ की तैयारी करो | यदि ईश्वर को बात मंजूर है तो उसे करने में देर क्या है |

नाटक

दशरथ श्रृंगी ऋषि से :-हे मुनिवर ! यज्ञ का सामान तो पहले से ही तैयार है बस आपकी आज्ञा का इंतजार था |

ऋषि का यज्ञ का रचना

यहां पर दशरथ वशिष्ठ श्रृंगी ऋषि व मंत्रीगण आदि सब साथ में
ओम भूर्भुव स्वाहा तत्सवितुर्वरेंयं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात् ओम शांति ही शांति ही शांति ही
श्रृंगी ऋषि दशरथ से:- हे राजन ! यह शेष यज्ञ आहुति से प्राप्त फल महल में ले जाओ | इसके 3 भाग करके तीनों रानियों को खिलाइए |
जब ईश्वर होंगे आप पर दयाल
पल में करेंगे तुम्हे निहाल

दशरथ का महल में जाना पर्दा बंद और नृत्य का आना

अगला दृश्य

दशरथ का दरबार

महल से बांदी का आना

बांदी दशरथ से:- महाराज बधाई हो ! यह दासी अभी-अभी महल से आई है और ऐसी खुशखबरी लाई है , जिसके सुनते ही आपका दिल मसरूर होगा | जय हो ! महाराज की जय हो ! आप के महल में चार कुंवर पैदा हुए हैं | ईश्वर ने बहुत मुद्दत के बाद यह दिन दिखाया है | हे महाराज !आप को रानियों ने याद किया है |

नाटक

दशरथ बांदी से :- हे दासी तुमने खुशखबरी सुनाई है जिसे सुनकर मेरा दिल बहुत खुश हुआ है | मैं किस तरह से भगवान का धन्यवाद करूं | हम यह शुभ समाचार सुनकर अति प्रसन्न हुए , इस शुभ समाचार के लिए आप को मेरी ओर से नौ लक्खा हार भेंट देता हूं | आप जाइए मैं शीघ्र आता हूं |

नाटक

दशरथ बांदी से :- मैं अभी महलों में जाता हूं ,मंत्री वर आप सारे शहर में ढिंढोरा पिटवा दें, आज सप्ताहभर पूरे शहर में खुशियों व आनंद का उत्सव हो और घर बार में मंगलाचरण हो |

नाटक

दशरथ गुरु से :- हे गुरु जी ! आप साथ चलें और चलकर बच्चों का नामकरण संस्कार कीजिए |

पर्दा झुकता है

दरबार में तीनों रानियों व चारों लड़कों के साथ महल में जाकर दशरथ की भगवान से विनती |

दशरथ बच्चों को उठाकर :-   हे! ईश्वर तुम धन्य हो तुम्हारी कुदरत का कौन भेद पा सकता है | आपकी शरण ना ली हो, ऐसा कौन मनुष्य हो सकता है | हे गुरुवर ! आप बच्चों के नाम रख दीजिए |

गुरु का नाम रखना

जो नित सुखदायक सुखराशी सुख सागर की तरुवर है |
उस कौशल्या के नंदन का “राम” नाम ही सुंदर है ||
कैकयी के सूत है विश्व भरण रखता हूं “भरत” नाम उस नंदन का |
जग को सुमार्ग दिखलायेगा उत्तम आदर्श काम उसका ||
दो भ्रात सूत है मात सुमित्रा के “शत्रुघन” द्वितीय कहलाएगा |
यह लक्षण धाम जो प्रथम है वह “लक्ष्मण” कहलाएगा ||

नामकरण संस्कार समाप्त पर्दा गिरता है

गुरु वशिष्ठ के द्वारा चारों राजकुमारों की शिक्षा

गुरु वशिष्ठ राम से:- राधेश्याम
कट सकता नहीं सस्त्र से वह,जवाला भी जला नहीं सकती
और उड़ सकता नहीं पवन से वर्षा भी बहा नहीं सकती
राम का उत्तर:- हे गुरुवर इसका अर्थ है यह एक ऐसी चीज है ना कोई जला सकता है
नहीं कोई उड़ा सकता है ना ही कोई बहा सकता है
गुरु वशिष्ठ भरत से:-
उत्पत्ति मरण सब कल्पित है उनका उसमें है लेस नहीं
आनंद रूप वह स्वयं सदा उसको स्वरुप में कलेश नहीं
भरत का उत्तर:- हे गुरु जी इसका अर्थ है कि भगवान का रूप एक ऐसा रुप है जिसमें एक मात्र भी क्लेश नहीं होता और हर्ष हर समय आनंद ही रहता है
गुरु वशिष्ठ का लक्ष्मण से सवाल :- राधेश्याम
उसमें है विविध शरीर सदा बनते हुए मिटते जाते हैं
जिस प्रकार पुराने होने पर वस्त्र आदि बदले जाते हैं
लक्ष्मण का उत्तर है:- गुरुजी शरीर भगवान की देन है, शरीर के अंदर भगवान रहते हैं, जिस वक्त यह शरीर रह जाता है और उसका जिव भगवान अंदर से चला जाता है और इस प्रकार जीव को एक नया चोला मिल जाता है
गुरु वशिष्ठ का सत्रुघन से सवाल :-
मिट्टी के घड़े कई हैं सब के सब जल से भरे हुए हैं
वह एक जगह या कई जगह या बहुत जगह चले हुए हैं
शत्रुघ्न का जवाब:- है गुरु जी ! सब जीव जंतुओं में विधाता व्यापक है , भगवान तो हर जगह है लेकिन दुनिया में जितने भी जाने हैं सब उस की निगाह के नीचे है उसकी महिमा में बसे हैं
गुरु वशिष्ठ चारों राजकुमारों से :-तुम चारों राजकुमार एक से एक बढ़कर हो , तुम शस्त्र विद्या में निपुण हो तुम अवश्य महाराज दशरथ का नाम रोशन करोगे जाओ अब विश्राम करो

5 महा राक्षसों की खर मस्तियां

राक्षसों का गाना

खर :-
टेक 1. हम तो आनंद ही अपना बनाएंगे,
पिएंगे यहां बैठकर प्याले शराब के,
और बूंद-बूंद खाएंगे टुकड़े कबाब के,
सब को उल्लू में चुल्लू बनाएंगे ,
हम तो आनंद ही अपना बनाएंगे..............
सबाहु:-
टेक 2. जब तक मेरे हाथों में तीर कमान है ,
सारे जमाने की मुट्ठी में जान है ,
सबको रास्ते आदम के दिखाएंगे ,
हम तो आनंद ही अपना बनाएंगे..................
टेक 3. राज्य के राजा का ना हम को ख्याल है
आए मुकाबले पर किसकी मजाल है
टुकड़े एक एक दो दो बनाएंगे
हम तो आनंद ही अपना बनाएंगे
टेक 4. दुनिया सारी कांपती है मेरे ही नाम से
राजा तलक को न बैठने दूं आराम से
सारे जमाने में हलचल मचाएंगे
हम तो आनंद ही अपना मनाएंगे
टेक 5. राही मुसाफिर जो इस जगह आएगा
पंजे से छूटकर ना हरगिज़ जा पाएगा
उसे मारेंगे और लूट लूट कर खाएंगे
हम तो आनंद ही अपना मनाएंगे
मारीच राक्षसों से :- अरे नालायको ! आगे पीछे क्या ख्याल है,
और सारा दिन खेलकूद में ही ध्यान है,
वह देखो सामने से शिकार निकला जा रहा है,
और तुम शराबी शराब पी पी कर मजे लेते हो
पहला राक्षस हंसकर:- हा हा हा हा !!!!! क्या कहा शराब का पयाला आगे पहले थोड़ी सी डाल और फिर नशा और भी तेज हो जाएगा
खर सबाहू से :- अरे तेरा सत्यानाश जाए ! बराबर का हिस्सा लेता है और हमारी ही खुशामद करता है
मारीच राक्षसों से :- जोश में अरे तुम्हारा बेड़ा गर्क हो, कुछ मेरी भी सुनते हो या शराब का ही मजा लेते रहोगे.
राक्षस जोर से हंस कर:- हा हा हा हा हा कहिए उस्ताद जी क्या बात है ?
मारीच राक्षसों से गुस्से में:- पूछते हो या मुझे सिखलाते हो ?
राक्षस मारीच से:- हैरानी में तो कुछ बात भी बताते हो
मारीच :- अरे अच्छा वह देखो सामने से शिकार आ रहा है

शिकार की गर्दन पकड़ कर

रख दे यहां जो कुछ भी तुम्हारे पास में है ?

यात्री :- महाराज दशरथ ! तेरी दुहाई हाय हाय हम गरीब तेरे राज्य में इस बेरहमी से लूटे जाते हैं
राक्षस :- अरे मूरख दशरथ क्या चीज है? क्या वह खाने की चीज है ?
दूसरा राक्षस :- यदि दशरथ कोई नमकीन चीज है तो ले आना, शराब के साथ खाने में बड़ा मजा आएगा
मारीच :- अरे दशरथ वह है ना ,अयोध्या का रहने वाला जिसको लोग राजा भी कहते हैं ?
राक्षस हंसकर :- हाहाहाहाहा !!!!!अच्छा तो यह लोग अपनी सहायता के लिए पुकार रहे हैं जिसके मुंह में दांत है पेट में ना आंत है , वह बुढा खुंसट हमारा क्या मुकाबला करेगा, ऐसे तो खोल तो मैं 20 खा जाता हूं, डकार तक नहीं लेता
यात्री :- हमारी दशा पर रहम करो
मारीच :- अरे ओ नामाकूल हम स्त्रियां नहीं है खबरदार ऐसी चीज का नाम लिया तो ?
यात्री :- कुछ तो तरस खाओ हम ऐसी गली सड़ी चीज नहीं खाया करते नहीं
सबाहु मारीच से:- भाई मारीच लातों के भूत बातों से नहीं माना करते, वक्त क्यों खराब करते हो मारीच :- अच्छा इन व्यर्थ बातों को छोड़ो चलो जंगल की सैर और इन को साथ ले जायेंगे
राक्षस :- चलिए महाराज

मारीच का आगे की ओर चलना

विश्वामित्र की यज्ञ रचना

मारीच राक्षसों से:- अरे नालायकों वह देखो सामने से दुआ नजर आ रहा है
सुबाहू मारीच से:- हां भाई कुछ तो है सही
मारीच :-चलो उधर ही आज मौज मेला करेंगे

पर्दे के पीछे विश्वामित्र का यज्ञ करना
राक्षसों का

खर :- यह देखो नया तमाशा पागल घी को आग में डालकर कैसे जला रहा है ?
दूषण :- है तो कोई दीवाना
राक्षस:- हमें क्या चाहिए बनी बनाई आग मिल गई मजे में मांस भून कर खाएंगे
अगला राक्षस:- अरे एक प्याला इस बूढ़े को भी दे दो, बेचारा गम दूर कर लेगा
अगला राक्षस:- यह ले बुड्ढे पीले शराब

विश्वामित्र ऋषि चुप है

मारीच :- औ! बुड्ढे हम से ऐसी बेरुखी क्यों ? हम और तुम तो भाई भाई है
तुम वनवासी हम वनवासी,
तुम सन्यासी हम सत्यानाशी

विश्वामित्र का आंख खोलना और राक्षसों से वार्ता

विश्वामित्र राक्षसों से:- अरे मलच्छो ! हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?
यहां आकर के यज्ञ का सामान उजाडा है,
मांस आदि डाल कर तमाम यज्ञ को भ्रष्ट कर दिया,
दिखता है तुम जिंदगी से बेजार हो ,
सच जब चींवटी के दिन निकट आते हैं तो उसको पांव पैदा हो जाते हैं
अरे कायर लड़ाई का इरादा है तो हम तपस्वियों से लड़ने का क्या फायदा
अन्यथा समझता कि तुम्हारी जिंदगी के दिन निकट आ रहे हैं और क्षत्रिय वंश का खंजर तेज हो रहा है भाग जाओ वरना क्यों व्यर्थ में जीवन गवाते हो ?
मारीच ऋषि विश्वामित्र से:-
वाह ! बुड्ढे खूब सुनी तेरी ऑफसानिया ,
और खूब घड़ी बेतुकी कहानियां ,
तेरे जैसे हमने बहुत देखे भाले हैं
अरे भोंद तू किसको पढ़ा रहा है
किस पर अपना गुस्सा दिखा रहा है
हम तो पहले ही मस्त मलंग और रंगीले हैं
ना कि तेरी तरह हाथ पांव ढीले हैं
तू जोग करता है
और जोगी बनके फिरता है
चंद्रवंशी सूर्यवंशी वह वंशी ऐसी बंसी बजाऊंगा
उसका वंश दुनिया से मिटआऊंगा
जाओ अपने हीमाती को बुला ला

मैं भी मारीच नहीं अगर उसका कचूमर ना निकाला

मारीच का हंस कर भाग जाना

महाराजा दशरथ का दरबार

दशरथ मंत्री से:- सब सलाहकार आए और अपनी-अपनी सूचनाएं दें ?
मंत्री दशरथ से:- महाराज के आश्रय में समस्त प्रजा खुशहाल है और बैरी पायमाल है
दशरथ मंत्री से:- प्यारे सौमित्र रात से मेरी तबीयत पर कुछ मलाल है, रात को मैंने सपने में ऐसा दृश्य देखा,
जैसे कोई शेर गाय को सता रहा है, मैं उसको मारने का उछला ,
मगर इतने में आंखें खुल गई, तब से मेरा मन उदास है
अब भी मुझे सपने वाली बातें नजर आ रही है
द्वारपाल दशरथ से :-अयोध्या पति महाराज की जय हो ! मुनि विश्वामित्र जी ड्योढी पर विराजमान है
दशरथ द्वारपाल से:- क्या कहा ! मुनि विश्वामित्र जी पधारे हैं .
द्वारपाल दशरथ से:- हां पृथ्वी नाथ!
दशरथ द्वारपाल से:- अच्छा तो हम स्वागत के लिए चलते हैं
दशरथ विश्वामित्र के चरणों में गिरकर:- मुनि जी आपका तुच्छ सेवक आपके चरण लगता है
विश्वामित्र दशरथ से:- खुश रहो राजन ! आनंद करते रहो !
दशरथ विश्वामित्र से :- हे मुनि जी ! मेरे धन्य भाग है जो आपने अपने पवित्र चरणों से इस स्थान को शोभित किया आइए विराजिए और आसन ग्रहण कीजिए ,
हे मुनिवर ! आपके चेहरे पर उदासी छाई हुई है , और आपका एक एक अंग फर-फर काप रहा है, आंखों का रंग पलटा हुआ सा प्रतीत होता है ऐसा क्या कारण है ?

विश्वामित्र का गाना बहरे तबील दशरथ से :-

1.ऐ महाराजा दशरथ दुहाई तेरी,हम फ़क़ीरों का यहां पर गुजारा नहीं
मिलता है हमें रात दिन कष्ट इस कदर ,कि हमसे जाता सहारा नहीं
2. कोई अपराध ना हमने तेरा किया ,एक किनारे पर जाकर बसेरा किया
त्याग बस्ती को जंगल में डेरा किया,रहना वहां भी हमारा गवारा नहीं
3. किसी प्राणी तक को हम सताते नहीं,रहते हैं जंगल में बस्ती में आते नहीं
उस जगह भी रहने पाते नहीं,कोई रक्षक रहा हमारा नहीं
4. राक्षस आकर हमें तंग करने लगे,यज्ञ ऋषियों का भंग करने लगे
मुफ्त में छेड़खानि हम संग करने लगे,हमने उसका कभी कुछ बिगाड़ा नहीं

नाटक

विश्वामित्र का नाटक राधेश्याम :-
मैं यज्ञ जिस समय करता हूं, दु:ख मुझको निशाचर देते है
पूजा सामग्री हवन कुंड सब नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं
असुरों के अत्याचारों से अकुलाया घबराया हूं मैं
रक्षा के लिए दो चीज तुझसे लेने आया हूं मैं
तू अपने पुत्र राम-लक्ष्मण दे सोप मुझे कुछ दिनों को
इसमें है तुमको पुण्य सुवश कल्याण हर्ष उन दोनों को
दशरथ का गाना विश्वामित्र से बहरे दबील :-
1.हे मुनि जी क्या सुनाई दास्तान
राक्षसों को रहा भय हमारा नहीं
क्षत्रि वंश का अंश जाता रहा
लफ्ज जाता हमसे सहारा नहीं
2. क्रोध मेरा उबलने लगा

कलेजा हाथों में उछलने लगा
हाथ ऋषियों पर दुष्टों का चलने लगा
राजा का भय जरा भी विचारा नहीं
3. देर क्या है अब बस चढ़ाई करूं
पापियों की पलक में सफाई करूं
बेईमानों की ऐसी मनजाई करूं
नाम लेंगे इधर का दोबारा नहीं
दशरथ का नाटक विश्वामित्र से:- हे !हे! मेरे राज्य में यह अंधेर,
चोरी नहीं बल्कि सीनाजोरी ,
अभी चढ़ाई करता हूं ,
और आपके देखते देखते ही पापियों की सफाई करता हूं
उनके दिल में क्या हवा समाई है, साधु सन्यासी को तंग करने लगे हैं
हे मुनिवर ! यही कारण था रात में मेरा मन उदास था
और मुझे पूरा पूरा विश्वास था
कि जरूर कुछ दाल में काला है
विश्वामित्र का नाटक दशरथ से:- हे राजन ! आपको कष्ट करने की क्या जरूरत है ,
नहीं ऐसी खतरनाक सूरत है,
आप राम और लक्ष्मण को मेरे साथ भेज दीजिए ,
राक्षसों कामलिया मेट करना उनके लिए साधारण सी बात है,
और निश्चय ही उनकी मौत राम लक्ष्मण के हाथ हैं,
ईश्वर ने चाहा तो बहुत शीघ्र ही आपके पास पहुंचा दिए जाएंगे,
और आपके वंश के यश की कीर्ति को चार चांद लगाएंगे
दशरथ का नाटक विश्वामित्र से:- राधेश्याम
हे मुनिवर ! है दोनों बालक भोले भाले नादान नीरे
रण विद्या नहीं जानते हैं लड़ने में अभी अनजान नीरे
लो राज ताज सारी सेना यह सब होना दूस्सार नहीं
आज्ञा हो तो मैं चला चलू लो इसमें भी कुछ इनकार नहीं
वैसे तो चारों मेरी बुड्ढी आंखों के तारे हैं
लेकिन राम और लक्ष्मण दोनों प्राणों से भी प्यारे हैं
फिर राम सदा सुखदाम मेरा , कब उसका विरह गवारा है
जब घर वही चांदना है जीवन का वही सहारा है
विश्वामित्र दशरथ से नाटक :-
क्रोध मुझे है हैरानी की रघुकुल में ऐसे कायर कहां से पैदा हुए
अरे कायर ! तेरे पूर्वजों मैं किसी ने सहायता से इनकार नहीं किया
अपनी प्रजा के लिए आज तक देने के लिए इंकार नहीं किया
जुबान का कॉल सिर के साथ था
इसलिए परमेश्वर का उनके सिर पर हाथ था
अरे बुजदिल क्या रोहतास हरिश्चंद्र का नहीं था
अगर वह भी तेरी तरह टालमटोल करता तो उसके पास उत्तर नहीं था
तुमने तो राजा दिलीप की इज्जत को खाक में मिला दिया
जिसने अपने शरीर का मांस काट-काट कर भूखे जानवरों को खिला दिया
विश्वामित्र दशरथ से :-राधे श्याम
ऐ दशरथ तुझ जैसे ज्ञानी को, इतनी बच्चों की ममता है
जा चुकी जवानी दीवानी, फिर भी माया में भर माता है
यदि आज विष्णु से कहता मैं , चल देते छोड़ गरुड़ वाहन
शंकर से यही विनती करता, हिल जाता उनका भी आसन
यशवंत सिंह:-

बहुत अच्छा आराम कीजिए
और आखरी मेरा प्रणाम लीजिए
जैसे बनेगी बनाऊंगा
मगर तेरे जैसे कायर के पास कभी नहीं आऊंगा
वशिष्ठ दशरथ से :- राधेश्याम
यह योगीराज कहते हैं , तू इनसे कुछ संकोच न कर
यह बड़े विचारशील मुनि है , तू किसी बात की सोच ना कर
यह तेरे राजकुमारों को, रण विद्या सीख लाएंगे,
जरंद पर्चंद वहां होकर, आनंद सहित घर आएंगे,
वशिष्ठ दशरथ से :-यशवंत सिंह
राजन आप सोच न कीजिए
और राजकुमारों को भेजने से इंकार न कीजिए
हम सब को एक दिन तो मरना है
फिर राज तो इन्होंने ही करना है
इस मामूली सी बात पर विश्वामित्र को नाराज न कीजिए
दशरथ विश्वामित्र से:- राधेश्याम
लो हाथ में इनका हाथ-नाथ, यह दोनों भोले भाले हैं
यह फिकरा याद रहे, भगवान मेरे नाजों के पाले हैं
दशरथ विश्वामित्र से:-यशवंत सिंह
मुनि जी जाइए और अपना काम बनाइए
मुझे इनका सख्त इंतजार रहेगा
और जब तक इनकी शक्ल देख ना लूंगा
मेरा दिल बेकरार रहेगा

दशरथ का सीन समाप्त पर्दा बंद

ताड़का वध

नाटक

राम विश्वामित्र से :- मुनि जी! यह कौन सा मुकाम है?
विश्वामित्र राम से:- मारीच और सुबाहु की माता ताड़का का इसी जगह जंगल में क़याम है
राम विश्वामित्र से :- हे मुनिवर क्या वह भी अपने बेटों की तरह बदकार है
विश्वामित्र राम से:-वह आला दर्जे की जालिम और बदकार है
राम विश्वामित्र से : चलो तो आगे कदम बढ़ाओ
विश्वामित्र राम से:- नहीं पहले इसकी मिट्टी ठिकाने लगावे...
राम विश्वामित्र से : हे मुनि जी ! स्त्री पर हाथ उठाना तो महापाप है
विश्वामित्र राम से:- यह आपका वृथा पश्चाताप है, वह देखो बदकार किस तरह से मुंह पाड़े आ रही है
लक्ष्मण राम से:- उसकी मौत ही उसको हमारे सामने ला रही है

ताड़का का चिल्लाना राक्षसी पुकारे हाउ हाउ हाउ हाउ

राम ताड़का से:- आदमियों की तरह बात कर अगर हिम्मत है तो दो हाथ कर
ताड़का राम से:- मालूम होता है तुम जिंदगी से बेजार हो और इतने तेज तक मरार हो
राम ताड़का से:- अरे ओ बदकार होशियार हो जा और मरने के लिए तैयार हो जा

राम का तीर से खींच कर मारना

ताड़का वध
ताड़का राम से:- हाय हाय !!! मैं मर गई कोई पानी तो पिला दो ?
लक्ष्मण ताड़का से :- बस एक ही बाण में लंबी पड़ गई

सुबाहु का मरना और मारीच का भागना

नाटक

राम विश्वामित्र से:- हे मुनि जी अब थोड़ी देर आराम कर लो
विश्वामित्र राम से :- क्या हर्ज है हम भी विश्राम कर ले (उंगली का इशारा करके) लो! संभल जाओ वह देखो बेईमान आंधी मेंह की तरह आ है |
राम विश्वामित्र से: उसकी मौत ही हमारे सामने ला रही है
मारीच राम से :- दोहा
एक औरत को कत्ल कर,उछल रहा रण बीच
बच कर कहां जाएगा,आ पहुंचा मारीच
चौबोला:-
आ पहुंचा मारीच अब,संभलकर कदम बढ़ाना,
खबर नहीं शायद तुझको जाने सारा जमाना,
नामुमकिन है आज तुम्हारा,यहां से जिंदा जाना,
मिल लो जुल लो जिस से मिलना खा लो जो कुछ खाना,
राम का मारीच से:-दोहा
क्यों ज्यादा बकबक करे, रख जुबान को बंद
मां तो तीर चला चुकी अब आए फर्जंद
चौबोला:-
अब आए फर्जंद बहुत , कुछ शेखी जतलाता है
बेईमान हट पीछे क्यों सिर पर चढ़ता आता है
हट पीछे मरदूत मुफ्त में, क्यों बदबू फैलाता है
अब भी आजा बाज जान से, खैर जान की चाहता है

नाटक

राम मारीच से:-अरे ओ ! कायर, क्यों ज्यादा जुबान से निकलता है
मारीच राम से :-राधेश्याम
एक औरत को मार कर इतना अकड़ता है
राम मारीच से:- इसने तो अपनी करनी का फल पा लिया
तू भी अब अपनी मां के पास जिंदा जा लिया
राम मारीच से:- होशियार हो जाओ
मारीच राम से :- अरे ओ ! कायर अब मरने के लिए तैयार हो जा

दोनों का युद्ध

सुबाहु लक्ष्मण से :- जरा जुबान कि लपा लपी छोड़ दे
लक्ष्मण सुबाहू से :-अगर खेर जानकी चाहते हो अब भी हाथ जोड़ दें
सुबाहु लक्ष्मण से :- चुप रहो नादान
लक्ष्मण सुबाहू से :- पीछे हट जा बेईमान
सुबाहु लक्ष्मण से :-अरे बुजदिल मुंह से कच्ची बात ना निकाल
लक्ष्मण सुबाहू से :- अरे बेईमान तू भी अपनी जुबान को संभाल
सुबाहु लक्ष्मण से :-अभी तो तेरे दूध के दांत भी नहीं टूटे अन्यथा भाग जा नहीं तो नींबू की तरह छोड़ दूंगा
लक्ष्मण सुबाहू से :- मेरे दांत तो नहीं टूटे मगर तेरे जरुर तोड़ दूंगा
सुबाहु लक्ष्मण से :- शरारत से बाज नहीं आता उल्लू के पट्ठे

लक्ष्मण सुबाहू से :-दोहा
बस बस मैं सुन चुका, बहुत तेरी बकवास
अब ज्यादा बोला अगर, लूंगा जुबान तराश
चौबोला:-
लूंगा जुबान तराश अगर , कुछ मुंह से बात निकाली
 बेईमान बदकार बता तो , अब के दे तो गाली
खबरदार हो जा , वार हमारा न जाएगा खाली
फिर ना कहना लक्ष्मण से, धोखे से जान निकाली
सुबाहु लक्ष्मण से :-अरे ओ कायर होशियार हो जा
लक्ष्मण सुबाहू से :- तू भी मरने के लिए तैयार हो जा
दोनों की लड़ाई सुबाहु की सफाई
लक्ष्मण मारीच से :- दोहा
ओ कायर ! अब भागकर, नहीं बचेगी तेरी जान
अब जाने नहीं दूंगा , बुजदिल बेईमान
चौबोला:-
बुजदिल बेईमान कहां जाएगा जान बचा कर
छुप जा कहां छूपेगा , मैं भी आया तीर उठा कर
लानत है जीना तेरा भाई को कत्ल करा कर
अरे बेईमान मारीच ठहर जाओ, जरा जाना हाथ दिखा कर
राम लक्ष्मण से :- दोहा
भागे पीछे भागना है, नामर्दो का काम
भाग गया जो रण में, मर गया मौत हराम
 चौबोला:-
मर गया मौत हराम युद्ध में , जिसने पीठ दिखाई है
ऐसे कायर को क्या मारना, इसमें कौन बड़ाई है
या तो इतना उछले था, या भाग के ही बन पाई
क्या मारोगे मरे हुए को, लक्ष्मण करो समाई
मारीच का भाग जाना
विश्वामित्र राम लक्ष्मण की पीठ ठोक कर :- शाबाश बहादुरों ! खूब किया जो इनका काम तमाम किया
राम विश्वामित्र से: हे मुनिवर यह आपका ही आशीर्वाद है
विश्वामित्र राम लक्ष्मण से :- हां बेटा तुम सूर्यवंश के चिराग हो चांद में दाग है पर तुम बेदाग हो

दूसरा दिन शुरु

राजा जनक के दूत का आना चिट्ठी लेकर विश्वामित्र जी के पास

जनक दूत विश्वामित्र जी से:- क्या मुनि विश्वामित्र जी यही पर रहते हैं ?
विश्वामित्र जी दूत से:-हां हां कहिए क्या काम है ?
दूत विश्वामित्र जी से:- हे ऋषि वर आपके नाम राजा जनक का संदेश है
विश्वामित्र जी दूत से:- वह क्या संदेश है?
दूत विश्वामित्र जी से:-लीजिए मुनिवर यह पत्रक संदेश

संदेश वाहक दूत का वापस चले जाना
मुनि विश्वामित्र का पत्रक संदेश पढ़ना

विश्वामित्र जी दूत से:- वाह वाह यह भी खूब मौके पर आया
राम विश्वामित्र से: मुनिवर जी यह पत्रक संदेश कहां से आया है
विश्वामित्र जी राम से :-बेटा मिथिला पुरी के राजा जनक ने अपनी पुत्री का स्वयंवर रचाया है और हमें भी उसमें शामिल होने के लिए यह संदेश पहुंचाया है राजा के वहां एक बड़ी कमान है और उनकी यह उद्घोषणा है कि जो क्षत्रिय उस कमान पर चिल्ला चढ़ाएगा वही जानकी सीता का पति कहलायेगा
राम विश्वामित्र से:हे गुरुजी कुछ संदेह ना हो तो हमें भी साथ चलने की आज्ञा दीजिए
विश्वामित्र जी राम से :- हां हां बड़ी खुशी से तैयारी कीजिए आप ही लोगों के लिए स्वयंवर रचाया है हमें तो देखने के लिए बुलाया है

विश्वामित्र जी का राम लक्ष्मण के साथ जाना व रास्ते में अहिल्या की मूर्ति को पांव लगाना

विश्वामित्र जी राम से :- राधे श्याम
बेटा कभी गौतम स्त्री थी अब शीला श्राप की मारी है
सबसे प्रेम तुम रखो यही आकांक्षा तुम्हारी है
इस पाप पर पीड़ित पत्थरी को पद रजका चेतन चरण दो
वह पतिता है पावन पद दो जीवन मृत को संजीवन दो

राम का पांव लगाना अहिल्या का संजीव होना

अहिल्या राम से :- प्रणाम भगवन ! आपने मेरा उद्धार किया है मैं स्वर्गलोक में जाती हूं और अपने पति के दर्शन पाती हूं
राम विश्वामित्र से:- हे मुनिवर यह देवी कौन थी और इसका क्या कारण था जो पत्थर की मृत मूर्त थी
विश्वामित्र जी राम से :- प्रिय शिष्य राम यह गौतम ऋषि की अर्द्धांगिनी थी और यह पतिता के आरोप में आ गई थी गौतम ऋषि ने श्राप दिया था कि जब त्रेतायुग में भगवान विष्णु के अवतार अवध बिहारी आएंगे तो आप का कल्याण होगा
तब से यह पत्थर की शीला के रूप में रह रही थी आपके चरणों के स्पर्श से इसका उद्धार हो गया

स्वयंवर

विश्वामित्र ,राम, लक्ष्मण का जनक से मिलना

जनक विश्वामित्र जी से :- प्रणाम मुनिवर !
विश्वामित्र जनक से :-आयुष्मान भव !
जनक विश्वामित्र जी से :- राधेश्याम
मुनिवर मेरी खुली रह गई, आंखों से ऐसा नेह हुआ
कहते हैं मुझे विदेह सभी पर, मैं तो आज विदेह हुआ
विश्वामित्र जनक से :-
मैं कहता हूं राजन तुमको, ठीक हुआ आभास
ब्रहम निष्ट की नजर में , सब रहता पास
दोनों है पुत्र अवध नृप के, नाम राम लक्ष्मण इनका
यह बली गुणी उत्साही है, किस विधि से दूं वर्णन इन का
पूरा ठीक कराया यज्ञ कार्य ,राक्षस दल इन्होंने मारा है
गौतम की नारी अहिल्या का, पद राज श्राप निवारा है
अब धनुष महोत्सव के कारण , यह दोनों भाई आए हैं
राजन तेरे आनंद हेतु, हम इन्हें साथ में लाएं हैं
दुनिया दर्शन का मेला है, जीतना अच्छा हो अच्छा है
आगे तो वही होता है ,जो विधाता ने लिख रखा है

जनक का चले जाना

विश्वामित्र राम लक्ष्मण से:- जाओ वत्स् ! आराम करो, मैं भी विश्राम करता हूं

विश्वामित्र का चले जाना

लक्ष्मण श्री राम से:- भ्राता जी ! मिथिला पुरी भी एक प्रसिद्ध शहर है
राम लक्ष्मण से:- हां भैया ! लक्ष्मण मगर उससे तुम्हारा क्या प्रयोजन है
लक्ष्मण श्री राम से:- यही कि आज इस नगरी को देखकर अपना मन बहलाएं
राम लक्ष्मण से:- चलो भैया ! आज तुम्हें मिथिला पुरी दिखला लाए

दूसरा दृश्य आरंभ सीता की आरती उतारना

जय जानकीनाथ
आरती की टेक जय गौरी माता जय जय गौरी माता
मोहिनी जननी विश्व मोहिनी

जगदंबा का प्रसन्न होना

जगदंबा :- राधेश्याम
हे सीते कुछ संदेह नहीं , उत्तम अभिलाषा तुम्हारी है
नारद का वचन सत्य होगा, ऐसी आशीष हमारी है
छिपकर जिन्हें अपनाया है, प्रत्यक्ष उन्हें अपनाओगी
बस इस समय अंबर में, सीता मन चीत तुम वर पाओगी

लक्ष्मण श्री राम से:- भ्राता जी ऐसी सुंदर स्त्री कौन थी ? जैसे कोई देवी स्वर्ग से आई
उसके आते ही सारे बाग में नई बहार आ गई है

राम लक्ष्मण से:-गाना
ओ प्यारे भैया यह बागों की बहार है
ओ प्यारे लक्ष्मण यह जनक दुलार है टेक
प्यारे जब से यह बागों में आई चली
सारे फूलों की खिल गई है सुंदर कली
इसके आने से गुलशन गुलजार है
ओ प्यारे भैया...........
यह कितनी है सुंदर हे लक्ष्मण जाती
उसके सम्मुख लज्जित हो जाए रति
इसके मुखडे पर चंदा लाचार है
ओ प्यारे भैया...........
पर मेरे तो दिल का सही है सुभा
गेर नारी पर हरगिज़ न देना निगाह
इसका कारण तो जाने करतार है
ओ प्यारे भैया...........
जो रचता स्वयंवर यह राजा जनक
इसका मैं ही करूंगा यह पूरा पनक
ऐसा कहते श्री चंद् पुकार है
ओ प्यारे भैया...........
लक्ष्मण यह जनक दुलार है.........

नाटक

राम लक्ष्मण से:- चलो भैया लक्ष्मण हमने तो यही पर देर कर दी, मुनि जी क्रोधित हो जाएंगे
लक्ष्मण श्री राम से:- चलो भ्राता जी मुनि जी हमारी राह देख रहे होंगे

महाराजा जनक का दरबार

सब राजा अपने अपने आसन पर विराजमान हैं धनुष यज्ञ का आयोजन है

महाराजा जनक का दरबार में बोलना :- राधेश्याम

जो धनुष दक्ष-मक्ष में शिव ने अशुर गण के लिए उठाया था
नीव नंदन देवराज जी ने जो धनुष धरोहर पाया था
दस शीश सहस्त्रबाहु तक तिल भर न जिसे सरकाया है
सीता ने खेल-खेल में जिसको एक दिवस उठाया है
राजा की सब सौगंध शपथ धनवा द्वारा पूर्ण होगी
जो वीर धनुष तोड़ेगा सीता उसको अर्पण होगी
है कौन वीर जो मिथिलेश्वर का जमाता है
है कौन भाग्यशाली ऐसा जिससे सीता का नाता है

पहला योद्धा

बौद्दे से धनुष पर इतना गुमान है
भारी हुआ तो क्या हुआ आखिर कमान है
कहो तो एक हाथ से तोड़ दूं इसे
मेरे लिए तो यह तुच्छ सामान है
अरे बाप रे यह तो किसी गरीब की छत का स्थिर है

दूसरा योद्धा

चिल्ला चढ़ा दूं एकदम ही 5-7 का
कर्तव्य फकत मेरे बाएं हाथ का
मुश्किल ही क्या है काम, यह है हैरानी मुझे
लकड़ी का है ना किसी और धातु का
यह तो कोई धोखा है वास्तव में यह तो कोई प्रोप गंडा है

तीसरा योद्धा

बस बस जनाब सब की ताकत खत्म हुई
बैठे हैं सिर झुकाए सब की शिकायत खत्म हुई
अब देखिए चिल्ला चढ़ता है कमाल का
लो देख लो सब की हिमाकत खत्म हुई
नहीं मुझे तो सिर्फ देखना था चिल्ला चढ़ाने का तो विचार ही नहीं था

चौथा योद्धा

सब ने लगाया जोर जो लाचार हो गए
ना उठ सकी कमान शर्मसार हो गए
उठने की मेरी देर है बस आने में
देखेंगे टुकड़े तीन चार हो गए
इसको धनुष कहता कौन है यह तो जनक ने हंसी का जरिया बना रखा है

रावण

कर लेंगे छोकरे ..., हर एक काम को
दुनिया में कौन जानेगा,... रावण के नाम को

मेरे बिना यह काम,....कर सकता नहीं कोई
दिल से निकाल दीजिए ख्याल ए! ख्याम को

रावण का हाथ धनुष के नीचे आना और आकाशवाणी का होना

आकाशवाणी :-अय ! रावण तू यहां आया हुआ है तेरी लंका में आग लगी हुई है
रावण:- बेटा मेघनाथ कहां गए हुए हैं ?
आवाज:- वह लड़ाई में गए हुए हैं
रावण:- भाई कुंभकरण कहां गए हुए हैं ?
आवाज:-वह 6 महीने की निद्रा में सोए हुए हैं
रावण:-बहन शूर्पणखा कहां गई हुई है ?
आवाज:-सूर्पनखा जंगल में सैर सपाटे के लिए गई हुई है
रावण:- बेटा अक्षय कुमार कहां गया हुआ है ?
आवाज:- अक्षय कुमार बागों की देख रेख के लिए गया हुआ है
रावण:-और अफसोस इतने वीरों के होते हुए भी आज लंका में इतना बड़ा अनर्थ हो गया
ओह ! बड़ा गलत काम किया,हमने जो बना बनाया भरम खो बैठा

धनुष के नीचे से रावण हाथ निकाल कर

रावण:-हंसकर हाहाहाहाहाहा !!!!!! अब तो लंका में जाता हूं
हाय राम !
सीते आज तो स्वयंवर में तू नहीं जीती गई
मगर याद रख सीते ! तुझे एक ना एक दिन लंका जरुर दिखलाऊंगा
और अपनी पटरानी बनाऊंगा

रावण का हंसकर पर्दे के अंदर जाना

जनक राजा से:- राधेश्याम
हे द्वीप द्वीप के राजगढ़ हम किसे कहें बलशाली हैं
हमको तो विश्वास हुआ पृथ्वी वीरों से खाली है
पहले ख्याल होता अगर बेबसी ना होती
हम करते नहीं प्रतिज्ञा यह
तो ऐसी हंसी नहीं होती
आसरा छोड़ प्रस्थान करो दुख हमें दिया है दाता ने
सीता सुकुमारी का विवाह लिखा नहीं विधाता ने
लक्ष्मण जनक से:- राधेश्याम
सच्चे योद्धा सच्चे क्षत्रिय अपमान नहीं सह सकते हैं
जिनको सुनने का ताडव नहीं वह चुप कैसे रह सकते हैं
रघुवीर राम जी के होते अनुचित वाणी कह डाली है
यह शब्द वज्र से लगते हैं , पृथ्वी वीरों से खाली है
नेतृत्व दृढ़तापूर्वक कहता हूं है बलवानों की पृथ्वी यह
जिस दिन बलवान नहीं होंगे उस रोज न रहेगी पृथ्वी यह
विश्वामित्र लक्ष्मण से:- बेटा लक्ष्मण जरा धीरे से काम लो
और थोड़ी देर के लिए गुस्से को थाम लो
और तुम्हारा तेजी में आना ठीक नहीं क्योंकि जनक ने स्वयंवर का आयोजन किया है हुआ है लेकिन उसने युद्ध का ऐलान किया है यह तो
खुद नीरस हो रहा है परंतु तुम्हारी बहादुरी में कैसे फर्क आ गया राम जी के

होते हुए तुम्हारा बोलने का कोई हक नहीं
लक्ष्मण विश्वामित्र जी से:- राधेश्याम
मेरा स्वभाव ही ऐसा है अपमान ना मुझको गवारा है
है कृपा गुरु के चरणों की बल और प्रताप तुम्हारा है
अभिमान त्याग कर कहता हूं आदेश तुम्हारा पाऊं मैं
तो धनुष की क्या बिसात है सारा ब्रह्मांड उठाऊं मैं
फिर कच्चे घड़े समान उसे दम भर में फोड़ फाड़ डालूं
या गाजर मूली की भांति चुटकी में तोड़ ताड़ डालूं
थल को जल जल को थल कर दूं लाऊं उतार सितारों को
सुरमें की तरह पीस डालूं पृथ्वी और पहाड़ों को
फिर धनुष पुराना घिसा-पिटा तिनके-सा किस गिनती में है
सैकड़ों कोश तक ले जाऊं इतना बल मेरी उंगली में है
राम लक्ष्मण से :- गाना
लड़ना अच्छा नहीं भाई
टुक लक्ष्मण करो समाई
बेमौका तेजी करना और बिना बात ही लड़ना
नहीं इसमें कोई बढ़ाई .. टुक लक्ष्मण करो....
जो करोगे तुम नादानी तो कुल की होगी हानि
दुनिया में होत हंसाई
जिस बात को मुंह से बोलो पहले मुंह में तोलो
है इसमें ही दनाई. . ..टुक लक्ष्मण करो...
अगर पिताजी सुन पाएंगे हम तुमको धमकाएंगे
हो दोनों की रुसवाई ..टुक लक्ष्मण करो....
तुम कुछ तो सोचो ऐ लक्ष्मण नहीं जनक हमारे दुश्मन
क्यों इनसे करो लड़ाई .. टुक करो लक्ष्मण करो.....
नहीं खुशी से हम आए मुनि विश्वामित्र जी लाए
रहो इन के ही अनुयाई ..लक्ष्मण करो
वह काम करो भ्राता यशवंत रहे यश गाता
है अच्छी नहीं मुर्खताई.. टुक लक्ष्मण ...
नाटक
राम लक्ष्मण से:- मेरे बहादुर भाई तुम्हारा यह केवल ख्याल है
तुमको कायर बताने की किसकी मजाल है
विश्वामित्र का गाना राम से:-
राम चलो मत देर करो तुम ही यह धनुष उठाओगे
और किसी की नहीं है ताकत चिल्ला तुम ही चढ़ाओगे टेक
सब जोर लगा कर हारे हैं बैठे मनमार बेचारे हैं
इसी इंतजार में सारे हैं कुछ तुम ही बल दिखलाओगे
राम............
यह धनुष यद्यपि भारी है तो तुम्हें क्या दुश्वारी है
निश्चय ही विजय तुम्हारी है तुम ही सीता को प्रणावोगे
राम ....
अब चलो ना ज्यादा शाम करो
इस काम को अंजाम करो

रघुकुल का रोशन नाम करो दशरथ का यश फैलाओगे
राम उठो............

विश्वामित्र का नाटक राम से

विश्वामित्र राम से हे रघुकुल भूषण अब किस बात का इंतजार है और तो जोर लगा चुके आखिर तुम्हारा वार है जाओ अपनी वीरता का जो हर दिखाओ

राम का गाना विश्वामित्र से मुनि जी आज्ञा आपकी सिर माथे मंजूर
अब तक तो मैं चुप रहा था मैं भी मजबूर
टेक
आशीर्वाद है आपका अगर राम के साथ
फिर तो यह मेरे लिए है मामूली सी बात
लेकर तेरा आसरा चला यह करने का आज
हे ईश्वर मेरी राखी हो आज भरी सभा में लाज

नाटक

राम का
धनुष उठा कर क्या यह वही कमान है जिसके वास्ते राजा जनक को इतना अभिमान है
जिसके हाथ लगाते ही हर राजकुमार डरता है
देखिए इस कमान का चिल्ला चढ़ता है

राम धनुष कहीं करती होगी तोड़ देते हैं सीताराम को वरमाला पहनाते है
सीता का चले जाना

राम विश्वामित्र से :- नाटक मुनिवर अब तो आप की मन की मुरादें पूरी हुई
विश्वामित्र राम से :- गले लगाकर हां बेटा तुमने क्षत्रिय वंश की लाज रख दिखाई

विश्वामित्र का चले जाना

परशुराम से मुठभेड़ लक्ष्मण संवाद

परशुराम जनक से :- राधेश्याम
हे जनक ! कहो क्या कारण है यह भारी भीड़-भाड़ क्यों है ?
यह भी सोचा कैसा था वीरों में छेड़छाड़ क्यों है?

परशुराम का धराशाई धनुष को देखना और क्रोध में होना

परशुराम क्रोध में राधेश्याम :-
औ ! जनक जनक जल्दी बतला, यह धनवा किसने तोड़ा है ?
किसने इस भरे स्वयंवर में सीता से नाता जोड़ा है,
अत्यंत शीघ्र बतला उस को, वरना चौपट कर डालूंगा
जितनी भी पृथ्वी है तेरी, सब उलट-पुलट कर डालूंगा
राम परशुराम से राधेश्याम :-
शिव धनुष तोड़ने वाला,... कोई शिव प्यारा ही होगा
जिसने ऐसा अपराध किया, वह दास तुम्हारा ही होगा
कृपापात्र है गुरुओं की ,....वह कब किससे डर सकता है
जिस पर दया हो ब्राह्मणों की, यह काम वही कर सकता है
परशुराम राम से क्रोध में राधेश्याम :-
मैं कहता हूं सेवक वह,.. जिसका सेवा ही जीवन है
जो वेरी जैसा काम करें वह इस परसे का भोजन है
लक्ष्मण परशुराम से:- राधेश्याम
बोले सुख का संवाद कभी,..... दुख का विवाद बन जाता है
मीठी बोली के कारण ही, तोता पिंजरे में आता है
भाई ने मीठे वचन कहे तो ,क्रोध और बढ़ आया है
सबसे पहले यह बोल उठे, इसीलिए चोर ठहराया है
अच्छा अपराधी हम ही सही , हमने ही जहर निचोड़ा है
जो कुछ करना करलो आप ,शिव धनुष हम ही ने तोड़ा है
परशुराम क्रोध में लक्ष्मण से:- राधेश्याम
ओ ! राजा के लड़के मुंह नहीं संभाल रहा तू
मुझ जैसे क्रोधी के आगे आंखें निकाल रहा तू
लक्ष्मण परशुराम से:- राधेश्याम क्रोध में :-
श्रीमान तपस्वी ब्राह्मण हैं ,....इसलिए मुझे यह कहना है
ब्राह्मण का भूषण क्रोध नहीं,.... जो महाराजा ने पहना है
यह गहना है राजपूतों का ,जो पहना जाता है रण में
अपराध क्षमा हो महामुनि, चाहिए शांति ब्राह्मण में
परशुराम क्रोध में लक्ष्मण से:- राधेश्याम
अरे बालक क्या हुआ ?,.. जो बात काटता जाता है
क्या न्योता धारी ब्राह्मण समझा ?.... जो मुझे डांटता जाता है
मुझको सीधा ब्राह्मण न जान,... मैं क्षत्रि कुल द्रोही हूं
बाल ब्रहमचारी अति क्रोधी हूं, निर्मोही हूं
मेरे इस लोहे कै कुल्हाड़ै ने,... लहू की नदी बहा दी है
इस आर्य भूमि में बहुत बार,... क्षत्राणी रांड बना दी है
लक्ष्मण परशुराम से:- राधेश्याम क्रोध में :-
अरे पंडित जी देखना,..... नजर नहीं लग जाए
दबा लीजिए कांख में ,....हवा नहीं लग जाए
बस एक ही वार से , असुरों का स्वर्ग द्वार खुला

हल्दी की एक गांठ पर परसट्ठे का बाजार खुला
क्यों बुड्ढा फरसा दिखलाकर क्षत्रि कुमार को डरा रहा
बलीहारी आप तो फूंकों से, उदयाचल पर्वत उड़ा रहा
परशुराम क्रोध में लक्ष्मण से:- राधेश्याम :-
दूध मुंहे बड़ों से हंसी छोड़,... अन्यथा रुलाएगा परसा
कर देगा खट्टे दांत अभी,... वह स्वाद चखाएगा परसा
बच्चा है बच्चा ही रह,.... क्यों मेरे कर से मरता है
मुझ जैसे क्रोधी के आगे,.... किस कारण बचपना करता है
राम परशुराम से:- राधे श्याम
भगवन ! बच्चों की बोली में,... कुछ गलत ठीक नहीं रहता है
यह तो गंगा का बहाव है ,...जो आए सो बहता है
ब्राह्मण की भांति आप आते,... तो सह लेता लाते भी
वीरों का भेष देख कर ही,... इसने की इतनी बातें भी
जो दंड आप देना चाहें,... उसका अधिकारी तो मैं हूं
यह सब प्रकार निर्दोष है ,...सच्चा अपराधी तो मैं हूं
परशुराम राम से :- क्रोध में यशवंत सिंह
अरे ओ ! कमबख्त ,...तेरे सिर में यह क्या हवा समाई है
मालूम होता है तेरी मौत ही मेरे सामने लाई है
बड़े-बड़े बहादुर मेरी धाक मानते हैं
लक्ष्मण परशुराम से:- राधेश्याम क्रोध में :-
अपराधी तो तुम हो साहब,... जो उत्सव बिगाड़ने आए हो
भाई ने दही बिलो डाली,... तुम घी निकालने आए हो
मालिक था उसने इसको,... अपने हाथों तुड़वा डाला
अब कहो कौन होते हो तुम ,...जो करते हो गड़बड़झाला
क्या मरे धनुष के स्याप्पे में,.. तुम ब्राह्मण रोने आए हो
क्या देख क्षत्रियों का समाज,.. यूं ही सिर होने आए हो
परशुराम लक्ष्मण से :-यशवंत सिंह दांत पीसकर
साक्षात शरारत की मूरत अब तू इतना उछलाने लगा
और मेरी इज्जत को खाक में मिलाने लगा
परशुराम प्रशा उठाकर
खबरदार हो जा !
मरने के लिए तैयार हो जा !
तेरे मरने में अब बिल्कुल कलाम नहीं ,
अगर तेरी हड्डियों का सुरमा ना बना दूं.. तो मेरा नाम परशुराम नहीं
राम परशुराम से :-
जब आपको इसके कसूर वार होने से इंकार है
तो इसमें फजूल तक्रार है
राम लक्ष्मण से :-
भैया लक्ष्मण ! तुम इधर को आ जाओ
और इनको अधिक ना सताओ
राम परशुराम से :- महाराज ! जरा गुस्से को थाम लीजिए
और मेरे साथ कलाम कीजिए
परशुराम राम से :-पहले इसको मेरे आंखों से दूर कर दो
और और यहां से काफूर कर दो
लक्ष्मण परशुराम से :-
इसका इलाज तो मैं पहले ही बता चुका हूं
आप अपनी आंखों को बंद कर लीजिए और कानों में उंगली दे लो

परशुराम राम से :-
देखो वह फिर बोलता है
और नाहक रस् में विष घोलता है
राम लक्ष्मण से:- पीछे हटा कर
अब यह कदापि नहीं बोलेगा,.. कहिए क्या आज्ञा है
परशुराम राम से :- क्या वास्तव मैं ही तुम्हारा कसूर है
राम परशुराम से :-बेशक जो दंड आप दे,... मुझे मंजूर है
परशुराम राम से :- मुझे शक है कि यह धनुष तुमने ही तोड़ा है
राम परशुराम से :- महाराज ! तो आपने मेरे बल को कब आजमाया है
परशुराम राम से :-धनुष आगे करके
लीजिए इस धनुष का चिल्ला चढ़ाकर
और मेरा इत्मीनान कीजिए
राम परशुराम से :-चिल्ला चढ़ा कर लीजिए महाराज ! चिल्ला चढ़ गया
परशुराम राम से :- सहम कर बस भगवन ! उतार लीजिए मेरा इत्मीनान हो गया है
राम परशुराम से :- मगर मेरा तो इत्मीनान नहीं हुआ
परशुराम राम से :- हे भगवन ! आपका इत्मीनान कैसा ?
राम परशुराम से :- मेरा इत्मीनान ऐसा कि मेरा तीर कमान पर चढ़ता है तो बिना किसी की जान लिए वापस नहीं आता
परशुराम राम से :- तो भगवान यह किसकी जान लेगा
राम परशुराम से :-यह जान तुम्हारी लेगा और किसकी ?
परशुराम राम से :- कांपकर ना महाराज ! ऐसा नहीं करना मैं मर जाऊंगा
राम परशुराम से :-हे ! ब्राह्मण कुमार यह तीर तो तुम्हें सहना ही पड़ेगा
मगर घबराओ नहीं दूसरा कदापि नहीं चलाऊंगा
परशुराम राम से :-नहीं महाराज ऐसा ना कीजिए क्योंकि मेरी जान आधी तो अब भी नहीं रही
लक्ष्मण परशुराम से:- पंडित जी बस हो चुके ठंडे,.. कुछ तो अपनी वीरता के जोहर दिखाओ
राम परशुराम से :- तुमको तो अपनी बात की शर्म नहीं
मगर शरण में आए हुए शत्रु पर वार करना,.. क्षत्रि का धर्म नहीं
मगर एक शर्त पर छोड़ता हूं कि कभी किसी क्षत्रि के मुकाबले पर ना आना
परशुराम राम से :- हे भगवान ! आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूं
और अब विंध्याचल पर्वत पर जाकर भगवान का भजन करूंगा
राम परशुराम से :- जाइए कृपा निधान !
लक्ष्मण परशुराम से:- मिश्र जी भोजन तो करते जाना कभी हमारा भी भोजन कर लिया करो

परशुराम मुठभेड़ का सीन समाप्त

राजा दशरथ का दरबार और राम के राजतिलक की तैयारी

नाटक

दशरथ सभा से :- राज् सभा के क्षेत्रीवीरो जिस बात के लिए मैंने आज दरबार लगाया
उस बात को तुम को कह सकूं
आपकी राय हो तो यह राज्य बड़े बेटे रामचंद्र को सौंपना चाहता हूं क्योंकि मेरी उम्र का चौथा पर आ गया है वैसे भी पिता की हैसियत के मुताबिक राज्य भी बड़े बेटे का ठीक रहेगा आप इस बात पर गौर से सोच लें
सभासद दशरथ से:- है पृथ्वीराज हमें यह फैसला मंजूर है आप इस शुभ समय की तिथि निश्चित कर लें
दशरथ सभा से :- मेरी राय में तो कल 10:00 बजे का समय निश्चित रखता हूं मंत्री जी आप महलों में से श्री रामचंद्र जी को बुला लाओ
मंत्री दशरथ से:- जैसी आज्ञा हो महाराज आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूं

दूसरा दृश्य प्रारंभ चालू रहता है

राम दशरथ से:- हाथ जोड़कर पिता जी प्रणाम ! आपका सेवक आपकी आज्ञानुसार हाजिर है
दशरथ राम से :- पुत्र राम राज् सभा की सर्वसम्मति के अनुसार कल तुमको राजतिलक दिया जाएगा
यह अमानत तुम्हें विश्वास पात्र जान कर दी जाती है जब तुम शाही ताज पहनोगे तो रघुकुल की रसम इज्जत की हर प्रकार से लाज व मर्यादा रखोगे
राम दशरथ से:- सिर झुकाकर पिता जी ! आप का आदेश मुझे हर तरह से मंजूर है
दशरथ सभा से :-इस वक्त दरबार बर्खास्त किया जाता है और कल सुबह राम का राज्यभिषेक किया जाएगा

सभा का दृश्य समाप्त

रंग में भंग
कैकई का महल

मंथरा कैकई से :-रानी जी आप क्या बना रही हो ?
कैकई मंथरा से :- दासी मंथरा आज तूम बड़ी देर से आई हो ? क्या रास्ते में कोई सहेली मिल गई थी या दरबार में चली गई थी ?ब
मंथरा कैकई से :- रानी जी क्या बताऊं आज एक ऐसी बात सुनकर आई हूं जिसको सुनते ही मेरे तो पांव तले की जमीन ही खिसक गई
कैकई मंथरा से :- जरा हमें भी तो सुनाओ ऐसी क्या बात सुनकर आई हो
मंथरा कैकई से :-अजी क्या सुन आई हमारी तुम्हारी तो शामत आ गई
कैकई मंथरा से :- राधेश्याम
अरे हमने शीश गुंथ आए हैं पर तूने क्यों बाल बिखेरे हैं
तू जो रो रही है ऐसे क्या लक्षण तेरे हैं
या कहीं झगड़कर आई हो भूखी अथवा प्यासी हो
है सौगंध बता जल्दी दासी क्यों तुझे उदासी है
मंथरा कैकई से :- राधेश्याम
खुल गए भाग कोशल्या के हे दया उसी पर विधना की
अभी की रानी किस घोर नींद मैं हो अब लोक चाल निज राजा की
तू सदा जीतति थी चौसर पर अब तो हार खा रही है
ले देख गोट रानी किस घर पर मार खा रही है
वे रंग में है बदरंग में है तू क्या पासे नृप के प्यारे हैं
तेरे छक्के छूट जाएंगे अब उनके तो पोबारह हैं
तुमको प्राण समझते थे निशि वासर तेरे रहते है
प्यार भरत को करते हैं आंखों का तारा कहते हैं
वे ही राजा वे ही दशरथ जड़ तेरी काटे जाते हैं
हकदार राम को माना है उसको ही मुकुट पहनाते हैं
कैकई मंथरा से :- क्रोध में राधेश्याम
चल निकल यहां से चंडालिनी किसने तेरी मति मारी है
जो स्वच्छ रुई की ढेरी में बनकर आई चिंगारी है
अब के ऐसे वचन कहे तो मुंह तेरा नुचवा दूंगी
अगर राज राम को होगा तो मुंह मांगा इनाम दूंगी
मंथरा कैकई से :- गाना
कल को हो जाएगा मालूम आज की रात गुजर जाने दो टेक
रानी तू है भोली-भाली अपने श्रंगार पर मत वाली
तू तो रह गई बिल्कुल खाली
सो रही बांह सिरहाने दे
कल को हो जाएगा मालूम आज की रात गुजर जाने दो ....
बेशक तेरा दिल है पाक अपना समझ उसे तू लाख
मेरी कटवा दीजिए नाक तुमको पास अगर आने दे
कल को हो जाएगा मालूम आज की रात गुजर जाने दो ....
जब तक नहीं था कुछ मुख्तियार
तब तक था फरमेदार

जिस दिन होगा मुख्तियार तुझे रोटी तक भी न खाने दें
कल को हो जाएगा मालूम आज की रात गुजर जाने दो ....
उड़ाना तुम महलों में काग
फूटे उधर भारत के भाग
तू अब भी अपनी जिद्द को त्याग
उसको मत पैर फैलाने दे
कल को हो जाएगा मालूम आज की रात गुजर जाने दो ....
मंथरा कैकई से :-राधेश्याम
क्या गर्ज पड़ी ऐसी मेरी
जो अपना मुंह नोचवाऊंगी
दोनों में कोई राजा हो तो
मैं दासी ही कह लाऊंगी
मैंने शर्त अदा कर दी अब तलक नमक जो खाया है
इसलिए भरत का है ख्याल ,वर्षों तक गोद खिलाया है
यदि इस रण में हार गई, तो भरत रहेगा दांसों में
रखेगी तुमको कौशल्या , दासी समान रनिवासों में
कैकई मंथरा से :- राधेश्याम
दासी तुमने ठीक कहा
अब ध्यान मुझे भी होता है
अपना अपना ही होता है
और गैर गैर ही होता है
मेरा भला चाहती है तू तुमको पहचान लिया मैंने
निश्चय ही कपट झूठ में है यह सब जान लिया मैंने
तो बुद्धिमती है बुड्ढी है तू ही मारग दिखला मुझको
हो भरत लाल को राजतिलक वह सरल उपाय बता मुझको
कैकई मंथरा से :-गाना
बांदी बता कोई तदबीर अब मैं कैसे यत्न बनाऊ टेक
मुझको नहीं था बिल्कुल ख्याल बेशक हो जाती पायामाल
तूने कर दिया नमक हलाल नहीं तेरा एहसान बुलाओ
बांदी बता कोई तदबीर अब मैं कैसे यत्न बनाऊ ....
अगर तू ना करवाती याद ,में तो हो जाती बर्बाद.
तेरी हमदर्दी की दाद ,देती हुई सदा गुण गांऊ
बांदी बता कोई तदबीर अब मैं कैसे यत्न बनाऊ ....
हुई खबर वक्त पर सारी ,तूने खूब करी होशियारी
तू है मुझे प्यारी ,ले हार तुझे पहनाऊ,
बांदी बता कोई तदबीर अब मैं कैसे यत्न बनाऊ ....

लेकिन इतना और बतादे ,करना बहाना कुछ सिखा दे
ऐसी कोई नेक सलाह दे ,जिससे काम पार हो जावे
बांदी बता कोई तदबीर अब मैं कैसे यत्न बनाऊ ....
अगर यह बन गया मेरा काम, तुझको दूंगी खूब इनाम,
बैठी पलंग पर कर आराम तुझसे ना कुछ ना काम बनवाऊ
बांदी बता कोई तदबीर अब मैं कैसे यत्न बनाऊ ....

नाटक

कैकई मंथरा से :- प्यारी दासी मुझे यह बता मैं किस तरह राजा को समझाऊं
वह तो राज्यसभा में ही सबको कह चुके हैं
मंथरा कैकई से :- राधेश्याम होगा यह याद तुम्हें रानी दोवर राजा पर धाति है
यह घर युद्ध जीतने के लिए दो ही तीर काफी है
नृप जब महलों में आए,... तिरछी भवै कमांनो को
पहले दिखाओ त्रिया चरित्र ,... फिर मांगो वरदानो को
मांगना खूब चतुराई से,.. जो मांग सफलता पा जाए
उस समय मांगना जब राजा,.... सौगंध राम की खा जाए
कहना दो वचन मांगती हू,... राजा श्री भरत लाल जी हो
चौदह वर्षों को रामचंद्र,... तपस्वी बनकर बनवासी हो
कैकई मंथरा से :-राधेश्याम
मैं कहती प्यारी दासी ,..तेरी मती की बलिहारी है
है अब भरत ऋणि तेरा,... तू ही उसकी महतारी है
मुझ भोली ने क्या समझा था,.. क्या राम भरत की जोड़ी है
प्यारी तुम पर वारी जाऊं,... दीवार कपट की तोड़ी है
मंथरा कदापि नहीं होगी,... कौशल्या की मनमानी अब
राज् करेगा भरत लाल ,...यह हठ मैंने ठानी अब
मंथरा कैकई से :-राधेश्याम
सब समझ गई सब जान गई,... अब आग लगाओ कोप भवन में तुम
वह देखो संधा होती है,...... अब जाओ कोप भवन में तुम

कैकई के महल में दशरथ का प्रवेश

दशरथ कैकई से :-राधेश्याम

हे प्राण प्रिय ! यह क्या बोलो ढंग-बेढंग क्यों है ?
सूरजमुखी फूल से मुखडे का, हो रहा मलिन रंग क्यों है ?

दशरथ कैकई से :-गाना बहरे तबील

क्या मुसीबत पड़ी तुम पर हे प्रिय जी
हाल क्या है मुझे सुना तो सही......
सिरहाने खड़ा हूं बड़ी देर से
जरा गर्दन को ऊपर उठा तो सही
मेरी प्यारी तुम्हारी दशा क्या हुई
होश अपने ठिकाने पर ला तो सही
छोड़कर अर्श क्यों पड़ी फर्श पर
पास मेरे ए ! प्यारी आ तो सही
हो गया आन की आन में रोग क्या
नब्ज अपनी मुझे दिखा तो सही
आ उठाऊं पलंग पर बैठाऊं तुझे
हाथ अपना इधर को बढ़ा तो सही
क्या सताया दुखाया किसी ने तुझे
नाम उसका मुझे बता तो सही
करूं टुकडे जब चैन आवे तभी
तू जबा को जरा सी हिला तो सही
Page 40 ramayan 36
हो गई मुझसे नाराज क्यों इस कदर
जरा मुंह पर से आंचल उठा तो सही
रोग हो तो बुलाऊं अभी वैद्य को
बात को ठिकाने लगा तो सही

नाटक

दशरथ कैकई से :-राधेश्याम

जिन आंखों ने ही तराश दिया,. वह आंखें ही फुड़वा दूंगा मैं
जिसने जीवा कड़वी बोली हो,... वह जिंदा कटवा दूंगा मैं
क्यो कौंप भवन बैठी हो,.. क्यों भारी तुमको पल पल है
जो तुम्हारा प्राण से प्यारा है,... उसका अभिषेक दिवस कल है
उठो सोलह सिंगार करो,..... क्यों धूलि धूसरित हो रानी ,
क्या संकट क्या पीड़ा है,..... क्या इच्छा है मांगो रानी

कैकई दशरथ से :- गाना बहरे तबील

मुझ नसीब जली की न पूछो व्यथा ,..जाओ आनंद अपना मनाओ बलम
न जियूं न मरूं यूंही आहे भरूं,..दोष किस पर धरू मेरे फूटे कर्म
कर दिया मुझको बर्बाद बस आप ने,..मेरे जीने का कुछ भी रहा ना धर्म
आज रानी से बांदी हूई कैकईं,...कौन पूछे भला मेरे दिल का भ्रम
दे दिया राम को राज बस आपने,..भरत को कर दिया बेनबा एकदम
क्या नहीं भरत बेटा रहा आपका,...ऐसा करते हुए भी न आई शर्म

Page no 41 Rama 37

कैकई दशरथ से :-राधेश्याम

मैं कौन तुम्हारी होती हूं,....क्यों मुझे सताने आए हो
मन में रखते हो स्वार्थ भाव,...मुझे मनाने आए हो
इस जग में कौन हुआ किसका,...सब मुंह देखी की चाहत है
है वही प्राणप्रिय जिससे पूरी अपनायत है
तुम कहते हो मांगो रानी , वह जान मांग पर मिटती है
बिन मांगे मोती मिलते हैं मांगे से भीख न मिलती है
अच्छा जो मांग शीश पर है देखिए मांग क्या देती है
बिखरे बालों को मांग सदा हाथों से बंधवा देती है

दशरथ कैकई से:- राधेश्याम

ऐसे वैसे से मत मांगो मांगो उससे जो पूरा हो
जो सदा मांग का प्रेमी हो जो सदा बात का सच्चा हो
अच्छा ये बात जाने दो बतलाओ तो क्यों रुठी हो
तुम तो फूलों सी हंसती थी इस समय क्यों रोती हो

कैकई दशरथ से :-राधेश्याम

प्यारे तुम मेरे स्वामी हो मेरा मन रखने वाले हो
रघुवंशी हो सत्यवादी हो प्रण पालन करने वाले हो
चाहे हो जाए मित्र शत्रु चाहे संसार पलट जाए
शीश कट जाए तो कट जाए वचन न जाने पाए

कुछ ध्यान तुम्हें है तुम पर है मेरे दे दो वरदान प्रभो
वह ही धन मुझको दो बनते हो यदि धनवान प्रभो

दशरथ कैकई से:- राधेश्याम

दो वर तो कोई चीज नहीं जितने भी चाहे ले लो रानी
मैंने सीखी है नहीं नहीं जो भी मन भावे ले लो रानी

गरजे ना बादल बरसे न बूंद यह सब धोखा मेघों में है
मैंने सीखी है नहीं नहीं बस एक बात मर्दों में है

Page no 42 Ram 38

कैकई दशरथ से :-राधेश्याम

कुछ क्रोध नहीं अपमान नहीं करती हूं मैं उपवास नहीं
सच तो यह है मुझको तो अब मर्दों का विश्वास नहीं

चिकनी चुपड़ी बातें कहकर मुझ अबला को मत बहकाओ
सच्चे हो तो रघुवंशी सौगंध राम की खा जाओ

दशरथ कैकई से:- कसम
परमात्मा गवाह है मेरा अनुचित नहीं होगा रानी
अयोध्यापति नरेश धर्म से विचलित नहीं होगा रानी

है पहली मर्तबा उस पाक नाम की
खाता हूं तेरे सामने सौगंध राम की

कैकई दशरथ से :-राधेश्याम
लो सुनो प्राणपति प्राणनाथ यह रानी आज मांगती है
कोशल्या नंदन के बदले निज सूत को राज्य मांगती है

वचन दूसरा जो है मेरा सो सुन लो कम पर मत होना
अयोध्या नरेश कहलाते हो तो सत् विचलित मत होना

राजा जो राम हो रहा है वह राजा नहीं वो दासी है
कल ही से 14 वर्षों को तपस्वी बनकर वनवासी है

नरेश प्यार सच्चा हो तो प्यारी के सम्मुख खोलो
रणवीर अगर कहलाते हो तो बोलो एवमस्तु बोलो

दशरथ कैकई से:- गाना रंजिश में

ऐ री बेवफा मुझे सच बता तुझे राम से क्या बैर है टेक
क्या भारत बेटा आपका रामचंद्र बिल गैर है

जहां राम दिल का सुरूर है वहां भरत आंखों का नूर है
हां इतनी बात जरूर है वह मुश्तक बिल गैर है

Page 43 Ramayana 39

मुझे दोनों एक समान है दशरथ के दोनों प्राण हैं
मैं जिस्म हूं वह जान है नहीं चैन उनके बगैर है

देकर दगा मत प्राण ले मेरी इस तरह मत जान ले
हट छोड़ कहना मान ले इसमें ही सबकी खैर है

कुल नष्ट तेरा हो जाएगा क्या हाथ तेरे आएगा
तुझे खुद ना जीना आएगा क्यों खा रही खुद जहर है

नाटक

दशरथ कैकई से:- राधेश्याम

सब पुत्र पिता को समान है तू भी यह बात जानती है
है मुझे एक से रामभरत वह भगवान मेरा साक्षी है

पहला वर जो मांगा तुमने वह हुआ नहीं है आभास मुझे
मिल जाए राज भरत को उत्सव सभी स्वीकार मुझे

रानी रानी यह तेरा पति जो तेरा पूज्य देवता है
इस समय पांव पकड़कर तेरे बस इतनी भीख मांगता है
तपसी होकर दूर न हो मुझको आनंद धाम मेरा
मेरी इन बुढ़ी आंखों के आगे ही रहे राम मेरा

कैकई दशरथ से :-राधेश्याम

दो वर जो मांगे है मैंने अब उन को बदल नहीं सकती
पड़ गई रेखा जब पत्थर पर धोने से निकल नहीं सकती

यदि हृदय आपका दुखता हो तो एक सुझाव सुझाती हूं
बुढी आंखों के आगे ही यह रहे उपाय बताती हूं

अवधेश बात घर में ही है कुछ पंथों में अपमान नहीं
तुम अपने मुख से यह कह दो दूंगा पिछला वरदान नहीं

40 44. page

दशरथ कैकई से:- राधेश्याम क्रोध

औ दुष्ट बुद्धि नारी उच्चे से हमें गिराती है
जो सत्य हमारा जीवन है उससे तू हमें डिगााती है

हम सूर्यवंशी की चादर में कालीमा नहीं आने देंगे
सुनती है सर्वस्व देंगे हम पर वचन नहीं जाने देंगे

क्या उलझन है वरदान न दें तो धर्म हमारा जाता है
उस और राम वन में जाता है तो प्राण सिधारा जाता है

रानी रानी तू क्या कहती है मेरा तो प्रण धर्म पर है
मैं क्या तू क्या संताने क्या बलिदान सब कुछ धर्म पर है

कैकई दशरथ से :-राधेश्याम

सत्यवादी था नरेंद्र हरिश्चंद्र जिसने सत जान दी जान संकट में

जिसकी सच्चाई का चिराग जगमगा रहा है मरघट में

मैं तुमसे हरिश्चंद्र जैसा मरघट का वासना मांग रही
मैं तुमसे शीवी दधीचि जैसा हड्डी या माँस न मांग रही

| मैं मांग रही अपना कर्जा देना तुझ को वाजिब है
तू हरिश्चंद्र के कुल में हो तो दे यही मुनासिब है

दशरथ कैकई से:- राधेश्याम
मेरा कुछ नहीं बिगड़ता है तू जो मुझको ललकार रही
रानी तू अपने पांव में है आप कुल्हाड़ी मार रही

आज नहीं है आपे में जिस दिन आपे में आएगी
उस दिन अपनी करनी को सिर धुन धुन कर पछताएगी

रानी रानी आंचल पसार कर्जा भी ले और दान भी ले
ले राज और बनवास भी ले , वर भी ले और प्राण भी ले

यहां पर वचन देते हुए राजा दशरथ का मूर्छित होना

अगला दृश्य

मंत्री दशरथ से :- महाराज राजतिलक का सब सामान तैयार है और आपका इंतजार है

Pege no 44 ram 41

कैकई मंत्री से :- हे मंत्री ! महाराज राज के कार्य में सारी रात जागते रहे मंत्री जी आप रामचंद्र को यहीं पर भेज दीजिए
मंत्री कैकई से :-जैसी आज्ञा हो ! रामचंद्र को आप का संदेश पहुंचाता हूं
राम दशरथ से :- पिता जी प्रणाम आपका सेवक आपकी आज्ञा के अनुसार आपके चरणो में हाजिर है
दशरथ राम से:- आंख खोलते हुए बेटा ! केवल तुम्हें देखने के लिए आ साथी अब तो हमारी अंतिम यात्रा की तैयारी है

राम दशरथ से :-रो कर पिताजी ! खैर तो है चेहरे पर यह कैसी उदासी प्रतीत हो रही है

दशरथ राम से:- आंख में रो कर आ बेटा जरा गले से लगा लूं
अब मेरा यह आखरी आशीर्वाद है

राम दशरथ से :-गाना बहरे तबील

क्या हुकम है मुझे आप आज्ञा करो टेक
हाथ में बांधे खराब ताबेदार हे पिता
मेरे जीते जी हो कोई कष्ट आपको
मेरे जीने पर है धिक्कार हे पिता

आपको देख इस दशा में मेरा हो रहा सीना फिगार हे पिता
कुछ वजह बेअक्ली की बताओ मुझे
पूछता हूं मैं बारंबार हे पिता

जान मेरी निकलने को तैयार है
नजर आते हैं खोटे आसार हे पिता

कोई दुख सुख का साथी रहा ना बिन आपके
कौन मुझको करेगा प्यार हे पिता

Page 46 42

कोई मुंह से आप इशारा करो
क्या रहा है मेरा ऐतबार है पिता
जो कहो सो करने को तैयार हूं
जान कर दूंगा निसार है पिता

नाटक

राम दशरथ से :- पिताजी आप की हालत देखकर कलेजा मुंह की और आ रहा है
है पिता जी यह है कि क्या गजब है
और आपको परेशान होने का क्या सबब है

हे पिता जी आपकी आंखें पत्थरा रही है और अंदर को धंसी जा रही है आखिर कोई बात तो बताओ ना मालूम आज के दिन ऐसी क्या आफत आ गई जो आपकी आत्मा इतना कष्ट सह रही है

कैकई राम से :-राधेश्याम
तुम बार-बार क्या सोच रहे हो
किस दुख ने इन्हें दबाया है
इसका कारण बतलाने को
मैंने ही तुम्हें बता बुलाया है

2 वर देने का वचन मुझे राजा ने दे रखा था
जब समय आया तो मांग लिया जो कुछ भी मुझे मांगना था
मांगा यह राज तिलक भारत को 14 वर्षों का बनवास तुम्हें

यह सुन नृप मूर्छित हुए
इच्छा थी रखें पास तुम्हें
पर हुआ वही जो होना था
पूरी न हो सकी इच्छा यह
तुम अपना धर्म समझते हो तो
शीश चढ़ाओ आज्ञा यह

राम कैकई से :-राधेश्याम
बड़भागी वह बेटा है जो मात-पिता का आज्ञाकारी है
माता यदि यही आज्ञा तो जिंदगी पवित्र हमारी है

यशवंत सिंह
माता जी यह तो मामूली सी बात है
जब तक आज्ञा का पालन न कर दूं
तब तक प्रतिज्ञा करता हूं किसी बस्ती में भी पांव नहीं रखूंगा

Page no 47 43

कैकई राम से:- हां बेटा बिल्कुल ठीक है मेरे लाल अभी रवाना हो जाओ
और अधिक देर ना लगाओ
क्योंकि आपको देख कर इनको संताप हो रहा है

कैकई राम से :-राधेश्याम
है अंतिम आज्ञा और एक
फिर लौट यहीं पर आना तुम
मैं भगवे वस्त्र मंगवाती हूं
वह पहन वनों में जाना तुम

राम कैकई से :-राधेश्याम जैसी आज्ञा हो माता जी !

राम का चले जाना पर्दे के पीछे

नाटक

दशरथ कैकई से:-
ओ बेहया ! वैसे तो तूने सब जलाकर खाक कर दिया

हाय हाय भगवान यह कैसी स्त्री है जो एक और दोष एक पर धर रही है कुछ तो ईश्वर का भय कर मगर याद रख दुखियों के साथ हंसी करना मुनासिब नहीं और किसी के जख्म पर नमक छिड़कना ठीक नहीं

दशरथ का बेहोश हो जाना

दृश्य समाप्त

कौशल्या का महल

राम कौशल्या से :-प्रणाम माता जी !
कौशल्या राम से :- माथा कम कर खुश रहो मेरे लाल आसन की ओर इशारा करके यहां पर बैठो मेरे मैं अभी जाती हूं और खाने के लिए कुछ मिठाई लाती हूं
राम कौशल्या से :- माताजी बस रहने दीजिए और जाने की आज्ञा दीजिए
कौशल्या राम से :- न बेटा अधिक देर नहीं लगाऊंगी मगर थोड़ा सा भोजन तुझे जरूर खिलाऊंगी क्योंकि आज तुम्हें राजतिलक की रसम होती है
राम कौशल्या जय माताजी राजतिलक के लिए जो वचन निकलना था वह तो कभी का निकल गया मुझे बाजाय अयोध्या के जंगल का राज मिल गया है

कौशल्या का समेत भोजन गिर जाना

राम कौशल्या से :- माताजी ! जो बात मैंने कही है वास्तव में वह सही है

राम कौशल्या से :- गाना लावणी में
राज के बदले मुझको माता हो गया हुकम फकीरी का
खड़ा मुंतज़िर है माता तेरे हुक्म अखिल का टेक

दीया भरत को राज् पिता ने मुझे हुक्म बन जाने का
चौदह साल रहूंगा बन में हुक्म नहीं घर आने का
हुक्म नहीं रहा अब मुझे इस घर का खाना खाने का
नहीं किसी का दोस है माता बदला रंग जमाने का
राजपाट का गम नहीं मुझको ना कुछ फिकर अमीरी का
राज के बदले माता मुझको ....

कौशल्या राम से :- लावणी
बैठी थी खुशी में बैटा इन बातों का शाांन गुमान नहीं
सुन कर तेरि बात लाडले रही बदन में जान नहीं
तूने की बन कि तैयारी कौशल्या की खैर नहीं
प्राण त्याग दू अभी रहूगीं जिंदा तेरे बगैर नहीं
दे दे राज खुशी से उसको .उससे मुझे कोई बैर नहीं
वह भी बेटा तू भी बेटा. भरत मुझे कोई गैर नहीं
बिना राज के बेटा मेरी घटती कोई सान नहीं
सुन कर तेरी बात कर ....

राम कौशल्या से :- हुकुम पिता का साथ जान के जब तक दम में दम माता
ठाट-बाट और राज पाठ का मुझको नहीं है गम माता

वचन पिता का पूरा कर दूं दीजिए आप हुक्म माता
रघुवंश की आन न जाए सिर हो चाहे कलम माता

फिर नहीं कुछ फिक्र फिक्र फकत पिता की पीरी का
राज के बदले री माता हो गया हुकम फकीरी का............

कौशल्या राम से :- मिला भरत को राज मुझे .... इसका नहीं है गम बेटा
मेरे वास्ते भरत राम दोनों ही एक सम बेटा

Page49 Ramayana 45

नहीं किसी का कुछ भी बिगड़ा फूटे मेरे कर्म बेटा
जाने से तू पहले कर जा सिर को मेरे कलम बेटा
तुझ बिन मेरे लाल मुझे जिंदा रहना आसान नहीं
सुन कर तेरी बात लाडले रही बदन में जाना नहीं

राम कौशल्या से :- चंद रोज की बात है थोड़े दिन तक करो सबर माता
रोने धोने का नहीं है मौका
दिल पर करो जबर माता

प्राबंध के चक्कर में होते शेर जबर माता
न जाने क्या होगा कल को किस को क्या खबर माता
किसी पर गिला फैसला हुआ अमर तकदीर का

आज के बदले माता मुझको हो गया हुकुम फकीरी का

कौशल्या राम से :-मेरे दिल कि मैं ही जानू और को नहीं खबर बेटा
तुझको करके दूर नजर से कैसे करूं सबर बेटा

बेशक दे दे राज भारत को मेरा नहीं उजर बेटा
मां बेटा एक जगह बैठ कर कर लेंगे यहीं गुजर बेटा

तू हो मेरे पास मुझे चाहिए और सामान नहीं
सुन कर तेरी बात लाडले

राम कौशल्या से :-
14 साल जमाना क्या है जल्द खत्म हो जाएगा
एक दिन घटते-घटते आखिर कम हो जाएगा

एक रोज सब अदना आला एक ही सम हो जाएगा

ईश्वर आज्ञा के आगे सब का सिर खम हो जाएगा

नहीं रहेंगे भेदभाव कुछ शाही और बजीरी का

इसके बदले माता मुझको हो गया हुकम फकीरी का

कौशल्या राम से :-14 साल शादी का हिस्सा कहने को मामूली है लेकिन मुझको तो है बेटा एक एक दिन भी सूली है

तुम तो हो खुद विद्वान बात न तुमसे भूल ही है
भूकंप पिता का मानोगे तो मेरा हुक्म अधूरी है

मेरा हक है उनसे ज्यादा क्या तू मेरी संतान नहीं
तेरी बात लाडले रही बदन में जान नहीं

राम कौशल्या से :- ऐसे मौके जिंदगी में मां बार-बार नहीं आते हैं दुख सुख में जो रहे एकरस वही मनुष्य कहलाते हैं

रंग मुसीबत गर्दिश गम इंसानों पर ही आते हैं वक्त मुसीबत देर पुरुष नहीं पीछे कदम उठाते हैं
नहीं मुझे अफसोस जरा नहीं कारण कुछ दल गिरी का

राज्य के बदले मुझको माता हो गया हुकम फकीरी का

कौशल्या राम से :-और बेटा क्या मैंने तुमको इसलिए ही पाला था
यही कष्ट दिखाने को क्या तूने होश संभाला था
इसलिए मैंने अपने को सो सो विपदा में डाला था

खूब बुढ़ापे में की सेवा करना यही उजाला था
क्या समझाऊं ज्यादा तुमको तु कोई नादान नहीं
सुन कर तेरी बात लाडले रही बदन में जान नहीं

कौशल्या राम से :-हे बेटा तुम तो यह अच्छी तरह से जानते हो की पिता से ज्यादा माता का हक संतान पर होता है
राम कौशल्या से :-NISANDEH बेशक माता इसमें क्या शक है

कौशल्या राम से :-तो स्वामी जी की अपेक्षा तुम पर मेरा हक ज्यादा है
राम कौशल्या से :- जब मैं मान चुका हूं तो इसका दोहराना से फायदा है
कौशल्या राम से आवाज से या सच्चे दिल से
राम कौशल्या से :- दिल से ही नहीं अपितु सच्चे दिल से

कौशल्या राम से :-दिल ही दिल में प्रसन्न होकर तो अब आए काबू में है कि तुम वरना जाओ

Page no 51 Ramayana 47

राम कौशल्या से :- माताजी मैंने आपकी दिल की मनसा को समझ लिया मगर

यह आप का उल्टा ख्याल है

कौशल्या राम से :-बेटा वह किस तरह
राम कौशल्या से :-वह इस तरह है कि पिताजी हम दोनों के स्वामी है और उनकी आज्ञा का पालन करना हम दोनों का कर्तव्य है क्योंकि वह आपके पति है और मेरे पिता हैं इसलिए उनकी आज्ञा विरुद्ध चल ना हम दोनों के लिए पाप है इसलिए आपकी आज्ञा मानने के लिए मैं तैयार नहीं हूं

कौशल्या राम से :- रोकर बेटा आप जिस समय वन में गए मेरा तो दम ही निकल जाएगा

राम का गाना कॉपी में रोवे मत ना मां मेरी तू नेट से डाउनलोड करना है

राम कौशल्या से :-माता जी आप धैर्य से काम लो

कौशल्या राम से :-बेटा किसके आश्रय बेटा कोई सहारा भी तो हो
राम कौशल्या से :- हे माता जी वह दिन नहीं रहे तो यह भी नहीं रहेंगे

कौशल्या राम से :- रो कर अच्छा बेटा जिस तरह होगा जान पर जबर सहेंगे मगर उस पराई बेटी को किस तरह से समझाएंगे

सीता का अंदर से आना

सीता कौशल्या से:- माता जी प्रणाम कहिए क्या आज्ञा है
कौशल्या सीता से:- रो कर बेटी क्या बताऊं और कैसे सुनाऊं यह खुद समझा देंगे और सारा समाचार सुना देंगे

सीता राम से :- हे प्राणनाथ माता जी यह क्या कह रही है और क्यों इस प्रकार आंसू बहा रही हैं यदि कुछ हर्ज ना हो तो मुझे भी समझा दीजिए

राम सीता से:- हे प्रिय जी पिता जी की आज्ञा से 14 वर्षों के लिए वन में जाता हूं और तो सब ने आज्ञा दे दी है अब तुमसे आज्ञा चाहता हूं

इसमें ना पिता जी का दोष है ना माता केकई का कसूर है
अपितु ईश्वर को इसी तरह मंजूर है

ए ! प्रिय 14 वर्ष से में एक भी दिन अधिक नहीं लगाऊंगा

मैं तो हुक्म पिता का मान जाता हूं आज ही वन में

किसकी कॉपी पता करनी है किसके पास है

Page 52 Ramayana 48

सीता का गाना

रहना यहां नहीं मंजूर आपके साथ चलूंगी पिया में टेक

सुख में रही आप के साथ दुख में कहां अकेले जात
से जिऊंगी तुम बिन नाथ त्याग दूं प्राण यही एक क्षण में
रहना यहां नहीं मंजूर आपके साथ चलूंगी पिया वन में

अयोध्या वहीं जहां पर राम यहां रहने का क्या परिणाम
करो जो तुम वन में विश्राम काम क्या है मेरा मेहलन में

हो गया क्या मुझसे अपराध करो ना यो मुझको बर्बाद

निशदिन रही आपकी याद भर-भर आए नीर नैनन में
रहना यहां नहीं मंजूर

दीया था माता ने उपदेश चाहे दुख हो चाहे क्लेश
हो घर में चाहे प्रदेश रहना स्वामी के चरनन में

नाटक

सीता राम से :- हे प्राणनाथ ! जो कुछ पिता की आज्ञा है उसके बारे में मुझको ना कोई ऐतराज है वह तो हर तरह से ही मालिक और मुख्तियार हैं

हे स्वामी जी आप उनकी आज्ञा का पालन कीजिए
किंतु मुझ दासी को साथ चलने की आज्ञा दीजिए

जब आप का जंगल में कयाम है
मेरा अयोध्या में क्या काम है

राम सीता से :-हे प्रियवर जी तुम जंगल के कष्ट सहन नहीं कर सकोगी
सीता राम से :- है स्वामी जी आपके चरणो में रहकर सब कष्ट दूर होंगे
राम सीता से :-वहां जंगली जानवर तुमको सताएंगे

सीता राम से :- जंगली जानवरों से अपना दिल बहल आएंगे

राम सीता से :- गाना

परदेसियों से ना अखियां मिलाना तर्ज
घर बैठो न बन को चलो तुम सिया टेक

पत्ते बिछाकर भूमि पर सोया न जाएगा
दहाड़ेंगे सिंह जोर से रोया न जाएगा

रात होगी अंधेरी ना होगा दिया
बैठो ना बन को चलो तुम सिया

वन खंड में हर तरह की मुसीबत उठाओगी

कहो कंकड़ों की राहों में कैसे चल पाओगी
दुख होगा जब पांव में छाला छिया
घर बैठो न बन को चलो तुम सिया

रखा पलंग से न पांव नीचे उतार कर
वन खंड में बैठ जाओगी कहीं हार कर

पछताओगी पीछे न करना किया
घर बैठो ना बन को चलो सिया

नाटक

राम सीता से :-ठीक है प्यारी तुम मुसीबत के समय काम आती हो यह हर आर्य स्त्री का धर्म है
फिर भी मैं कहता हूं आप का घर में रहना ही उचित है

सीता का गाना बहरे तबील

जो पिता का हुक्म है खुशी से करो
कल दूंगी हरगिज मैं उस में दखल ही नहीं
साथ जाऊंगी मैं भी बन आपके

इस जगह रहूं मैं एक पल भी नहीं

 साया बनकर रहूंगी संग आपके
न ससुर घर रहूं मैं रहूं बाप के
कष्ट देते हो बदले में किस पाप के
देखना चाहते जो मेरी शक्ल ही नहीं

तुम पिता का वचन तो निभाने लगे
कॉल अपना मगर क्यों भुलाने लगे
मुझको उल्टी सीख क्यों सिखाने लगे
मैं करूंगी इस पर हरगिज अमल ही नहीं

नाटक
सीता राम से :- स्वामी जी मुझे आपकी आज्ञा हर तरह से मंजूर है मगर अपने धर्म से सीता लाचार है स्वामी जी आप अपने को तो कलंक से बचाते हो मगर यह कलंक मुझ पर लगाना चाहते हो

हे प्राणनाथ मरते मर जाऊंगी परंतु पिता जनक तथा माता धरणी को बट्टा नहीं लगाऊंगी

गाना राम और सीता का मिलकर

राम :- तुम अयोध्या में रहो मेरी प्यारी
सीता :- पिया हरगिज़ नहीं
राम :-वहां दहाड़ेंगे शेर

सीता :- है हम भी दिलेर
राम :-कहना मानो जनक की दुलारी
सीता :-पिया जरुरी नहीं
राम :-वहां कौन होगा सहाय
सीता :-आप लक्ष्मण के भाई
राम :-हट छोड़ो ना मेरी प्यारी
सीता :- पिया परवाह नहीं

नाटक

राम सीता से :-अच्छा प्रिय चलो अब मुझे विश्वास हो गया है कि अब तुम नहीं मानोगी अच्छा माताओं को नमस्कार करो
सीता कौशल्या से :- पांव पकड़ कर रोते हुए माता जी आपके पांव लगती हूं और आपकी आज्ञा के लिए प्रार्थना करती हूं

कौशल्या सीता से बेटी क्या बताऊं रोते-रोते आंखो का पानी खत्म हो गया अब तो अपनी किस्मत को रो रही थी अब तुम भी साथ छोड़ने की को हो
अच्छा बेटी किसी पर क्या गिला है मुझको तो अपने कर्मों का फल मिला है

कौशल्या का मूर्छित हो जाना
लक्ष्मण का क्रोध में आना इस दृश्य में

अब तक खूने जिगर पिया अपने को खूब माताजी हालत देखकर सीना चाक हो गया मेरा जिंदगी और फटकार है

हाथ से सिर उठाकर

माताजी आंखें खोलो तुम्हारा लक्ष्मण तुम्हारे कदमों पर निसार है
अगर न बोलती हो तो

खंजर निकाल कर

लक्ष्मण भी तुमसे पहले मरने को तैयार है

राम लक्ष्मण से हाथ पकड़कर भैया होश करो इस कायर पन का क्या अर्थ है
लक्ष्मण राम से दर्द में भैया अजब अंधेर है जब खुद राज के हकदार हैं तो दूसरे का राज्य करने पर क्या अधिकार है अगर किसी की हिम्मत है तो दो हाथ देखें और अपने दिखाएं ताकि राज करने का मजा भी आ जावे मैं यहां पर किसी की बेईमानी नहीं चलने दूंगा

राम लक्ष्मण से प्यारे लक्ष्मण तुम किसके हाथ देखोगे और किस को अपने दिखाओगे और किस के सम्मुख तलवार उठाओगे

लक्ष्मण राम से सारे कुल का नाश हो रहा है उधर पिताजी की हालत बदतर है उधर

माताजी जान को रही हैं नामालूम भ्राता जी तुम्हें कौन सा चावल चढ़ रहा है हां भरत इस तरह अवश्य राज्य कर लेगा और सूर्य वंशी ताज अपने सिर पर धर लेगा

राम लक्ष्मण से प्यारे भ्राता जरा गुस्से को दिल से निकालो इसमें भरत का क्या कसूर है वह तो यहां से कोसों दूर है माता केकई का भी एक यूं ही बहाना है

दरअसल हमारी अजमाइश का जमाना है आप मामूली सी बात पर घबरा गए और क्यों दुनिया को हंसा रहे हो

लक्ष्मण राम से भैया तुम भी साथ जाओगे तो भारत का क्या हाल होगा
लक्ष्मण राम से भैया लक्ष्मण से कैसा सवाल
राम लक्ष्मण से इस अवस्था में उसका जीवित रहना अवश्यंभावी है

लक्ष्मण राम से लक्ष्मण उससे पहले मरने के लिए तैयार है

राम लक्ष्मण से भैया तुम्हारी इस जिद में सारा कुल बेचिराग हो जाएगा

Page 56 Ramayana 52

लक्ष्मण राम सिंह आपकी आज्ञा शिरोधार्य हैं मगर मैं इस जगह नहीं रह सकता और आपकी जुदाई के सदमे को नहीं सह सकता अगर आप मुझे यहां छोड़ जाएंगे तो शरीर तो यहां जरूर रह जाएगा मगर प्राण आपके साथ जाएंगे

सुमित्रा अंदर से आकर शाबाश बेटा शाबाश बेटा आज तूने मेरे दूध का हक दे दिया
राम लक्ष्मण से भइया उचित तो यही था तुम यही पर रहते और भारत का राज कार्य में हाथ बटाते
अगर तुम्हारा उद्देश्य यही था तो अब देर करना व्यर्थ है अच्छा भैया माताओं को अंतिम नमस्कार करो और वन की राह चलो

नाटक

कौशल्या राम से :- बेटा दिल तो नहीं चाहता कि तुम को यहां से विदा करूं परंतु क्या करूं मुझे धर्म की जंजीरों में जकड़ रखा है बेटा तुम्हें इतनी नसीहत जरूर देती हूं जिस तरह तुम तीनो ने पीट दिखाई है उसी तरह कर तीनों अपना मुंह दिखाना

कौशल्या राम से :-राधेश्याम
अच्छा आ जाओ मेरे लालन अब मन ही तुम्हें अयोध्या है
आशीष यही है माता की दिन पर दिन मरण प्रतिष्ठा है
कोशल्या लक्ष्मण से
देखना लाल मेरे हो तुम तो सत्य पर सदा अड़े रहना
14 वर्षों की सेवा में वीरों की भांति खड़े रहना
कदाचित भी पीछे हटे लाल तो क्षत्रिय धर्म मिटा दोगे

जाओ प्रसन्न रखो उनको जो मृद मंगल के दाता हैं
अब पिता तुम्हारे रामचंद्र अब शिया तुम्हारी माता है

कौशल्या :-रोकर अच्छा बेटा जाओ भगवान तुम्हें हर तरह से खुश रखेंगे

राम लक्ष्मण सीता परदे से बाहर बातचीत

राम लक्ष्मण से चलो भैया माता केकई से भी विदा ले ले और पिताजी के दर्शन कर ले

लक्ष्मण राम से हां भैया चलो

कौशल्या का दृश्य समाप्त

कैकई का महल

दशरथ कैकई और मंत्री
राम लक्ष्मण और सीता का प्रवेश कौशल्या सुमित्रा आदि

कैकई राम से :- बेटा यह कीमती वस्त्र तुम्हारे शरीर पर शोभा नहीं देते
(भगवे वस्त्र आगे करके)

यह भगवा वस्त्र पहनकर वन की राह लीजिए

राम कैकई से :- लाइए माता जी ! आपका आदेश सर्वदा उचित है

57. 53

राम कैकई से :- गाना

राम वनों में जाता री माता टेक
यह लो री माता अपने वस्त्र आभूषण -2
पहनेगा भरत मोरा भराता री माता
राम वनों में जाता री माता

यह लो री माता अपने किरट और कुंडल
त्याग सभी को जाता री माता
राम वनों में जाता री माता

यह लो री माता अपनी मन मोहिनी माला
तार सभी धर जाता री माता
राम वनों में जाता री माता

जीते रहे तो री मैया फिर मिलेंगे
अब नाता टूटा जाता री माता
राम वनों में जाता री माता

नाटक

दशरथ कैकई से :- ओ बेरहम !
अभी तक तेरा कलेजा ठंडा नहीं हुआ ,
औ जालिम !तू कौन से जन्म के उतारे उतार रही है ?
राम दशरथ से :- पिता जी ! जरा होश कीजिए
और अपनी तबीयत पर कुछ खामोश कीजिए

इस तरह से विलंब ना कीजिए
और हमें आशीर्वाद दीजिए

राम दशरथ से :- गाना
आज्ञा दीजो हे पिता हम वन जाने को तैयार खड़े टेक
आज्ञा जल्दी से पेश करो
दिल बीच रंज मत शेष करो
हमें ऐसा धर्म उपदेश करो
जो रहे धर्म पर सदा अड़े
आज्ञा दीजो हे पिता हम वन जाने को तैयार खड़े

हम अभी वनों में जाएंगे
पितु -माता के वचन निभाएंगे
मुनियों के दर्शन पाएंगे
जो वन खंडों के बीच पड़े
आज्ञा दीजो हे पिता हम वन जाने को तैयार खड़े

वहां फल खाएंगे बांट-बांट
पापों से चलेंगे नाट-नाट
पितु भक्ति के छंद छांट छांट
श्री चंद ने छंद में शब्द जड़े
आज्ञा दीजो हे पिता हम वन जाने को तैयार खड़े

नाटक

दशरथ राम से :- आंखों में जल भरकर
अच्छा बेटा ईश्वर तुम्हारा निगहबान है
परंतु दशरथ अब चंद पलों का मेहमान है

दशरथ मंत्री से :- मंत्री जी ! तुम इनके संग जाना
जिस तरह हो सके वन दिखाकर वापस घर ले आना

मंत्री दशरथ से :- जैसी आज्ञा हो महाराज !

राम दशरथ से :- दोहा
नगरी मेरे पिता की सुख से बसों मुधाम

हम वनों को चल दिए कर सब को प्रणाम

वन को चल दिए

राम लक्ष्मण सीता बाहर
समाप्त

सौमित्र प्रदर्शन

सौमित्र राम से :- भगवान आपके लिए रथ हाजिर है आप इसमें सवार हो जाइए
राम सौमित्र से :- प्यारे मंत्री यह वृथा के झमेले हमारे साथ में ना लाइए, कृपया इसे वापस ले जाइए
सौमित्र राम से :- हे युवराज ! आपका इसमें क्या नुकसान है
राम सौमित्र से :- फकीरों के लिए यह बखेड़ा बावले जान है
सौमित्र राम से :-भगवान आप किस प्रकार के शब्द मुख से निकाल रहे हैं
और वृथा मेरे कलेजे में डाल रहे हैं
राम सौमित्र से :-मंत्री जी मेरे इन शब्दों से क्लेश पहुंचा हो तो मुझे क्षमा करना

सौमित्र राम से :- राधेश्याम
हो गई कैकई की आज्ञा ,...बन में सरकार विराज चुके
बहु तेरे हृदय गगन में प्रभु ,..वर दानों के घर गाज चुके
राधेश्याम
अब महलों को चलिए ,...जनता जीवित हो जाएगी
अपने राजा को सभा मध्य,... अब वही मुकट पहनाएगी

राम सौमित्र से :- मंत्री मंत्री बूढ़े मंत्री ,..यदि हम को चाहते हैं
तो हम उस चाहत के नाते,.. तुमसे बस यही मांगते हैं
राधेश्याम
जितनी जल्दी जा सकते हो,... उतनी जल्दी घर जाओ तुम
चौदह वर्षों के लिए तात ,... इस राघव को बीशराऔ तुम

सौमित्र राम से :- राधेश्याम
वैदेही बेटी को बन मै . रोते हम देख नहीं सकते
पतो और कुशाऔ पर सोते देख नहीं सकते

सीता सौमित्र से :-राधेश्याम
मंत्री सोने की चमक कभी सोने से ,....अलग नहीं होती
चरणों की रेखा चरणों को धोने से,.... अलग नहीं होती
है स्वर्ण पुरी सी अवधपुरी,... मुझे नहीं ललचा सकती है
हंसिनी मानकर कोट जेवर,... मरुस्थल नहीं जा सकती है

लक्ष्मण सौमित्र से :- राधेश्याम
कहना माता कैकई से,... घी के चिराग जलाए वह
हम कांटे तो निकल गए ,...निसंकोच राज चलाएं वह

पेज नंबर 59   55 से
राधेश्याम
यह भी कह देना क्षमा करें ,..हम बैटे हैं वह महतारी है
जो कृपा उन्होंने की हम पर,...... हम उसके भी आभारी है
राम सौमित्र से :-
दिल की तख्ती पर छोटे के,.... वचनों को लिख मत लेना तुम
सौगंध तुम्हें है वहां पहुंचकर,.... केवल इतना कहना तुम
राधेश्याम
माता दे आशीर्वाद हमें ,....तब दर्शन उनके पाएंगे
जब 14 वर्ष पूरे होंगे ,.... तब दर्शन उनके पाएंगे
सौमित्र राम से :- अच्छा भगवन ! मैं जाता हूं ,वहां जाकर मैं किसी तरह शक्ल दिखाता हूं

मंत्री का दृश्य समाप्त

राम लक्ष्मण सीता के द्वारा सरयू नदी पार करना

राम लक्ष्मण से :- भैया ! मल्लाहों को पुकारो ताकि हमें सूर्य नदी से पार करा दे
लक्ष्मण :- मल्लाह ! हो मल्लाह ! अरे हमें सरयू नदी से पार करा दो ?
मल्लाह लक्ष्मण से :- भगवन मैं आपको किस तरह पार करवा सकता हूं
राम केवट से:- दोहा
मैं कहता हूं जो बात हो ,...कहो उसे जी खोल
क्यों घबरा रहे इतने,... क्यों करते टालमटोल
केवट राम से राधे श्याम:-
अच्छा भगवान पूछते हो तो कहता हूं संशय मेरा
भय भंजन मेरे सम्मुख है फिर क्यों रहने दूं भय मेरा

जानता हूं यह जादू है राजा जी के पद पंकज में
पत्थर में जान डालने की शक्ति है आपके चरणरज में

बन गई सिला सुंदर नारी चरणों के लगते ही
जड़ में चेतनता आती है उस जीवनपूरी के लगते ही

चरणों की रज का यह प्रभाव जन पत्थर और शीला पर है
तो मेरी लकड़ी की नैया तो छूते ही छूमंतर है
राम केवट से:- प्यारे मल्लाह अब किस तरह नदी पार करें ? हमें नदी जरूर पार करनी है

केवट राम से:- राधेश्याम
अपना मेरा दोनों का ,..जो काम बनाने वाले राजा जी
चरणों की रज पर संशय है,... वह पद रज धुल वालो राजा जी
मुझ पर कृपा बनी रहे ,.....बाधा न आपके काम में हो

है कृपा राम की केवट पर,.... केवट का प्रेम राम में हो
राम केवट से:- भक्त वर ! आपको इतना विश्वास है तो आप चरण धो लीजिए और हमें नदी से पार करा दीजिए

लक्ष्मण केवट की नाव में बैठकर

लक्ष्मण केवट से :- हे मांझी ! अब नाव को संभालो ,   यह तो डगमगा रही

है,   आप सावधान हो कर नाव चलाएं

केवट राम से:- राधेश्याम
है राम बली जब नौका पर,... बली की कौन जरूरत है
 मांझी डर मत मझधार में ,.... जाने की आज ना सूरत है

भय तो उस समय नाव को है जब उसका खेवन हार न हो
 बैठा है जब खेवैया बेड़े पर तो कैसे बेड़ा पार न हो

राम सीता से :- प्यारी अब आप इसकी मजदूरी दे दीजिए सीता हाथ से अंगूठी उतारती है और अंगूठी राम को देती है राम अंगूठी देते हैं केवट भक्त आपने हमें पार किया है आप इसकी मजदूरी ले लीजिए
केवट राम से :- राधेश्याम
 मेरा घर सुरसुरी तट लगता है,... तुम रहते जग जल निधि तट हो

मैं गंगा का मांझी हूं,... तुम भाव सागर के केवट हो

मजदूर कहीं मजदूर को मजदूरी देते हैं भैया
मल्लाह कहीं मल्लाहों से मल्लाही लेते हैं भैया

अपने को ऋणी समझते हो तो ,....ऋण तुम वही चुका देना
मैंने तुमको पार किया ,....तुम मुझ को पार लगा देना

राम केवट से:-प्यारे भक्तवर ! तथास्तु ऐसा ही होगा

केवट का दृश्य समाप्त

राजा गहूं से भेंट

गहूं राम से :- मेरे धन्य भाग जो आपने अपने पवित्र चरणों से इस भूमि को पवित्र किया दास के घर चल जलपान कीजिए
राम गहूं से :- आपकी इन बातों से मजबूर हूं और बस्ती में पांव रखने से मजबूर हूं

गहूं राम से :- हे भगवान मुझे खुद आश्चर्य है आपने यह कैसा भेष बनाया है
राम गहूं से :- पिताजी ने 14 वर्षों तक इसी भेष में फरमाया है
गहूं राम से :- आखिर कोई कसूर तो होगा

57.   61

राम गहूं से :- कसूर हो या ना हो पिता जी की आज्ञा हर तरह से मंजूर है
गहूं राम से :- भगवान आप धन्य हैं जो इस अवस्था में भी प्रसन्न है बहुत अच्छा मैं जाता हूं इसी स्थान आपके लिए भोजन पहुंचाता हूं

राम गहूं से :- प्यारे मित्र अगर यह भोजन ही हम को भाते
तो घर से चलकर काहे को आते
यही से कुछ कंद मूल खा लेंगे
और पेट की आग बुझा लेंगे
राम गहूं से :- आपको आए हुए बहुत देर हो गई अब आप आराम कीजिए और हमारा प्रणाम लीजिए
गहूं अपने साथियों से :- प्यारे साथियों तुम इसी जगह पर तैनात रहो और रामचंद्र जी की सेवा में सारी रात रहो

साथी गहूं से:- जैसी आज्ञा हो महाराज !

दृश्य समाप्त

दशरथ का अंतिम समय

दशरथ, कौसल्या, कैकई, सुमित्रा, वशिष्ठ
दशरथ कौशल्या से :-
हे प्यारी ! मेरा अंतिम समय निकट आ रहा है
निस्संदेह अब काल मेरे सिर पर सवार हो रहा है
इसलिए मैं हाथ जोड़ता हूं कि मेरा अपराध माफ कर दो
और परलोक का मार्ग साफ कर दो
कोशल्या दशरथ से :- हे प्राणनाथ आप कैसे शब्द मुख से निकाल रहे हैं
और क्यों मुझे पाप के गड्ढे में डाल रहे हैं
आप का दर्जा मेरे लिए परमेश्वर के समान है
मैंने जो कुछ भी सुख भोगा वह आपका ही तो प्रताप है
जो कुछ हुआ है सो हुआ है अब आप तबीयत को संभालिए
और मुझे पाप के गड्ढे में मत डालिए
जिस माता पिता ने जन्म दिया है उनके नाम को हरगिज बट्टा नहीं लगाऊंगी
और जब तक दम में दम है तो अपने कुल की लाज बचाऊंगी
दशरथ विधाता से :-हे नाथ ! माना कि आपकी कृपा का पात्र नहीं हूं किंतु
मौत का दरवाजा मेरे लिए क्यों बंद कर रखा है

सौमित्र का आना दशरथ के पास

दशरथ मंत्री से :- हे सौमित्र ! कहो मेरी हंसो की जोड़ी को साथ लाए

सौमित्र चुपचाप खड़ा है

दशरथ मंत्री से :- भाई जो भी आता है ,मेरी जान का शत्रु पाता है, प्यारे
सौमित्र कुछ तो मुंह से बोलो
सौमित्र दशरथ से :- रोकर महाराज ! मैंने खूब जोर लगाया ....बहुत
समझाया ...मगर उनके धैर्य मैं कोई फर्क नहीं आया और मुझे ही कहने लगे
कि तुम तो हमें उल्टे मार्ग पर चलाना चाहते हो
Page no62 ramayan 57
और उन्होंने कहा:- " 14 वर्ष पूरे किए बिना अयोध्या में कदम रखना तो क्या
अयोध्या की सूरत देखना भी हराम है "
महाराज उन्होंने आने से इंकार कर दिया है और आप को तथा माताओं को
प्रणाम किया है और किसी को कोई तकलीफ ना होने पाए इसलिए भरत
को बुलाकर राजतिलक देने का आग्रह किया है
वशिष्ठ दशरथ से:-
महाराज ! रोने धोने से काम नहीं चलेगा अब तो रामचंद्र के लिए रोना धोना
दुश्वार है
अब राज्य का काम करने के तो आप ही हकदार है
दशरथ वशिष्ठ से :- गुरु जी ! आपका भरोसा मुझे कुछ लाभ नहीं पहुंचा
सकता
हे गुरुजी ! किसी पर क्या अफसोस है
केवल अपने ही भाग्य का दोष है
मुझे जो श्रवण के पिता ने जो श्राप दिया था अब वह समय आ गया है
भाई प्यारे राम प्यारी कौशल्या बेटा लक्ष्मण बेटी जनक नंदनी

मुझे क्षमा करना !
अच्छा मैं चलता हूं
हिचकी लेकर हाय राम मैं चला !
कौशल्या :- जल्दी संभलकर अरे कोई जल्दी आओ महाराज के तेवर ही बदल गए
वशिष्ठ नाड़ी देखकर
वशिष्ठ :- अफसोस ! तेवर क्या बदल गए ! महाराज ही दुनिया से चले गए
सुमित्रा वशिष्ठ से :- क्या बिल्कुल नाड़ी छूट गई
वशिष्ठ सुमित्रा से :-दशरथ के सिर पर हाथ रखकर हां महारानी जी !अब बिल्कुल आप छूट गई है
सुमित्रा कौशल्या से:- दहाड़ मारकर हाय रे हमारी किस्मत फूट गई

कौशल्या सुमित्रा का गाना दोनों का विलाप

हाय हमारे प्राण प्यारे चल बसे
रंजो गम के दुख के मारे चल बसे
किस तरह होगी जिंदगी बसर
जो थे के सहारे चल बसे
मिल गया हमारा सुहाग अब खाक में
आज किस्मत के सहारे चल बसे
आरजू उनकी न पूरी हो सकी
मर कर हाय किनारे चल बसे
वशिष्ठ :- देवियों सबर करो
और जितनी जल्दी हो सके भरत को खबर करो

दृश्य समाप्त

केकईपूर में भरत शत्रुघ्न

शत्रुघ्न भरत से :- भ्राता जी आज तो आपकी तबीयत कुछ सुस्त है
भरत शत्रुघ्न से :- हां शत्रुघ्न ! आपका ख्याल बिल्कुल दुरुस्त है
शत्रुघ्न भरत से :- क्या कारण है जरा मैं भी सुनता हूं मुझ से छुपाकर क्यों रखते हो ?
भरत शत्रुघ्न से :- कारण हो तो बताऊं ?
शत्रुघ्न भरत से :-हे भइया ! अफसोस है कि तुम मेरी बात पर इतना ही यकीन रखते हो

पर्दे में से युद्ध जीत का आना

युद्ध जीत:- प्यारे भरत ! अयोध्या से एक दूत आया है
भरत युद्धजीत से :- मामा जी ! क्या कुशलता की भी खबर लाया है
युद्ध जीत भरत से :- वैसे तो ठीक-ठाक बताता है मगर कहता है आपको जल्दी बुलाया है
दूत भरत से :- प्रणाम महाराज !
भरत दूत से :- "अरे ! कुशल तो है "ऐसी जल्दी का संदेशा लाया है
दूत भरत से :- हां महाराज ! वैसे तो ठीक है किंतु आप को जल्दी बुलाया है
भरत दूत से :- भाई रामचंद्र व लक्ष्मणजी तो खुश है ?
दूत भरत से :- वैसे तो सब ठीक हैं ! परंतु आपको जल्दी बुलाया है
भरत दूत से :- क्रोध में अरे तू आदमी है या गधा ? जो पूछता हूं उसका टेढ़ा ही उत्तर मिलता है
दूत भरत से :- महाराज ! कह तो रहा हूं आपको शीघ्र बुलाया है
भरत दूत से :- ओह! बड़े मूर्ख से पाला पड़ा है
शत्रुघ्न भरत से :- भैया ! इस झगड़े को जाने दो और शीघ्र ही अयोध्या प्रस्थान की तैयारी करो
भरत शत्रुघ्न से :- हां भैया ! चलो इस मुर्ख को तो बात करने का ढंग भी नहीं है

अयोध्या का दृश्य

भरत शत्रुघ्न से :-तनिक देखो तो अयोध्या की ऐसी स्थिति क्यों है सब रास्ते और चौराहे सुनसान पड़े हैं राजमहलों पर जिले मंडला रही है ना मालूम आज किस का मातम हो गया जो सूर्यवंशी
अयोध्या नगरी का राष्ट्रध्वज खम हो गया है

शत्रुघ्न भरत से :- बेसक भैया लक्षण तो खराब नजर आ रहे हैं आप जल्दी महलों में चलिए

कैकई का महल

मंथरा कैकई भरत शत्रुघ्न पर्दे में

मंथरा कैकई से :- महारानी जी सुना है भरत जी आ गए
कैकई मंथरा से अरी मंत्रा जल्दी कर उनको मेरे पास बुला लाओ

मंथरा कैकई से :- इशारा करके यह लो वह सामने ही आ रहे हैं
भरत शत्रुघ्न कैकई के पांव में गिरकर प्रणाम माता जी !
कैकई भरत से :- चिरंजीव रहो ! मेरे लाल बेटा तुमने बहुत दिन लगाए कहो ! तो तुम्हारे नाना मामा सब कुशल मंगल तो है
कैकई भरत से :- हां माता श्री जी ! सब प्रकार से कुशल हैं परंतु मुझको अभी तक पिता जी के दर्शन नहीं हुए हैं वह कहां पर है
कैकई भरत से :- पुत्र धैर्य करो पहले तुम यात्रा की थकान उतारो और विश्राम करो धीरे-धीरे सब हाल बता दूंगी

भरत कैकई से :- मेरी थकान तो पिता जी के दर्शन होते ही दूर हो जाएगी
कैकई भरत से :- पुत्र पहले थोड़ा खा पी लो , फिर धीरे धीरे सब हाल बता दूंगी
भरत कैकई से :- माताजी जो ! मैं पूछता हूं उसका घड़ा घड़ाया उत्तर मिलता है , यह धीरे-धीरे किस बला का नाम है
कैकई भरत से :- वाह बेटा ! तुम तो बड़े जल्दबाज हो गए हो मैं कह तो रही हूं कि सब धीरे-धीरे बता दूंगी
भरत कैकई से :- क्रोध से क्या खाक बता देंगी ?
आग लगे तुम्हारी धीरे-धीरे को
माता जी ! आप शीघ्र बताओ पिताजी कहां पर है
कैकई भरत से :- बेटा अफसोस है कि तुम्हारे पिताजी स्वर्ग सिधार गए

भरत कैकई से :- रो कर क्या कहा ? पिता जी स्वर्ग सिधार गए, शोक ! कि मैं उनके अंतिम समय में भी दर्शन नहीं कर सका भाई लक्ष्मण में रामचंद्र ही भाग्यवान है जिनके हाथों में पिताजी ने प्राण त्याग दिए अच्छा माता यह तो बताओ उनको रोग क्या था ?
कैकई भरत से :- बेटा ! रोग तो कुछ भी नहीं था बस हाय राम ! हाय लक्ष्मण ! करते हुए उन्होंने प्राण त्याग दिए
भरत कैकई से :- माता जी क्या भाई रामचंद्र में लक्ष्मण भी उपस्थित नहीं थे ?

कैकई भरत से :- हां बेटा वह तो पहले ही वन चले गए थे उन्हीं के कारण तो महाराज ने प्राण त्याग दिए
भरत कैकई से :- सिर पीट कर हाय हाय चार बेटों के होते हुए भी अंतिम समय में एक भी पास नहीं था माताजी भाई रामचंद्र ने कौन सा अपराध किया था जो वह

वनों को चले गए जरा पूरा हाल तो सुनाओ
कैकई भरत से :- बेटा सच बात तो यह है कि महाराज ने रामचंद्र को राज तिलक देने की तैयारी की भला हो इस बेचारी मंथरा का इसने मुझे सब हाल बता दिया है बेटा मैंने किसी समय महाराज से दो वचन पूरे करने का वचन मांगा था अर्थात मौका पाकर मैंने दोनों वचन पूरे कर लिए अर्थात रामचंद्र जी को 14 वर्ष का वनवास और तेरे लिए राजतिलक मांगा

अर्थात हे बेटा इन वचनों को टालने के लिए महाराज ने बहुत हाथ पांव मारे परंतु मैं भी अपनी जिद्द पर अड़ी रही महाराज को तंग आकर रामचंद्र को वन में भेजना पड़ा
सीता तथा लक्ष्मण भी उनके साथ चले गए तो है बेटा मैंने अपना वचन पूरा कर लिया अब तू जाने तेरा काम

मंथरा भरत से :- हां महारानी जी सच कहती है, अब जाकर खुशी से राज संभालो और अपने दिल के अरमान निकालो

शत्रुघ्न मंथरा से:- वह नमक हराम बदजात थे तुम्हारी ही आग लगाई हुई है, ठहर मैं तेरी अभी खबर लेता हूं

भरत शत्रुघ्न से:-शत्रुघ्न का हाथ पकड़कर
भाई ! जो कुछ होना था सो तो हो गया अब अपनी तबीयत को टिकाओ,
और स्त्री पर हाथ उठाकर कुल को दाग ना लगाओ
भरत मंथरा से :- औ चुड़ैल ! तू यहां से दूर हो जा इसी क्षण हमारी आंखों के सामने से ओझल हो जाओ

भरत का गाना

हाय फूटी है किस्मत हमारी रे टेक

छोड़कर हमको किसके सहारे
पिताजी किधर को सीधारे
कि अकेले किधर की तैयारी रे
हाय फूटी है किस्मत हमारी रे ....

मुंह दिखाने के लायक न
हाय सहायक रहा न
बात विधाता ने कैसी बिगाड़ी रे
हाय फूटी है किस्मत हमारी रे ....

फसी ऐसी जान मुश्किल में
रह गया यह भी अरमान दिल में
कर सके ना खिदमत तुम्हारी रे
हाय फूटी है किस्मत हमारी रे ....

हाय ईश्वर हमें भी उठा ले
अै पिता का सपने बुला ले
जिंदगी से हमें मौत प्यारी रे
हाय फूटी है किस्मत हमारी रे ....

राम मेरी ना बिल्कुल सलाह ली
है तूने भी तो वन राह ली

आज गई किस्मत की हारी रे
हाय फूटी है किस्मत हमारी रे ....

कैकई भरत से :- आंसू पहुंचकर बस मेरे लाल अब अधिक नारो
भरत कैकई से :-भरत कैकई का हाथ फटकार कर बस मेरे सामने से दूर हो जाओ

कैकई भरत से :- बेटा नेकी का बदला आया तो इस तरह भागेगा
भरत कैकई से :- बदला तो उस समय मिलेगा , जब भरत तेरे सामने प्राण त्यागेगा
कैकई भरत से :- बेटा ! अब मेरी तरफ देख, मैंने तेरे लिए खून पसीना एक किया है

भरत कैकई से :- गीत
रे मा तूने जुलम करे बड़े भारी टेक

तू बन गई नागिन काली

मेरे पिता के तने पापड़ी जब मांगे वरदान

पढ़े नहीं तेरे मुख में कीड़े

तो कब की बैरण मारी

राम लक्ष्मण से भ्राता हमारे दशरथ जैसे बाप
कुल के अंदर ओके पापणी कर तू ने नाश
तुम्हारी नहीं कलिहारी
तू बनेगी
रे मा तूने जुलम करे बड़े भारी

भरत कैकई से :- दांत पीसकर औ ! डायन .... मैं तुझे एक बार कह चुका हूं ,
तु मुझे बेटा कहकर कलंक का टीका ना लगा
तू बार-बार कह कर मेरी छाती को मत जला

Page 68. 63

पहले तूने पिताजी के प्राण लिए
धर्म मूरत राम लक्ष्मण को वनवास दिलाया
ओ पापी ! नछत्र तूने सत्यवती भावज सीता को घर से निकाल दिया
माता सुमित्रा तथा कौशल्या के दिलों को छलनी-छलनी किया

औ ! कलिहारी दुनिया का मुंह कौन पकड़ सकता है
वह तो मुझे ही धिक्का र करेंगे और चारों तरफ से मुझे ही मारेंगे

शत्रुघ्न धाय मारं कर हाय पिता जी ! आपके मरते ही सारा जमाना दुश्मन हो गया है
भाई रामचंद्र भी यहां पर नहीं है हमारी धीर कौन बधांऐगा

भरत शत्रुघ्न से:- प्यारे भैया तुम क्यों रोते हो, तुम्हारे लिए तो मैं रामचंद्र हाजिर हूं रामचंद्र तो मेरे लिए नहीं है उठो भैया उस दुखिया माता कौशल्या तथा सुमित्रा की खबर ले
शत्रुघ्न भरत से :- हां भैया ! चलो अब यहां रहना ही बेकार है

कौशल्या का महल

कौशल्या लेटी हुई सुमित्रा बैठी हुई

भरत शत्रुघ्न कौशल्या के पावों लगकर प्रणाम ! माता जी
कौशल्या भरत से :- अरे यह कौन है ?
सुमित्रा कौशल्या से :- प्यारी बहन उठो और पहचानो तो सही कि कौन है ?
कौशल्या सुमित्रा से :- हाय कैसे उठु उठा भी तो ना जाए
सुमित्रा कौशल्या से बहन जरा आंखें खोलो
कौशल्या सुमित्रा से :-बहन आंखें होती तो रोना ही क्या था अब आंखें किसकी लाऊं
दोहा
देखने के थे जो साधन वह तो सहारे चल दिए
खाली गोलक रह गई आंखों के तारे चल दिए

शत्रुघ्न भरत से :- हे भाई तू बता दे कौन ?

भरत कौशल्या से :- रोकर माता जी आपका महानीच अधर्मी बेटा भरत
कौशल्या भरत से :- है बेटा भरत चिरंजीव रहो ! कब आए और तो सब ठीक ठाक हैं
हे बेटा चुप क्यों हो ? कुछ तो मुंह से बोलो क्या मुझसे नाराज हो ?

भरत का रोते रहना
कौशल्या भरत से :- गाना बहरे तबील

अब करो चैन से राज बेटा भरत रे
रामचंद्र जगंलन में पहुंचा ही दिए
तेरे मन की मुरादें तो पूरी हुई
तेरी माता ने यह गुल खिला ही दिए

तेरे दिल में कोई खटका ना रहा
रामचंद्र का कांटा ना अटका रहा
अब क्यों खामोश होकर ठसक रहा
मेरे सीने पर खंजर चला ही दिए

यदि मेरी सूरत सुहाती नहीं
तो मुझे भी जिंदगी खुद भाती नहीं
क्या करूं मौत भी तो आती नहीं
मैंने अपने यतन सब बना ही लिए

रामचंद्र ने वापिस अब आना नहीं
और लक्ष्मण ने हिस्सा बटाना नहीं
एक मैं ही हूं मेरा सो ठिकाना नहीं
कैकई ने तो फंदे फैला ही दिए

ना किसी को मदद के हो मोहताज तुम
बन गए अवध के महाराज तुम
जाओ बेटा खुशी से करो राज तुम
भेद यशवंत सिंह ने बता ही दिए

नाटक

कौशल्या भरत से :- बेटा ! अब तो तेरे मन की मुरादे पूरी हो गई
और अयोध्या का कुल राज तेरे नाम हो गया
और रामचंद्र का कांटा भी तेरे दिल से निकल गया है

हां बेटा अब यदि मेरी भी सूरत सुहाती नहीं
तो मुझे भी जिंदगी खुद भाति नहीं
मगर यह बेशर्म जान भी निकलने में आती नहीं

अगर कुछ खाकर मरती हूं तो आतम हत्या का पाप लगेगा
अगर जिंदा रहती हूं तो तेरी जान को संताप होता है

भरत कौशल्या से :-गाना बहरेतबील

तेरे चरणों की सौगंध है माता मुझे
इस शरारत का बिल्कुल पता ही नहीं

Page 70. 65

यूं ही इल्जाम दो तो तुम्हारी खुशी
 वरना इसमें मेरी कुछ खता ही नही
तेरे चरणों की सौगंध है माता मुझे
इस शरारत का बिल्कुल पता ही नहीं

राम को भेज वन में करूं राज में
मेरे दिल का तो यह मधवा ही नही..2 ं
माता कैसे दिलाऊं मै तुमको यकीन
बिना ईश्वर के कोई गवाह ही नहीं
तेरे चरणों की सौगंध है माता मुझे
इस शरारत का बिल्कुल पता ही नहीं

राम मौजूद होते अगर इस जगह
मैं समझता पिताजी मरे ही नही..2ं
एक तेरा सहारा था केवल मुझे
हाय तुमको भी आती दया ही नहीं
तेरे चरणों की सौगंध है माता मुझे
इस शरारत का बिल्कुल पता ही नहीं

यौं न घायल करो बोलियां मारकर
काट लो शीश मुझको गिला ही नहीं
 माता शीश है मेरा और खंजर तेरा
लेना इसमें किसी की सलाह ही नहीं
तेरे चरणों की सौगंध है माता मुझे

इस शरारत का बिल्कुल पता ही नहीं

नाटक

भरत कौशल्या से :- रोकर माताजी !ना जाने भरत से ऐसा खोटा करम हो गया,
जिसके कारण आप भी मुझ पर संदेह करने लगी हे
माता जी इस बात के लिए मैं जिंदा जल मरने के लिए तैयार हूं
क्या आप को यह विश्वास है कि मैं रामचंद्र को वनवास दिलवाऊ
और खुद अयोध्या में है ऐश उड़ाऊं
हे ईश्वर ! मुझे मौत की खैर दो
और तो सब शत्रु हो गए मगर आप तो मेरा साथ दो
हाय पिताजी ! मुझे भी अपने पास बुला लो !

भरत का बेहोश हो जाना

कौशल्या भरत से :- हे हे ! मेरे लाल तुझे क्या हुआ
बेटा ! मैंने व्यर्थ ही तेरा हृदय दुखाया है
और मेरी मूर्खता ने हीं तेरी जान को दुख पहुंचाया है
बेटा ! वास्तव में मैंने बड़ा पाप किया है
जो निर्दोष को संताप दिया है
बेटा उठो ! मैं तो पहले ही मेरे भाग्य को रो रही थी
बेटा जीभा तो हिलाओ
केवल एक बार माता कहकर बुलाओ
देखो ! तेरी माता कितनी देर से तेरे सिरहाने बैठी रो रही है अब तो उठ कर
हाथ मुंह साफ करो

71. 66

भरत कौशल्या से :- आंखें खोलकर माता जी ! बस क्षमा कीजिए मुझे ! अब ना
जिंदगी की चाहत है ना मौत की परवाह है
कौशल्या भरत से :- बेटा ! अब इस रजों गम को दूर करो
और जो मैं कहती हूं उसे मंजूर करो
तुम देखते हो अयोध्या का सिंहासन बिल्कुल खाली है
इसका कोई वारिस है ना वाली है
बेटा अब रोना धोना बंद करो
और कुछ राज का प्रबंध करो
अगर दूसरे दुश्मन सुन पाएंगे
अवश्य ही मुंह में पानी भर लाएंगे
भरत कौशल्या से :- माता जी ! आप क्या फरमा रही हैं
और मुझे क्यों पाप के गड्ढे में गिरा रही है
मैं किसी भी अवस्था में आपकी आज्ञा मंजूर नहीं कर सकता
राजा वह कहला सकता है जिसकी प्रजा पर मिशाल हो
माता जी ! मैं देख रहा हूं सारी प्रजा की निगाहें मुझसे नफरत करती हैं
इसलिए भाई की गैर हाजरी में राजगद्दी पर पांव रखने का मुझे कोई अधिकार नहीं
है
मैं ईसी समय जंगल में जाऊंगा
अगर मेरे कहने से वापस आ गए तो बेहतर है

नहीं तो चौदह वर्षों तक शक्ल नहीं दिखाऊंगा
माता केकई को भी हाथों-हाथ बदला मिल जाएगा
जब उसकी आंखों के सामने उसका बेटा जंगल को निकल जाएगा
वशिष्ठ भरत से :- भरत जी ! आपके विचार पसंद है
उत्तम और पवित्र हैं
हमसे बढ़कर कौन भाई है
मगर उनका आना कठिन है और आपका वृथा ही जतन है
अगर वह मानते तो हम ही मना लेते
इसीलिए उन विचारों को दिल से निकालिए
और चौदह वर्षों तक आप ही इस राज को संभाल लिए
भरत वशिष्ठ से :-गुरु जी !अगर रामचंद्र जी के निस्बत के प्रति आपका ऐसा विश्वास है
तो चौदह वर्षों के लिए भरत को भी बनवास है
चाहे कितना ही गया गुजरा इंसान हु, मगर उसी पिता की संतान हूं
अगर रामचंद्र ने अपना धर्म पालन करने में इस तरह सच्ची निष्ठा दिखाई है

Page 72 ramayan 67

तो भरत भी उन्ही का भाई है
जान पर खेल जाना मेरे लिए आसान काम है
मगर राज   राज सिंहासन की गद्दी पर बैठ जाना मुझे हराम है

कौशल्या भरत से :- अच्छा बेटा अगर तुम्हारा यदि मेरा यही ICCCHAA इरादा है तो हम भी साथ जाएंगे और नहीं तो हम भी एक BAAAR दफा उनका मुखड़ा ही देख आऐगी

भरत कौशल्या से :- ठीक है माता जी ! आप सारे साथ चलें

श्रृंगवेरपुर राजा गंहू से भेंट

मंत्री गंहू से :- महाराज ! आपके मित्र श्री रामचंद्र का छोटा भाई भरत VISHAAL सेना लिए चित्रकूट की ओर जा रहा है
गंहू मंत्री से :- क्या कुछ पता है किस लिए जा रहा है
मंत्री गंहू से :- महाराज ! SAADHAAARN JAN ME तो यही BHRAANTI है कि रामचंद्र जी को वापस लाने की सलाह है
गंहू मंत्री से :- तो सारी अयोध्या क्यों लाया है
मंत्री गंहू से :- NISANDEH ! यह बात ठीक है , कहीं मुंह में राम बगल में छुरी वाला हिसाब ना हो
गंहू मंत्री से :- कोई बात नहीं आखिर केकई का बेटा है बात प्रसिद्ध है "मां पर पूत, पिता पर घोड़ा ...बहुत नहीं, थोड़ा-थोड़ा " संभव है, पीछे से BUDDDHI आ गई हो या फिर किसी ने बात सुझाई हो कि रामचंद्र इधर उधर से सेना इकट्ठी करके चढ़ाई न कर दे

मंत्री गंहू से :- संभवत: ! यही बात हो महाराज !

गंहू मंत्री से :- खैर अभी कुछ भय नही , मैं अभी जाता हूं और इस CHAKKARVYUH का पता लगाता हु तुम अपनी सेना की तैयारी करो और मेरे SANKET की PARTIKSHAA करो

यहां पर DOOT KO थाल में मछली और फूल तलवार लेकर जाना है ,और भरत के सामने करता है भरत का फुल उठाना AUR गंहू को VISHWAAS हो जाना KI BHARAT MITTTAR HAI STROO NAHI

गंहू भरत से :- भगवन ! कहिए किधर की चढ़ाई है और किस कमबख्त की मौत आई किसकी बुरी घड़ी आ रही और बड़े मुहिम पर जा रही है.

PAGE   73   RAMAYAN 68

भरत गंहू से :- हे प्यारे मित्र ! न तो किसी से लड़ाई है, और न बहार के दुश्मन से लड़ाई है
यह तो काल का चक्कर है
हे मित्र ! SWYAM मेरी माता ने पाप का बीज बो दिया
भगवान रामचंद्र को वापिस लाने जा रहा हूं
सब माताऐ व गुरु वशिष्ठ जी भी मेरे साथ आए हैं
गंहू भरत से :- अच्छा भैया ! हम भी साथ चलेंगे

भरत मिलाप

चित्रकूट पर्वत का दृश्य

PAGE 73 RAMAYAN 68

राम लक्ष्मण से :- हे भैया लक्ष्मण ! आज जंगल के सारे जानवर इस तरह से क्यों भागे जा रहे हैं ? और इस तरह क्यौ भय खा रहे हैं ?
लक्ष्मण राम से :- शीला पर चढ़कर भ्राता जी ! सावधान हो जाइए !
सूर्यवंशी पताका हवा में लहरा रहा है
और भरत विशाल सेना लिए आ रहा है
राम लक्ष्मण से :- यदि भैया ! भरत है, तो तुम्हें किस बात का डर है ?
लक्ष्मण राम से :- भ्राता जी ! इधर वह ऊपर चढ़ा आ रहा है उधर आप का यह हाल है
राम लक्ष्मण से :- हे भैया ! भरत से मुझे ऐसी आशा कदापि नही है
लक्ष्मण राम से :- तो इतनी सेना क्या खाक छानने के लिए लाया है
राम लक्ष्मण से :-खैर जाने दो कोई बात नहीं उन्हें आने दो
लक्ष्मण राम से :- हे भैया ! कृपा करो इस भोलेपन को जाने दो
राम लक्ष्मण से :-भैया लक्ष्मण पहले भरत को आने दो मृत्यु से पहले बावले जान होना ठीक नहीं
लक्ष्मण राम से :-बस-बस भ्राता जी बहुत प्रतीक्षा कर ली और अपने मन पर बहुत भरोसा कर लिया
अंततः कब तक ऐसे ही खुने जीगर का पीते रहे
अब आप ही निर्णय ले कर बताएं अगर धैर्य इसी का नाम है तो क्षत्रिय के लिए डूब मरने का काम है
राम लक्ष्मण से :- लक्ष्मण के अस्त्र शस्त्र छीन कर
लो देख लो वह तो निहत्था अकेला ही भगा रहा है

भरत का पांव में आकर गिरना राम का उठाकर छाती से लगाना और भरत का विलाप

राम भरत से :- ..प्यारे भरत चित त्तो परसंन है
तुमं् इस तरह क्यों रो रहे हो
कुछ कारण भी बताओ , कुछ अपना हाल भी सुनाओ
मेरे प्यारे भाई मेरी दाई भुजा बताओ तो यह रजं कैसे पहुंचा है
भरत तुम्हें मेरी कसम अधिक हैरान ना बनाओ
भरत राम से :- गाना बहर तभील
ऐ भ्राता भरत से खता क्या हुई
मेरी नसीहत तुंहें क्या भरम हो गया
मुझे चरणों से अपने जुदा क्यों किया
कौनसा मुझ से खोटा कर्म हो गया
ऐ भ्राता भरत से खता क्या हुई...............

इस शरारत का मुझको पता ही नहीं
आप बैठे कहीं भरत बैठा कहीं
कर लिया आपने किस तरह से यकीन

हाए ऐसा भरत बेशर्म हो गया

ऐ भ्राता भरत से खता क्या हुई...............

हाय सारी अवध को बियाबान कर
आ गए आप जंगल में क्या ठान कर
एक उस नीचनी का कहा मान कर
आपको घर में रहना कसम हो गया
ऐ भ्राता भरत से खता क्या हुई...............

मारा भावी ने चक्कर में दे के मुझे
क्या किसी पर गिला क्या बेचारा करू
तुम अयोध्या को मेरे हवाले करो
मैं तुमसे पहले किनारा करू
ऐ भ्राता भरत से खता क्या हुई...............

राम भरत से :- भैया भरत मैं तुंहें निश्चय दिलाता हूं कि मुझको तुम्हारी तरफ से कोई शिकायत नहीं
इसमें ना माता केकई का कसूर है,,
यह तो ईश्वर को इसी तरह मंजूर है
राम भरत से :- यह तो भाई शत्रुघ्न भी भागे आ रहे है
भरत राम से:- हां भ्राता जी ! शत्रुघ्न क्या ! बल्कि माता कौशल्या जी व सुमित्रा जी और गुरु वशिष्ठ जी व मित्र गुह भी तशरीफ ला रहे हैं और मेरे जन्म की शत्रु भी साथ आ रही है
शत्रुघ्न राम से:- शत्रुघ्न राम कै..पैरों में गिर कर प्रणाम भैया !
राम भरत से :-राम शत्रुघ्न को गले लगाकर भरत मुझे खेद है ! तुम्हें सारे कुल को क्लेश देना मंजूर था
भरत राम से :- हां भैया ! किसी का क्या दोष है ईश्वर को इसी तरह मंजूर है

केकई कौशल्या सुमित्रा गुरु वशिष्ठ जी मंत्री इनका होना और सीन चालू रखना

BHARAT KAA KHDAAU LEKAR JAANA

राम केकई के पांव पकड़कर :- प्रणाम माता जी ! आपने इस सफर की फजुल ही तकलीफ

75. 70

उठाई
कैकई चुप है.. माता जी आप बोलती नहीं कहिए तबीयत तो ठीक है
कैकई राम से:- आराम से हां बेटा अच्छी है
राम कौशल्या से:- प्रणाम माता जी !
कौशल्या राम लक्ष्मण को गले लगाकर चिरंजीव रहो ! मेरे लाल ! बेटा तुम धन्य हो ! कि तुम्हारा चांद सा मुखड़ा दुबारा देखने को मिला ,.... मगर शौक है कि वह तो अंत समय तुम्हारा मुंह भी नहीं देख सके
राम कौशल्या से:-हाय माताजी जी यह क्या कहा पिताजी परलोक सिधार गए परंतु कब ?
कौशल्या राम से बैटा उधर तुम वन को पधारे हो उधर वह स्वर्ग को सीधारे
राम कौशल्या से:-हाय !

ओह फलक आज रफ्तार तू घर से निकाल कर हम को सताता रहा
ओह शोक की पिताजी का साया भी सिर से जाता रहा
सीता :- रो कर हाय पिताजी !आप सदा के लिए मुंह मोड़ गए
और हमें किस के सहारे छोड़ गए
लक्ष्मण :- रो कर हाय शोक ! परिस्थितियां क्यों हमारे पीछे पड़ी है
जो हमें सत्यानाश करने पर अड़ी है
एक दुख हो तो भी संतोष कर ले दुखों का भी तो ठिकाना नहीं
कौशल्या लक्ष्मण से :- बेटा ! जो बात होनी है उस पर वृथा शौक करना है बेटा जो बना है . वह एक दिन टूटेगा , जो घड़ा है वह फूटेगा बेटा जो पैदा हुआ है उसे आखिर मरना है और यह यात्रा तो सबको करनी है
भारत का राम से :- गाना
वीरन वियोग तेरा बाबुल को खा गया है टेक
बस्ती हुई अवध को सूनी बना गया है

बाबुल की प्राण हत्या मेरे ही सिर चढ़ी है
मुख्य कारण यह है दिसौटा तुमको दिया गया है
वीरन वियोग तेरा बाबुल को खा गया है
वीरन वियोग तेरा बाबुल को खा गया है.........

मां मेरी के कई ने मुझको दुख दिया है
टीका मेरे कलंक का मस्तक चढ़ा दिया है
वीरन वियोग तेरा बाबुल को खा गया है.........

कृपानिधान भगवन मुझ दीन की अर्ज है
तुम बिन है अयोध्या दुखिया मैं लेने आया हूं

76.   71

चलो साथ मेरे न तुम बिन रहा गया है
वीरन वियोग तेरा बाबुल को खा गया है.........

नाटक

भरत राम से :- भ्राता जी ! जो कुछ प्रार्थना करनी थी
वह कर चुका हूं, आप अधिक मुझे क्यों मारते हो
मैं तो पहले ही मर चुका हूं
अब आशा है कि आप मेरे अपराधों को क्षमा करेंगे
और अयोध्या का सिंहासन अपने चरणों से सजाएंगे
राम भरत से :-प्यारे भरत !तुम्हारा प्रेम जो कुछ मेरे साथ है उसे मैं स्वयं जानता हूं और इस अभिप्राय को भी भली भांति पहचानता हूं परंतु क्या करुं शास्त्रों की आज्ञा और धर्म की बेड़ियों से बंधा हुआ हूं
इसलिए 14 वर्षों के लिए तुम्हारी आंखों से दूर हूं
भरत राम से :- बहुत अच्छा ! भैया यदि आपका यही धर्म है
तो भरत के लिए भी सबसे शुभ कर्म है
कि आपके चरणो में निवास करूं और
14 वर्ष स्वयं भी बनवास करूं
राम भरत से :-प्यारे भरत ईश्वर की कृपा से हमारा कुलवंश आज तक निर्दोष रहा है

भारी से भारी कार्य भी आए तो अपना प्रण नहीं छोड़ा
भैया ! महाराज रघु ,..जो अयोध्या के बीच में महाराजा होते हुए भी जंगलों में कुटिया बनाकर रहते थे और एक गरीब आदिवासी श्री दत्त जी द्वारा दी गई चरण पादुकाओं को अपने शीश पर धारण करके अयोध्या में लेकर आए ,और उनको अयोध्या के सिंहासन पर रखकर सुशोभित किया और उन आदीवासी दत्त की उन्हीं चरणपादुका को प्रणाम कर उन्होंने अयोध्या का सर्व संपन्न खुशहाल राज्य पाठ चलाया
रघुवंशी महाराजा दिलीप गौ माता की रक्षा करने के लिए शेरों के सामने अपने आप को खाने के लिए रख दिया

महाराज दधीचि ने अपने शरीर की हड्डियों को तपस्या करके वज्र से भी अधिक मजबूत बना कर दुष्टों का संहार करने के लिए इंद्र देवता को दान में दी

महाराजा हरिश्चंद्र को कौन नहीं जानता जिन्होंने अपना सब राज वह ठाठ बाट सब छोड़कर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए अपने बच्चों तक की कुर्बानी दे दी और शमशान भूमि में अपना जीवन बसर किया एक सत्य वचन के लिए महाराजा हरिश्चंद्र ने क्या कुछ नहीं किया

एक बाज से कबूतर की रक्षा करने के लिए रघुवंशी महाराजा शिवि ने अपने शरीर को काटकर कबूतर के मांस के बराबर तोल दिया और बाज को अपने शरीर का दान दिया
हम उस सूर्यवंशी रघुकूल की संताने हैं जिन्होंने सत्य के लिए सदैव अपने प्राणों को निछावर कर दिया परंतु अपने प्रण और सत्य से कभी नहीं डिगे

भैया ठीक तो वह है कि अब तुम अयोध्या वापस लोट जाओ
इस छोटे से कार्य के लिए रघुवंशी कुल को लज्जित न करो
भरत राम से :- अच्छा भैया ! जो माताजी कहेंगे वह तो आपको माननीय होगा
राम भरत से :- हां भ्राता जी , हम कब मना करते हैं, माता जी की आज्ञा हमारे लिए सदैव शिरोधार्य है
कौशल्या राम व भरत से :- मेरे पुत्रों यदि मुझ पर इस कार्य को छोड़ते हो तो दोनों ध्यान लगाकर सुनो
14 वर्षों के लिए भरत अयोध्या में निवास करें
और रामचंद्र 14 वर्षों के लिए बनवास करें
धर्म के युद्ध में कौशल्या कभी झूठ नहीं बोलेगी
और व्यर्थ ही अपनी जान पत्थर नहीं तोलेगी
भरत कौशल्या से :- हाय मैं क्या करूं ! भरत को हर प्रकार से विवश किया जाता है
और ना चाहते हुए भी अपने चरणों से दूर किया जाता है
अच्छा भैया आप इतनी कृपा कीजिए
कि आपकी दोनों खड़ाऊँ मुझे दे दीजिए
इनको भी अपने साथ ले जाऊंगा
और इन्हीं से अयोध्या का सिंहासन सजाऊंगा
भैया परंतु इस बात का ध्यान रहे
कि 14 वर्ष से एक भी दिन अधिक लगाएंगे
तो भरत को कदाचित जीवित न पाएंगे

राम भरत से :- खड़ाऊ देकर हे प्यारे भारत मैं तुम्हारा कहना स्वीकार करता हूं
और इस बात का विश्वास दिलाता हूं
कि 14 वर्ष व्यतीत होते ही मैं तुम्हारे पास आऊंगा और उससे अधिक एक भी दिन नहीं लगाऊंगा

राम लक्ष्मण सीता पर्दे में
भरत मिलाप समाप्त
भारत का जंगल में चले जाना
दृश्य समाप्त

पंचवटी

लक्ष्मण राम से:- भैया पंचवटी पर तो प्रकृति ने अपनी योग्यताओं का अचरज कर रखा है
राम लक्ष्मण से :- निसंदेह हि भैया ! गोदावरी के सुंदर और निर्मल जल ने इसको अति सुंदर वह मनमोहक बना रखा है

शूर्पणखा का आना

शूर्पणखा राम से :- अजी ! आप कौन हैं यदि कुछ आपत्ति ना हो तो आप का आवास स्थल बता दीजिए ?
राम शूर्पणखा से :- देवी !हम अयोध्यापति महाराज दशरथ के जाए हैं
और 14 वर्ष के लिए पिताजी के आदेश से वन भ्रमण करने आए हैं
यह मेरे छोटे भाई लक्ष्मण हैं और यह सीता जी मेरी धर्मपत्नी है जो हमारे साथ आई हैं
और मेरा नाम राम है
कहिए आपको हमसे क्या काम है
यदि आप अनुचित ना समझें तो आप अपना निवास स्थल का संपर्क बता दीजिए
और आपका शुभ नाम भी बता दीजिए
शूर्पणखा राम से :- जरा मटक कर मैं लंकापति रावण की हमसीर हूं
और खूबसूरती में मशहूर हूं
भाई खर और दूषण भी इसी जगह रहते हैं
और नाम के लिहाज से मुझे सूर्पनखा कहते हैं
यद्यपि बहुत से राजकुमारों कि मुझ पर तबीयत आई
मगर मैं तो किसी को भी खातिर में ना लाई
राम शूर्पणखा से :- हे देवी ! फिर यहां क्यों तकलीफ उठाई
शूर्पणखा राम से :- इसलिए ! कि तुम ने शूर्पणखा के दिल में जगह पाई
राम शूर्पणखा से :- हे देवी ! यह कहानी मेरी कुछ समझ में कुछ ना आई
शूर्पणखा राम से :- गाना
जोगी हम तो लुट गए तेरे प्यार में........
शूर्पणखा राम से :- देखने में तो अकलमंद दिखते हो, पर हो पूरे सौदाई
अजी आप मेरे लोग मैं आप की लुगाई
अब तो समझे मेरे बाप के जमाई
राम शूर्पणखा से :- हे देवी ! जब तुम अच्छे अच्छे राजकुमारों की खातिर में ना लाइ
तो हम फ़क़ीरों से

शादी करने की धून समाई
शूर्पणखा राम से :- तबीयत है जहां आई,
फिर कौन बादशाहा कौन सोदाई
राम शूर्पणखा से :- हे देवी ! मुझे अफसोस है कि मैं तुम्हारी अभिलाषा पूरी नहीं कर सकता
क्योंकि मेरी पत्नी मेरे साथ है
हां ,...अगर लक्ष्मण जी मंजूर करें तो हमें बड़ी खुशी की बात है
वह इस वक्त अकेला है और वैसे भी बड़ा जवान अलबेला है आप उसके पास

जाइए
शूर्पणखा लक्ष्मण से :- गीत गाकर
छोड़ लक्ष्मण आई सारा संसार तेरे लिए
नाटक
शूर्पणखा लक्ष्मण से :- अजी !इनसे तो दिल्लगी करती थी
वास्तव में तो आपकी मोहब्बत का दम भर्ती थी
वह काला कलूटा अबनुस का सौटा
आदमी न आदमियों की सूरत
अरे लक्ष्मणजी जब तक जीऊंगी
तुम्हारे चरण धोकर पिऊंगी
लक्ष्मण शूर्पणखा से :- हंसकर देवी मेरी खुशनसीबी का क्या ठिकाना है जब तक तुम जैसी चंद्रमुखी मर्दिनी की तबीयत मुझ पर हूं माहिर हो गई और एक ही धनवान से घायल हो गई
रंग है कि कुंदन की तरह चमक रहा है
और चेहरा बुट किया पोलीस की तरह चमक रहा है
शूर्पणखा लक्ष्मण से :-जरा लचक कर तो किस बात का हिज ब है
लक्ष्मण शूर्पणखा से :-हे देवी मैं रामचंद्र जी का एक छोटा सा सेवक हूं इसलिए मेरे साथ शादी करने में तुम्हारी सारी उम्र मिट्टी खराब है
शूर्पणखा राम से :- गाना
दिल में तुझे बैठा कर
नाटक
शूर्पणखा राम से :- राम के पास पहुंचकर अजी आप मुझे क्यों हैरान कर रहे हैं
और खामखां परेशान कर रहे हैं
वह छोकरा तो बिल्कुल नादान है
भला उसे इन बातों की क्या पहचान है
उस पर तो मैं थूकती भी नहीं
उसकी शक्ल देखते हो दिल कोसों दूर भागता है
ऐसा बदसूरत इंसान तो मैंने कभी नहीं देखा
राम शूर्पणखा से :-हे देवी ! मुझ पर तो मेहरबानी करो
और जरा अपने फैसले पर दोबारा नजर सानी करो
यदि तू सती है तो वह भी जति है
शूर्पणखा राम से :- अजी ! काहे का जति है वह जितना बदल सकल है उस से बढ़कर मंदमति है
आप तो मुझे यूं ही हरा देते हैं
शूर्पणखा राम से :- राम की गर्दन की तरफ हाथ बढ़ाकर

शूर्पणखा के कोमल हाथ तो इसी गर्दन पर जेब् देते हैं
राम शूर्पणखा से :-जरा पीछे हट कर
यह हाथापाई किसी और के साथ करो
जरा मुंह से बात करो
शूर्पणखा राम से :- मेरे हाथों में कांटे तो नहीं जो आपकी गर्दन में चुभ जायेंगे
राम शूर्पणखा से :-हे सुंदरी ! मैं एक बार कह चुका कि मेरी शादी हो चुकी है इतना ही नहीं बल्कि मेरी अर्धांगिनी मेरे साथ हैं तुम लक्ष्मण के पास जाओ
शूर्पणखा राम से :- शादी हुई तो क्या बात है राजे महाराजे शादी होने के इलावा भी दूसरों से मोहब्बत करते हैं

राम शूर्पणखा से :- यह धर्म के विरुद्ध है वह महा पाप करते है हे देवी यहां पर तुम्हारी दाल नहीं गलेगी
आखिर निराश होकर ही टलेगी
तुम्हारी जोड़ी तो लक्ष्मण के साथ मिलती है
शूर्पणखा लक्ष्मण से :-अजी महाराज ! आपने किस जंगल के पास भेज दिया
जिसको न बोलने का तरीका है
ना बात करने का सलीका है
वह तो आला दर्जे का बदतमीज जैसे कई वर्षों का मरीज हो
लक्ष्मण की तरफ अंगड़ाई ले कर
हे मेरे भरतार मैं आपको छोड़कर कहां जा सकती हूं
अब तो हम और तुम और दफ्तर गुम
शूर्पणखा लक्ष्मण से :- गाना कव्वाली
हाल दिल का न पूछो

नाटक

लक्ष्मण शूर्पणखा से :- हे देवी जो शख्स दूसरे का गुलाम हो
वह तुम जैसी सुंदरी से कैसे हम कलाम हो
शूर्पणखा लक्ष्मण से :- हे महाराज तुम्हें मेरा कुल भी मालूम है
लक्ष्मण शूर्पणखा से :-हां मैं जानता हूं तुम रावण की आवारा बहन हो
शूर्पणखा लक्ष्मण से :- क्रोध में बस जी बस !
भौंकने को सिखाई तो काटने को आई
जरा सा जबान को लगाम दो
लक्ष्मण शूर्पणखा से :- जाती है या बताऊं मौत का भाव

80. 75

शूर्पणखा लक्ष्मण से :-प्यार में तुम तो बड़े बेवफा हो
लक्ष्मण शूर्पणखा से :-वह काम करो जिससे लोक परलोक में नफा हो
शूर्पणखा सीता से :-शूर्पणखा सीता की ओर गुस्से में क्यों री बेहया ! तुम को शर्म नहीं आती
जो वहशियों की तरह जंगल में फिर रही है
जो मेरे काम में रुकावट डाल रही है
सीता शूर्पणखा से :- अरी मैंने तेरा क्या बिगाड़ा है ,जो खामखा मेरे गले पड़ रही है
राम लक्ष्मण से :- भैया लक्ष्मण इसकी एक एक रग से शरारत की बु आ रही है
हमारा पीछा छुड़ा तो अब सीता की ओर लपक रही है
जब तक यह अपनी करनी बद कारी की सजा नहीं पाएगी
सीधी तरह यहां से नहीं जाएगी
लक्ष्मण शूर्पणखा से :- अजी सुंदरी ! इसके साथ क्यों झगड़ रही है
जोड़ी तो हमारी तुम्हारी मिलती है आओ मैं तुम्हें प्यार का सबक सीखाऊं
शूर्पणखा लक्ष्मण से :-महाराज जी आपने तो मेरा दिल रख लिया
नहीं तो यह दिल वैसे ही पिंगला जा रहा था
लक्ष्मण शूर्पणखा से :-हे देवी अब आप अपने कान और नाक मेरी तरफ करो
क्योंकि मैं आपके लिए अच्छे-अच्छे गहने बनवाऊंगा नाक और कानों का
का पैमाना तो ले लू तलवार निकाल कर ताकि रावण को भी पता लग जावे और नाक कानो
के गहने देख सके नाक और कान काट देना
शूर्पणखा लक्ष्मण से :- अजी यह क्या कर रहे है आप
लक्ष्मण शूर्पणखा से :- गहने देख रहा हूं कितने बड़े आएंगे

शूर्पणखा लक्ष्मण से :-हाय हाय कैसा जुल्म किया अन्यायी तूने शर्म भी नहीं आई
लक्ष्मण शूर्पणखा से :-यह तो थोड़ी मिली है सजा
ज्यादा बोली लूंगा जबां तरास
तेरा हो जाए सत्यानाश
शूर्पणखा लक्ष्मण से :-अरे देखो तो सौदाई करूं
तीनों की मंजाई करुं यही ठहरे रहना अब मेरे भाई को बुला कर लाती हूं और तीनों को मजा चखाती हूं

Page 81.76

लक्ष्मण शूर्पणखा से :- जाती है या बताऊं मौत का भाव

सूर्पनखा दृश्य समाप्त

भंगड.खाना खर दूषण वह राक्षस

राम लक्ष्मण सीता पर्दे के अंदर

दूषण खर से :- अरे भाई खर !
खर-दूषण से :- यस माय डियर सर
दूषण खर से :प्याला आगे करके
मेरे भाई खर !
पहले प्याला मेरा भर
पहला राक्षस दूषण से :- अरे लुगाई के गुलाम तू एक तरफ होकर मर
दूसरा राक्षस खर से :- अरे खर जब तक शराब ना आए तो एक दौर नसवार का ही लगा ले
दूषण दूसरे राक्षस से:- वाह मेरे लाल ! भुलक्कड़ भला नसवार और शराब का भी कोई होता है मेल
दूसरा राक्षस दूषण से:- अरे तू इन बातों को क्या जाने
दो चार छींके आकर ऐसा नशा खिलेगा जैसे अफीम पर तेल

पर्दे के अंदर से आवाज

सूर्पनखा

सूर्पनखा:- हाय हाय ! भाई दुहाई है दुहाई ! मेरे नाक कान काट लिए
4 राक्षस :- अरे यह बेढंगी सी आवाज कहां से आई
तीसरा राक्षस :- कौन है भाई जो बेवक्त आफत मचाई
आछी आछीआछी !
आज तो मेरी नाक ही गुलगुला बन गई
खर राक्षसों से:- अरे नालायकों यह कैसा तूफान है
आछी आछीआछी !
शूर्पणखा राक्षसों से:- शूर्पणखा करीब आकर अरे बेशर्मों ! तुमने तो दया और शर्म सब भेज खाई
पांचवा राक्षस शूर्पणखा से :- अरे यह तो सूर्पनखा है
कहो बुआ ! आज तो बड़ी खून से लतपत होकर आई हो
यह नया शिकार कहां से मार लाई
शूर्पणखा 5वें राक्षस से:- हाय हाय ! नीग्रो तुम्हें मखोल सूझता है मेरी नाक काट दी गई
दूसरा राक्षस शूर्पणखा से:-कौन मूर्ख कहता है यह तो नसवार से छींके आ रही थी
आछी ! आछी अब तो वह भी हट गई आछी ! आछी !
शूर्पणखा दूसरे राक्षस से :-ले देख ! आंखें खोलकर सत्यानाशी
तीसरा राक्षस शूर्पणखा से:- यह मेडल कहां से ले आई मेरी मौसी
अब नजला जुकाम से भी मिली खलासी

तीसरा राक्षस शूर्पणखा से :- अच्छा हुआ ! यह मक्खियों का अड्डा उठ गया
मैं मक्खियों को बैठने के लिए कोई जगह पाएगी और न हीं कोई तुम्हें सताएगी
सूर्पनखा राक्षसों से :- औ तुम्हारा मुंह काला ! मखोल करने के लिए यही वक्त निकाला
दूसरा राक्षस सूर्पनखा से :-अजी नहीं हमारी खाला , तुमसे मखौल करें कौन साला
मगर यह तो बताओ , यह मुंह है या खस्सी परनाला
खर :- सबको डांटकर खामोश! खामोश! अगर ज्यादा शोर मचाओगे

सख्त सजा पाओगे
चुप रहो !
खर शूर्पणखा से:- बताओ बहना यह क्या हालत बना रखी है
शूर्पणखा खर से :- रो कर भैया यह कुछ बताने भी दे !
खर शूर्पणखा से:- गाना लावणी मे
नाक कटा नकटी हो आई, चेहरा लहू लुहान हुआ
बता तो बहना शूर्पणखा ऐसा क्या घमासान हुआ
किस जालिम ने की है हरकत , किसके सिर पर मौत चढ़ी
जीने से बेजार कौन है , किसकी आई बुरी घड़ी
सांप के मुंह में उंगली देवें , किसकी इतनी जरूरत बढ़ी
आदम के रास्ते कौन चला है, किसकी आई बुरी घड़ी
कौन है जिसको अपने, बाहुबल का इतना अभिमान हुआ
बता तो बहना शूर्पणखा ऐसा क्या घमासान हुआ
शूर्पणखा खर से :- गाना लावणी
बैठे-बैठे दिल उक्ताया , यूं ही सैर को जाती थी
करती फिरती मटरगश्ती , मैं अपना दिल बहलाती थी टेक
चलते फिरते यूं ही अचानक , पंचवटी पर जा अटकी
नज़र पड़े दो वनवासी , झट देख उन्हें मैं ठीठकी
हुई मैं जिस दम उनके सामने, आपस में कुछ गिट मिट की
बुरी नजर से लगे देखने , आपस में कुछ गिट मिट की
वह चाहते थे फुसलाना, मैं खातिर में नहीं लाती थी
करती फिरती मटरगश्ती , मैं अपना दिल बहलाती थी
खर शूर्पणखा से :-
वह वनवासी सत्यानाशी कौन है , और किसके जाए हैं
मेरे इलाके में वह अहमक, बिना इजाजत क्यों आए हैं
मेरे हुक्म बिना पंचवटी में, किसने वह ठहराए हैं
करें यहां आकर खुरींजी , खौफ न कुछ दिल पर लाए हैं
निश्चय ही उनके वास्ते , मौत का सब सामान हुआ
बता तो बहना शूर्पणखा ऐसा क्या घमासान हुआ
शूर्पणखा खर से :-
वह वनवासी अवधपुरी के राजकुमार कहलाते हैं
नाम एक का राम, दूसरा लक्ष्मण बतलाते हैं
उनकी जो मंजूर नजर , सीता कह उन्हें बुलाते हैं
हुस्न जवानी देख, चांद और सूरज भी शरमाते हैं
नाक उड़ा दिया जब मेरा , जब मैं अपने आप बचाती थी
करती फिरती मटरगश्ती , मैं अपना दिल बहलाती थी
खर शूर्पणखा से :-
अभी चखाऊं मजा उन्हें, राजकुमार कहलाने का
मेरे इलाके में आ कर, मुझ पर हाथ उठाने का
पता चलेगा अभी उन्हें , इस तेरे खून बहाने का
जब तक ना लो बदला उनसे , भोजन तक ना खाने का
देख तेरी हालत यह , मेरे पार जिगर के बाण हुआ
बता तो बहना शूर्पणखा ऐसा क्या घमासान हुआ
नाटक

खर शूर्पणखा से :- हां हां ! मालूम हो गया
वह बनवासी सत्यानाशी दही के धोखे में कपास खा गए

और खुद ही मौत के मुंह में आ गए
बहन आप आराम करो मैं अभी जाता हूं
और उन तीनों का सिर काट कर लाता हूं
शूर्पणखा खर से :- नहीं नहीं ! मैं भी खुद साथ चलूंगी और उनका खून पीकर गले की प्यास बुझ आऊंगी
पांचवा राक्षस शूर्पणखा से:- अगर ऐसी बहादुर थी तो नाक कटवा कर क्यों आई
उस वक्त क्यों न दिलेरी दिखाई
अब बनती है तीसमार खां की ताई

दूसरा पांचवें राक्षस से डांट कर चुप रह
अरे सौदाई क्यों ज्यादा बक बक लगाई

राक्षसों के साथ जंगल में जाना
पर्दा खोलना

राम लक्ष्मण सीता का दृश्य चालू

राम लक्ष्मण से :- भ्राता वह देखो सामने गरदो गुबार छा रही है
मालूम होता है वह बदकार अपने हीमातियों को साथ ला रही है
तुम सीता जी को यहां से ले जाओ
लक्ष्मण राम से :- भैया मैं तुमको छोड़कर नहीं जा सकता

राम लक्ष्मण से :- तुम सब बातों की जिद ना किया करो
कभी बात भी मान लिया करो

लक्ष्मण राम से :-अच्छा भैया दिल तो नहीं चाहता तुम्हें अकेला छोड़ जाऊं
मगर तुम्हारी आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता

लक्ष्मण सीता का पर्दे में चले जाना ..सीन चालू
दंगल में आवाज

खर राक्षसों से :- मेरे वीर बहादुरो 1 इस बनवासी को ऐसी मोत मारो की ईसे छठी का दूध याद आ जाए

1st rakksah राम से:- क्यों बे उल्लू यहां क्यों आया

राम 1st से:- चुपका चुपका चला जा नहीं तो तुम्हारा मेरे पास इलाज है

2nd राम से :- हर एक को शूर्पणखा ना समझना

3rd राम से :- हा अगर जान प्यारी है तो सीता को हमारे सरदार के पांव में गिरा दे

राम राक्षसों से :- हरामजादे ! मरने के लिए तैयार हो जा

बारी-बारी सबका मरना

खर राम से :- खबरदार हो जा ! तेरी मौत का पैगाम आया है

राम खर से :- वो मगरूर अब तेरी कसर रही लश्कर तो सब काम आया है

खर राम से :- हो बेगैरत तूने मेरी बहन पर हाथ क्यों डाला

राम खर से :- यह तो पहले ही जली बुनी फिरती थी बड़ी मुश्किल से यहां से टाला
ऐसी बहन का करो मुह काला

सूर्पनखा खर से :- भाई खर देना इसका जवाब ! हरामी ज्यादा ही सिर पर चढ़ा जा रहा है

खर राम से :- ...दोनों की लड़ाई ...तो मरने के लिए तैयार होजा ... तिर छोड़ कर .....इस दुनिया से फरार हो जा

खर :-खर का मर जाना.... मर गया मेरी मैया

दूषण खर से:-घबराओ मत भैया मेरे मैं इसे मजा चखाता

राम दूषण से:- इस को तसल्ली बाद में देना पहले अपनी जान बचा

दूषण राम से:- क्या डर है जरा मुकाबले पर आ

राम का तीर मारना चल दफा हो बदकार

दूषण राम से:- अरे जालिम यह क्या आग सी लगा दी

दूषण का मर जाना ....सुरपंनखा का दौड़ जाना

लक्ष्मण राम से :-राम में पैरों में गिर कर भ्राता जी ! तुम धन्य हो तीर चलाने में भी कमाल कर दिया

सीता राम से:- चरणों में मेरे प्राण नाथ क्षत्रिये धर्म की जिंदा तस्वीर
प्यारे लक्ष्मण के वीर
आप थक गए होंगे जरा आराम कीजिए .....

पर्दा बंद

रावण का दरबार

रावण सभा से :-गानेवाली को बुला कर गाना सुन कर... हा हा हा हा !!!!! मुंझा प्रतापी बलवान दिलेर ,बहादुर शेर जिसकी भुजा बल का सारा संसार सिक्का मानता है
और जिसके नाम को हर एक छोटा बड़ा जानता है
मैं वह रावण हु जिसने अच्छे-अच्छे अभिमानी के सिरों को एक क्षण में कुचल डाला
और मै वह रावण हूं जिसकी धाक ने जमीन आसमान को हिला दिया
जिसने बड़े-बड़े क्षेत्रीय को क्षण में खाक में मिला दिया....
हंसकर हा हा हा हा हा ...कहां लंका कि शहंशाही
कहां इन मामूली रियासतों की बादशाही

पहरेदार :- बात काटकर महाराज गजब हुआ खर दूषण सेना सहीत रामचंद्र के हाथों मारे गए

रावण पहरेदार से :- हे हे !! यह क्या खर और दूषण से सुरवीर ! सेना सहित एक तरफ, और रामचंद्र एक तरफ

क्रोध से अकल से बात कर
ओ kambkt झूठ बिल्कुल बकवास
अरे तेरा सत्यानाश कभी ऐसा हो सकता है

शूर्पणखा दरबार में :- हाय महाराज ! मैं तो लुट गई हाय मैं मर गई
रावण शूर्पणखा से :- बात क्या है कुछ तो मुंह से बोलो

शूर्पणखा रावण से :- राधेश्याम दोहा

पड़ने जावे इस राज पर और ताज पर खाक
तेरे होते कट गई आज बहन की नाक

रावण शूर्पणखा से :- क्रोध में अरे तेरी दुर्गति किसने बनाई
वह कौन था मौत का
86.

खरीददार

और तुम्हारी यह नाक किसने काटी

शूर्पणखा रावण से :- राधेश्याम भाई दो लड़के राम लक्ष्मण
उस दंडक वन में आए हैं
हमराह एक सीता नामी सुकुमारी नारी लाए हैं

मैं उधर अचानक निकल गई उस नारी से मिलना चाहा
इतने में छोटे तपस्वी ने मुझसे कुछ छल करना चाहा

जब मैंने तेरा नाम लिया तो उसने मुझ को दी गाली
फिर मेरे कान कतर डालें मेरी यह नाक काट डाली

मेरी नाक गई सो गई अब अपनी नाक संभालो तुम

जग में अच्छी नाक नहीं तो नकटा नाम करा लो तुम

आगया नाक में दम मेरा ना करे तेरी दुहाई है

बहन की नहीं हंसी है यह भाई कि लोक हसाई है

रावण शूर्पणखा से :- राधेश्याम गम नाक कान हो तुम उनकी भी मैनाक नहीं अब रखूंगा
भेजा नथुनों की राह करूं मिर्चों का नाश को नहीं दूंगा

बहन की नाक उड़ाने में होती है नाक नहीं ऊंची

अबला पर हाथ उठाने में होती है धाक नहीं ऊंची

यह धरा धाम पाताल लोक मेरे पिना के ने जीते हैं

मेरे भय शेर और बकरी एक घाट पानी पीते हैं

यह समाचार यह दुराचार क्या खर दूषण से नहीं कहा
उसका तो वही अखाड़ा था उस कुलभूषण से नहीं कहा

शूर्पणखा रावण से :- राधेश्याम वे सेना ले कर गए वहां अत्यंत घोर संग्राम हुआ

लेकिन बड़े तपस्वी ने उन सब का काम तमाम किया

पृथ्वी पर नदी लहू की थी लाशों पर   लाशें पड़ती थी
मैं देख रही थी खड़ी-खड़ी उन सब की गर्दन कटती थी

रावण अपने मन में :- राधेश्याम

जब एक अकेली ताकत ने इन सब वीरों को मारा है

तो फिर निश्चय यह सिद्ध हुआ नारायण में अवतार लिया
87.   82

निश्चित ही वह अवतारी है तो वह भाव ही रखूंगा

दूसरे जन्म का बंधन भी उनके द्वारा ही तोड़ूंगा

यह मौत नहीं मोक्ष यह लड़ना है नहीं मिलन है यह

वह भी हो शर भी उनका हो तो भाव सागर तरना है यह

रावण शूर्पणखा से :- राधेश्याम

वह काटे नाक कान फिर जिंदा रहे जमाने में

तो टूटे 20 भुजा   मेरी लानत है शस्त्र उठाने में

तुम बैठो थोड़ी देर यहां मैं दंडक वन में जाता हूं

 इस नाक काटने का बदला दोनों से अभी चुकाता हूं

रावण शूर्पणखा से :- यशवंत सिंह बहन शूर्पणखा तुम जाओ महलों में आराम करो

रावण दरबारियों से :- आज इसी वक्त दरबार को बर्खास्त कर रहा हूं जाओ तुम आराम करो और दूसरी आज्ञा का इंतजाम करो

अकेला रावण अपने मन में

सीता मेरी जान बेईमान की मल्लिका है निसंदेह तू सीता है कितना प्यारा नाम है
 सीता ओ जालिम सीता तु यद्यपि स्वयंबर में तो नहीं जीती अब अवश्य जीती जाएगी और अपने शरबत ए दीदार के जाम अपने इन नाजुक हाथों से रावण को पिलाएगी और तेरी मनोहर सुंदरता लंका के महलों में जगमगाएगी
 ओ जालिम तूने यहां आकर मेरा पीछा नहीं छोड़ा और बैठे-बिठाए दिल को पूरी तरह मरोड़ा
मगर याद रख अब अयोध्या लौट कर वापस नहीं जाएगी
ताकत से बल से छल से तुझे चुरा कर ले आऊंगा

रावण :-दुखी होकर हां हां किस तरह जाऊं सीधी तरह रामचंद्र के पास जाकर लड़ना लोहे के चने चबाना है अब अकेले से यह काम करना मुश्किल है किसका साथ लूं

खुश होकर हां हां याद आया मामा मारीच, मामा मारीच, मेरे बहादुर मारीच, उछल कर अभी जाता हूं और उसे अपना हमराज   मनाता हूं

रावण का आगे चलना
पर्दा गिरना

मारीच का झोपड़ा

रावण मारीच से :- मारीच ! ओ मामा मारीच !

मेरे बहादुर मारीच !

88. 83

मारीच रावण से :- आइए महाराज मेरे सिर के ताज किस तरह गरीब की झोंपड़ी में आगमन हुआ

रावण मारीच से :- अंगेज में महाराज इस वक्त मैं तेरी मदद को मोहताज हूं

मारीच रावण से :- महाराज मेरी जान और जिसम आपके चरणो पर कुर्बान है कहिए मुझसे क्या काम है
रावण मारीच से :- शाबाश ! मेरे बहादुर , तू बड़ा दिलेर है आखिर शेरों का शेर है चल मेरे साथ मैं तुझे कार्य बताओ तेरी माता तथा पिता भाई
का बदला दिलाऊं

मारीच रावण से :-महाराज क्या काम है आपकी बात बड़ी पेचदार है
रावण मारीच से :- मारीच मामा तू तो बिल्कुल गवार है तेरी मां का तथा भाई का कातिल रामचंद्र तथा लाल लक्ष्मण पंचवटी में आए हुए हैं तथा उस सुंदर देवी सीता को भी साथ में लाए हैं अगर तुम थोड़ा सा साहस करो तो तुझे बदलाव मिल सकता है मेरा काम निकलता है किसी तरह सीता को उठा लाएंगे और वह भोंदू जंगल में भटक भटक कर मर जाएंगे
मारीच रावण से :- महाराज आपने कोई उपाय तो सोचा होगा
रावण मारीच से :-राधेश्याम

तू चल कर माया मृग बन जा मैं बाबा जी बन जाऊंगा
तू राम लक्ष्मण को बहकाना मैं सीता को हर लाऊंगा

मारीच रावण से :- राधेश्याम

जो उनसे बैर बढ़ाते हैं वह आखिर मारे जाते हैं वह मौत मौत के घाट वही बेवक्त उतारे जाते हैं

करना है तो निज दोष हरि सीता का हरना ठीक नहीं

करो तो शुभ कार्य करो चोरी करना ठीक नहीं

अच्छे कर्मों के करने से गृह में प्रकाश हो जाता है
पर नारी घर में लाने से घर में विनाश हो जाता है

पेज 89. 84

रावण मारीच से :-

यदि नहीं साथ देगा मेरा तो सारा ज्ञान भुला दूंगा
सीता को से पहले तुझे यमलोक पहुंचा दूंगा

मारीच रावण से :-यशवंत सिंह
कब्र में पावं रखने के लिए तैयार बैठा हूं
बुढ़ापा आ गया सरकार हिम्मत हार बैठा हूं

महाराज मैं तो आपका ताबेदार हु हर तरह से आपकी सेवा करने के लिए तैयार हूं मगर इस बेरी बुढापे में कुछ नहीं बनता सब चोचंलें जवानी साथ ले गई मैं पहले ही उनके हाथों को आजमा चुका हूं और उनके सामने जाने की कसम खा चुका हूं
रावण मारीच से :- कड़क कर अच्छा देख मै तेरी कसम तोड़ता हूं और एक तलवार से तेरा भेजा निचौड़ता हूं

मारीच रावण से :- महाराज मुझे माफ कर दीजिए मैं आपके आगे हाथ जोड़ता हूं

,kyaa yhaa oi li\ne missig ai
मारीच रावण से :- महाराज माना कि आप रावण है पर वह तो ईकावन है
रावण मारीच से :- औ बेहूदा मक्कार उपदेशक के बच्चे ठहर मैं तुझे नसीहत सिखाता हूं और तुझे इनकार करने का मजा सिखाता हूं अरे वो गद्दार तेरा चार दिनों में सारा बल खत्म हो गया और रामचंद्र का नाम सुनते ही तेरा पखाना निकल गया
मारीच रावण से :-ये बिन बुलाए की आफत ना झगड़ा ना तकरार आ बैल मुझे मार फंसा बड़ा बेढब फसां उधर राम जी के तीर इधर इसकी तलवार अजब तमाशा है इश्क बाजी शूर्पणखा करें बिन आई मौत बेचारा मारीच मरे खीर खावे बामणी फांसी चढ़े शेख नहीं देखा हो तो यहां आ कर के देख

रावण मारीच से :- अरे कमबख्त जल्दी जवाब दे सोचता क्या है
मारीच रावण से :- जरा ठहर जाइए जरा सोच कर जवाब देंगे आखिर मरना है
रावण मारीच से :- मैं इससे ज्यादा इंतजार नहीं कर सकता
मारीच रावण से :- वाह अजीब जबरदस्ती है दस मिनट तो फांसी वाले को भी दी जाती है

रावण मारीच से :-मरना है तो सीधी तरह मर पागलों की तरह क्यों मरता है

मारीच रावण से :-मरती तो सारी दुनिया है मगर उल्टा मरना तो आपसे सुना है

रावण मारीच से:- कड़क कर अरे ! ओ मरदूत तेरा किस तरह ख्याल है
मारीच रावण से :- हुकम से इनकार करने की किसकी मजाल है
रावण मारीच से :- शाबाश ! मेरे बहादुर शा्बास ! अगर तू मेरे साथ है तो सीता को उड़ा लाना मामूली सी बात है हा हा हा हा हा हा हा

मारीच :- मन में या बेईमानी तेरा ही आसरा ..... अंदर चले जाना

सीता हरण

लक्ष्मण ....सीता हरण ....राम सीता ...मायावी मृग
सीता राम से :-   गाना लावणी
ch
1 वर्ष अब बाकी रह गया लोट अयोध्या जाने में
13 साल खत्म हो गए आंख पलक झपकाने में

हम जल्द अयोध्या जाएंगे और खुशी के मंगल गायेंगे
फिर भरतजी मिलने आएंगे खूब होगी धुम जमाने 1 वर्ष अब बाकी रह गया... ....
chEck this song wether lyrics are correct or not

माता के दर्शन पाऊंगी चरणों में शीश निभाऊंगी सभी बातें उन्हें सुनाऊंगी जो देखी यहां तक आने में 1 वर्ष अब बाकी रह गया लौटा अयोध्या जाने में

जब निकट अयोध्या जाएंगे लोग हमको लेने आएंगे
नगरी खूब सजाएंगे खूब होगा जशन टोहाने 1 बरस अब बाकी रह गया

सीता राम से :- हे प्राणनाथ ! अब तेरह वर्ष खत्म हो गए और बातों ही बातों में कम हो गए अगले साल तो हम अयोध्या पधारेंगे

राम सीता से :-ईश्वर की दया से यह दिन भी कट जायेंगे मगर जिस काम के लिए अवतार लिया है वह कार्य तो अभी अधूरा है

राम लक्ष्मण से :- भैया लक्ष्मण तुम बन में जाकर कुछ कंदमूल ले आओ हमें भूख लग रही है

लक्ष्मण राम से :- जैसी आज्ञा हो ! भ्राता जी !

लक्ष्मण का चले जाना

सीता राम से :- प्राण नाथ वह कौन सा काम है
राम सीता से :- प्राण प्रिय हमने अवतार इस भूमि का भार घटाने के लिए लिया है जो ऋषि महात्माओं पर अत्याचार हो रहे हैं उन्हें मिटाने के लिए लिया है अब आप इस वक्त पाताल लोक चली जाओ और यहां पर आप थोड़ी सी शक्ति छोड़ जाओ फिर देख मैं अपनी नरलिला रचता हूं और निशाचरों का इस भुमी पर से अंश मिटाता हूं

सीता राम से :- जैसी आज्ञा हो स्वामी ......साड़ी बदल कर आना अंदर से

लक्ष्मण राम से :- भैया यह लीजिए कंदमूल और फूल फल

मृग का आना

सीताराम से :- एक कदम स्टार इशारा करके

दोहा रघुकुल भूषण दुख हरण दीनबंधु भगवान

दासी की विनती सुनो स्वामी दया निधान

सीता :- मृग ऐसा तो देखा न सुना जैसा यह सुंदर सुघड़ सिलौना है

सिर से लेकर पांव तलक सोना ही सोना है

हे नाथ खाल लाऔ इसकी तो कुटिया का सिंगार होगा सोने के मृग की छाला क्या अद्भुत यादगार होगी

राम सीता से है प्रिय मैं जाता हूं ...लक्ष्मण से ....भैया लक्ष्मण तुम सावधान रहना अच्छी तरह खबरदार रहना

राम का मृग के पीछे जाना

पर्दे में से आवाज

आवाज :- भाई लक्ष्मण ! आओ मेरे प्राण बचाओ
सीता लक्ष्मण से :- लक्ष्मण सुनते हो !यह कैसी आवाज आई
लक्ष्मण सीता से:- हां जानता हूं किसी ने मेरा नाम लेकर आवाज लगाई है
सीता लक्ष्मण से :- किसी की क्या तुम्हारे भाई की आवाज है
लक्ष्मण सीता से:- माताजी तुमको पता नहीं इस आवाज के अंदर क्या यो पेचीदा राज है
सीता लक्ष्मण से :- देवर देवर जाकर देखो रघुराई तुम्हें टेरते हैं भाई के थके हुए बाजू भाई की बाट हैरते हैं
भगवान न जाने अपने सुख कितने कष्टों के मुख्य में है लक्ष्मण इसमें संदेह नहीं तुम्हारे भाई इस समय दुख में हैं

लक्ष्मण सीता से:- किस का साहस है है माता जो उन्हें दुख पहुंचाएगा सूरज जिस जगह प्रकाशित है वहां कब अंधेरा छाऐगा
अच्छा माना दुख आया तो दुखी नहीं कर पाएगा विधाता के दर्शन कर शुख का स्वरूप बन जाएगा
मेरा इस समय धर्म यह मै रहु आप की रक्षा में मेरा सर्व सर्वशव है मेरा बड़े भाई आज्ञा पर
यह वन विशाल व्यागर वयाल भय चारों और घनेरा है मैं तुंहें अकेला छोडूं मैं यह कर्तव्य नहीं मेरा है
सीता का गाना बहरे तबील
तू अभी जाकर भाई की इमदाद कर
मौत मुझको यहां कोई खाती नहीं
पासवानी कि मुझको जरूरत नहीं

मैं यहां से कहीं भाग जाती नहीं

भाई ही भाई का दुश्मन हुआ
क्या करूं पार मेरी बसाती नहीं

93. 88

है बनी के मददगार सो सैकड़ों
बिगड़ी का दुनिया में साथी नहीं

तेरा होगा न पूरा इरादा कभी
दर्द तक मुझे मेरी पाती नहीं
नहीं मालूम तू ने समझा है क्या
बेहया तेरी आंखें लजाती नहीं

अभी कर दूंगी अपना यही खात्मा
जिंदगी श्रीराम केबिन भाती नहीं
तू चला जा जहां दिल करे
तेरी सूरत अब मुझे भाती नहीं

राधेश्याम लक्ष्मण !अब मैंने जान लिया मतलब का भाईचारा है
तुम घर को वन जो आए हो इसमें कुछ स्वार्थ तुम्हारा है

सीता लक्ष्मण से:- हे लक्ष्मण तुम व्यर्थ बहाने बना रहे हो मैं तुम्हारे मतलब को अच्छी तरह से जानती हूं तुम धोखा देकर भाई को मरवाना चाहते हो याद रखो जीना है तो श्रीराम के साथ वरना जिंदगी पर खेल जाना मामूली सी बात है
लक्ष्मण सीता से:- माता माता तुम यह क्या कह रही हो
सीता लक्ष्मण से:- मैं जो कुछ कह रही हूं बिल्कुल सच कह रही हूं जहां तुम्हारी तबीयत करें चले जाओ और मुझे मुंह न दिखाओ शौक सभी मतलब के साथी हैं
लक्ष्मण सीता से:- गाना

मेरी माता तुम्हें क्या हो गया
किस किस्म की बातें सुनाती मुझे
आज दिल तुम्हारे को क्या हो गया
बेगुनाह तोहमत लगाती मुझे

94 89

सब चकरा और वसुंधरा मिट गया खाक में
आप बदमाश कह कर बुलाती मुझे
आज अपने ही कानों से क्या सुन रहा
मौत भी तो नहीं आती मुझे

साथ आया था शायद इसी वास्ते
ऐसी बातें कहकर बुलरुलातीाती मुझे

खूब की परवरिश खूब बदला दिया
खूब देदे केलोरी सुलाती मुझे

अच्छा माता तुम्हारा क्या दोष है
 मेरी किस्मत ही धक्के दिलाती मुझे
बेशर्म धर्म धर्म बेशर्म बे हरम बेहया
बेवफा बे कुनबा तक कहलाती मुझे

नाटक

लक्ष्मण सीता से:- माता जी आप किस किस्म की बातें कह रही है क्या मेरी वफादारी का यही सिला है हां माता किसी का क्या दोष है उन्हीं के साथ लाकर यही गुल खिलाने थे और मेरे जुम्मे लगाने थे हां माता किसी पर क्या अफसोस है यह तो मेरे ही कर्मों का फल है मुसीबत के दिन आए तो माता तुमने भी डंक चलाएं

पर्दे में से राम की आवाज

आवाज :- भाई लक्ष्मण जल्दी आओ मेरे प्राण बचाओ
सीता अपने दिल में :-हां एक औरत आपकी क्या सहायता कर सकती है यह आपकी दासी हर तरह मजबूर है हां इतनी बात जरूर है अगर तुम जीते आए तो मैं तुम्हें जीती पाऊंगी अन्यथा तुमसे पहले स्वर्ग की राह लूंगी

लक्ष्मण सीता से:- हे माता तुम्हारा कसूर नहीं जब आप अपनी जुबान से ऐसे शब्द कह रही हो तो कोई नया बखेड़ा तैयार है अच्छा मैं चला गया तो यहां आपका निगहबान कौन है
सीता लक्ष्मण से राधेश्याम

 मेरी तुम कुछ चिंता ना करो रक्षक है ईश्वर मेरे
तुम जाओ वहीं चले जाओ जिस जगह गए प्रभुवर मेरे
95 90

माता तुम मुझे समझते हो तो आज्ञा मानो माता की

मैं   आज्ञा तुमको देती हूं जाओ सुधि लेने भ्राता की
लक्ष्मण सीता से:- राधेश्याम रोकर
हे पवन देव तुम साक्षी हो हे पक्षी गणों गवाह तुम ही हो
मेरी इस धर्म ना ओके अब हे सूर्यदेव मल्लाह तुम ही हो

आज्ञा पालन करता हूं मैं बस इतना है संतोष मुझे
रघु राई अगर उलाहना दे तुम कह देना निर्दोष मुझे

लक्ष्मण रेखा खींच कर
मैं अब जाता हूं मां तुम सावधान होकर रहना
आज्ञा के भीतर दास रहा तुम रेखा के भीतर रहना

इस रेखा का उल्लंघन कर जो भी पर्णकुटी में आएगा
है आन उसे लक्ष्मण कि वह वही भस्म हो जाएगा

अब अपनी सीता माता को तरुवरो छोड़ता हूं तुम पर
अपनी रखवाली में रखना वन चरो छोड़ता हूं तुम पर

पक्षियों तुम ही अब रक्षक हो तुम पर ही अपना घर सौंपा है
हे पंचवटी हे पूर्ण कटी सीता मां को तुम पर सौंपा है

लक्ष्मण का चले जाना

अनोखा साध

रावण का गाना

औलाद वालों फूलो फलो
भूखे गरीब की यही तो दुआ है
जो एक पैसा देगा वह उसे 1000000 देगा

औलाद वालों फूलो फलो
सीता साधु से:- हे योगीराज आप कौन हैं और कहां से पधारे हैं
साधु सीता से:- हे देवी इसका जवाब मैं क्या दूं आपके सवाल ही दुनिया से न्यारे हैं
सीता साधु से:- हे महात्मा आखिर आपका नाम व रहने का मुकाम
साधु सीता से:- फ़कीरों का क्या नाम जहां रात पड़ गई वहीं विश्राम
सीता साधु से:- हे ऋषि फिर यहां पर किस तरह दर्शन दिए
साधु सीता से:- गाना द्वार खड़ा एक जोगी
नाटक
साधु सीता से:- अहोभाग्य ! जो kandmool हाजिर है ग्रहण कीजिए महाराज
साधु सीता से:-देवी ! भिक्षा तो बाद में लूंगा पहले अपना पता बता दीजिए

96. 91

सीता साधु से:- हे महात्मन सीता मेरा नाम है और मिथिला पुरी पैदाइशी मुकाम है श्री रामचंद्र जी की अर्धांगिनी हूं और महाराजा जनक की राजकुमारी हूं पिता की आज्ञा से मेरे स्वामी 14 वर्ष के लिए बनो में आए हैं और मेरी सौतेली सास के जाए लक्ष्मण भी हमारे साथ आए हैं 13 साल से इन बातों में भ्रमण कर रहे हैं और आप जैसे साधुओं के दर्शन कर रहे हैं

साधु सीता से:-राधेश्याम

हे माई अब मुझे रिक्शा दो मर्तबा रहे आला तेरा
भगवान तुम्हें जिंदा रखे हो सदा बोलबाला तेरा

तू दूधो नहाओ पूतो फलो तू दिन भर दिन बड़भागीन हो
भूखा को थोड़ा भोजन दे देवी तू अटल सुहागिन हो
सीता साधु से:-भिक्षा लीजिए महाराज
साधु सीता से:- लाइए देवी

जब रेखा में घुसता है तो एकदम पीछे हट जाता है
सीता साधु से:- राधेश्याम

अगर भिक्षा देनी हो तो रेखा से बाहर आ माई
जोगी लेते नहीं इस तरह बंधी भिक्षा माई

सीता साधु से:- मुनिवर क्षमा करें रेखा यह छूट नहीं सकती
है और लक्ष्मण देवर की जो मुझसे टूट नहीं सकती
साधु सीता से:- दोहा
मैं कहता हूं तोड़ो नहीं तुम देवर की आन
बाबा भी कभी लेगा नहीं इस प्रकार का दान
अच्छा देवी हम जाते हैं
सीता साधु से:- ना जाइए महाराज राधेश्याम
देवी की आन रहे ना रहे रखूंगी धर्म गृहस्थी का
अब मैं रेखा का ध्यान छोड़ करती हूं कर्म गृहस्थी का
नाटक

सीता साधु से:- अच्छा महाराज ! यह तो बताइए मैं आपको किस तरहbhikshaa de sakti हूं और मैं किस तरह रेखा से बाहर आ सकती हूं
साधु सीता से:- हे देवी तुम इस तरह से करो पहले रेखा पर पाट पाटा रखो और पाट पर पांव को रखो फिर भिक्षा डालो
सीता साधु से:- लीजिए ! महाराज भिक्षा
रावण पाट से उठाकर:- हा हा हा हा हा हा हा
रावण सीता से :- राधेश्याम प्यारी सीता हो सावधान अब तू मेरे पंजे में है

मैं लंकापति रावण हूं तू रावण के शिकंजे में है
सीता रावण से :- राधेश्याम औ दुष्ट ! खड़ा रह ! खबरदार ! स्वामी अब आने वाले हैं
जो धनुष तोड़ कर लाए हैं वह मेरे रखवाले हैं
अब तक तो मैं उस रेखा में थी अब मैं सब की रेखा में हूं
अबला हूं पर इतना बल है पतिव्रता की रेखा में हूं
तुम क्या संसार अगर आए तो भी बल तोल नहीं सकता
सतवंती के सदके आगे ब्रहमा भी बोल नहीं सकता
रावण सीता से :-हा हा हा हा हा !!!!!!!! अब मालूम हुआ तेरी शक्ल ही शक्ल है वैसे तो आला दर्जे की बेअकल है अरे नादान सोच तो सही इस तरह इन बैंकों के साथ अपनी जिंदगी बर्बाद करेगी हा हा हा हा 14 साल का तो एक बहाना है इन बेचारों का तो अपना जंगलों में ठिकाना है राम तो भटक भटक कर मर जाएगा और रघुवीर तुझे एक दिन रांड कर जाएगा मेरे साथ चलेगी तो रावण की पटरानी कहलाएगी और लंका तेरे पांव में आंखें बिछाए गी
सीता रावण से :- आग लगे तेरी लंका को choollhe में पड़े tu oh रावण क्यों अपनी मौत तलाश रहा है राजा होकर करता है ऐसा कर्म डूब मर औ दुष्ट बेशर्म
रावण सीता से :- क्रोध ओ moohjor bebaak मुट्ठी भर haddiyaan और इतनी तक्रार ,तेरी जुबान बहुत चल रही है और कैंची की तरह चल रही है आखिर तू जंगल की रहने वाली वहसी है तुझे पता नहीं राजा के साथ किस तरह कलाम किया जाता है और किस तरह प्रणाम किया जाता है मैं तुझे अपने साथ ले जाऊंगा और तुम्हें अकल सिखाकर इंसान बनाऊंगा
सीता रावण से :- चला जा !चला जा ! क्यों खोपड़ी खुजला रही है
रावण सीता से :- ऑ बेजुबान क्यों अपनी मौत को बुला रही है पुकार अपने सहायक को हाथ पकड़कर जो मेरे इस जबरदस्त हाथ से छुड़ाए
सीता रावण से :- पुकारने की जरूरत नहीं वह परमेश्वर जो तुझ में और मुझ में व्यापक है वह तो तेरे इस जुर्म को देखता है बल्कि तेरे पापा को भी जानता है

रावण सीता को उठाकर
बहुत अच्छा देखा जाएगा जो तुझे मेरे पंजे से छुड़ाएगा
सीता रावण से :- रो कर हे ईश्वर तेरी दुहाई है एक तरफ गरीब औरत और दूसरी तरफ मशरूम कसाई है
हे प्राणनाथ बचाओ वीर लक्ष्मण तुम ही हो हां क्ष्मण तुम्हारा क्या दोष है मैंने अपनी करनी का फल पा लिया हाय हाय मैंने तुझ बेगुनाह पर दोष लगाए जो कभी सुनने में नहीं आई

रावण सीता को उठाकर पर्दे में

राम लक्ष्मण मिलन

राम लक्ष्मण से :- हैरानी से है भैया लक्ष्मण मैं तुम्हें वहां बैठा कर आया था

लक्ष्मण राम से :- परंतु भैया यहां पर भी तो आपने ही बुलाया था
राम लक्ष्मण से :- किसने और कब
लक्ष्मण राम से :- आपने और अब राम लक्ष्मण से मालूम होता है आप किसी के धोखे में आ गए और सख्त गलती खा गए
लक्ष्मण राम से :- जी भ्राता जी मैंने तो गलती खा सकता हूं और ना ही किसी धोखे में आ सकता हूं मगर होनी को किस तरह टाला जा सकता है आपकी आवाज ने मुझे सहायता के लिए पुकारा भाई लक्ष्मण भाई लक्ष्मण जल्दी आओ और मेरे प्राण बचाओ जिसे सुनकर जानकी जी रोने लगी और वही प्राण होने लगी मुझे भेजने के लिए इसरार किया जब मैंने इनकार किया बदनीयत और दगाबाज ठहराया
राम लक्ष्मण से :- राधेश्याम मारीच बना था माया मृग यह गहरी चाल उसकी थी
मेरे शहर में मरते मरते आवाज विशाल उसी की थी
भैया मैं सोच रहा था खड़ा-खड़ा कुछ तो बीती आश्रम में हैं
कहता है मेरा बाया नेत्र अब नहीं जानकी आश्रम में है
यशवंत सिंह भइया मैंने तुझको अति दफा इतना समझाया मगर अफसोस तुम्हारी समझ में कुछ नहीं आया रोकर दुश्मन मौका पाकर अपना वह चला गया और मुझे ख़ाक में मिला गया
लक्ष्मण राम से :- हे भइया आप पहले करने घबराए पहले पंचवटी की तरफ तो जाएं
राम-लक्ष्मण पंचवटी में दौड़कर आ कर
सीता ओ प्यारी सीता तु कहां पर है सीता सीता सीता
लक्ष्मण राम से उठो भैया इतना बेचैन क्यों हो रहे हो अपनी तबीयत पर तो बड़ा

99.   94
राम लक्ष्मण से :- भैया मेरा इस तत्काल सब खाक में मिल गया जिसम है मगर कलेजा सीने से निकल गया
लक्ष्मण राम से :- हे भइया मुसीबत के समय घबराना अपनी मुसीबत को बढ़ाना है आप इस कदर ना घबराए
भैया देखेंगे भालेंगे अगर आसमान पर चढ़ जाए या पाताल में उतर जाए माता जी को ढूंढ निकालेंगे जो कुछ हो चुका उसके लिए रोना फ़िज़ूल है
राम लक्ष्मण से :- गाना
फिर ऐसे बनो में दुखी तेरे बिना राम सिया
टोह एतैसे ना पाई होगी सवेरे से शाम सिया
तुम बनवासी जीव बता दो इधर गई या उधर बताओ
खोलके सुना दो गई कौन से मकान सिया
फिर से बनो
सीताराम प्रेमी तो है कर कर याद रात दिन से यह
मन में राम मोहे गई कौन से सथान सिया
फिर से बनो दुखी

नाटक

राम लक्ष्मण से :- हाय वही पंचवटी जिसमें जिंदगी बड़ी ऐसो आराम से कटी

अब बिल्कुल नहीं भाती अरे ओ मनहूस पंचवटी तूने ऐसा जुल्म अपनी आंखों से देखा मगर तेरी छाती नहीं फटी अरे ओ जालिम तूने मेरी प्राणों प्यारी को खा लिया या निगल लिया या किसी जगह छुपा लिया
ए सीता की नन्ही फुलवारी के बूटों अरे तुम ही कुछ मुंह से फूटो

राम का गाना यह कुटिया मेरे काम की नहीं

ये कुटिया भैया लक्ष्मण. मेरे काम की नहीं दो..2
किसको सुनाऊं हाल दिल ए बेकरार का बुझता हुआ चिराग हूं अपने मजार का
ऐ काश भूल जाऊ मगर भूलता नहीं
किस धूम से उठा था जनाजा बहार का ये कुटिया ऐ लक्ष्मण मेरे काम की नहीं

अपना पता मिले ना खबर यार की मिले दुश्मन को भी ना ऐसी सजा प्यार की मिले उनको खुदा मिले हैं खुदा की जिन्हें तलाश मुझको तो बस झलक मेरे दिलदार की मिले.....ये कुटिया भाई लक्ष्मण मेरे काम की नहीं

बन खंड में आकर भी कोई सहारा ना रहा जीने का. कोई भी मुझको बहाना ना मिला

क्या पूछूं किस परिवार से क्या समझु इस मजदार को ऐ पर्वत रस्ता दे मुझे ऐ काटों दामन छोड़ दो ये कुटिया अब लक्षण मेरे काम की नहीं

लक्ष्मण राम से :-हे भ्राता जी होश करो आपने दीवानों जैसा हाल क्यों बना रखा है जरा अपनी तबीयत को संभालिए
राम लक्ष्मण से :- गाना वीर अब कैसे धारू धीर
विपद काल में दुख सुख कि साथी रही ना वह भी तीर... बीर अब कैसे धारूं ....

बैठे-बैठे आनअचानक लगा कलेजे तीर
ना घर के ना रहे घाट के यूं ही मरे आखिर
बीर अब कैसे धारू.... ...

क्या जाने वह किसी दरिंदे ने ही दी चीर
मुश्किल है अब उसका मिलना लाख करो तदबीर. बीर अब कैसे धारू... ..

ना दिल में अब रहा सबर हैं ना नैनो में नींर
क्यों रोए अपने कर्मों को रह गए वहीं फकीर
वीर अब कैसे धारूं धीर.......

ईतने तावं दिए गर्दिश में जिनकी नहीं नजीर
मर कर भी यह खाक हमारी बन जाएगी अकसीर.. ..
वीर अब कैसे दारू वीर ......

नाटक

राम लक्ष्मण से :- है प्यारे लक्ष्मण तुम अयोध्या चले जाओ
और राज काज में भरत का हाथ बटाओ मेरा तो इन्हीं जंगलों में ठिकाना है
आखिर यही भटक भटक मर जाना है

हां भैया मैं अयोध्या कैसे जा सकता हूं
और माता जी को कैसे सूरत दिखा सकता हूं क्योंकि उन्होने ने तो पहले ही कह दिया था कि आओ तो इकट्ठे आना अकेला मुह ना दिखाना है भैया जब जनक अपनी पुत्री का हाल पूछेंगे तो मैं क्या बताऊंगा और कौन सा मुंह लेकर उनके सामने जाऊंगा
लक्ष्मण राम से हे भ्राता जी तसल्ली रखिए जिस तरह तीनों इकट्ठे आए थे उसी तरह तीनो इकट्ठे जाएंगे वरना अकेले दुकले हरगिज़ मुझ नहीं दिखाएंगे भैया अब ज्यादा देर नहीं लगाइए और जल्दी खोज की जाए
राम लक्ष्मण से :- ठंडी सांस भर कर ....चलो भ्राता अब तो इस मनहूस जगह की तरफ देखने को दिल नहीं चाहता

Drisay samaapt

सीता रावण जटायु

सीता रावण जटायु पर्दे पर लड़ाई

जटायु रावण से:- महाराज यह काम आप की शान के खिलाफ है
रावण जटायु से :- कौन है जो मुझको टौकता है ,और खामखा मेरा रास्ता रोकता मौया जान बूझकर अपने आप को मौत के मुंह में झौंकता है
जटायु रावण से:- महाराज मौत का सम्मान तो खुद लिए जाते हो और दूसरों को मौत तलब गार बनाया
रावण जटायु से :- लापरवाही से जब तुम्हें इमदाद के लिए बुलाओ तो मत आना
जटायु रावण से:-जाते कहां हो जरा संभलकर कदम उठाना.... सीता को अपनी तरफ करना...
रावण जटायु से :-मुझे रोकने की क्या मजाल है
जटायु रावण से:- बगैर मरे मारे नहीं जाने दूंगा आपका किस तरफ ख्याल है
रावण जटायु से :-अरे मरदूद तेरे सिर पर काज छाई है
जटायु रावण से:-मौत तेरी यहां खींच लाई है
रावण जटायु से :-तेरा इसे क्या तालुक ना समझ में आई है
जटायु रावण से:-राम लक्ष्मण का पिता मेरा धर्म भाई है
रावण जटायु से :-अच्छा हाथ सीता के बदन के ना लगाने दूंगा क्रोध
जटायु रावण से:-जीते जी इस पर आंच नहीं आने दूंगा अहंकार
रावण जटायु से :-एक ही बार मैं तेरी गर्दन उड़ा दूंगा
जटायु रावण से:-ठहर जा तुझे चोरी करने का मजा चखाता हूं
रावण जटायु से :-औ खबरदार हो जा तुझे आदम का रास्ता दिखाता हूं

दोनों की लड़ाई जटायु का घायल हो जाना

जटायु रावण से जमीन पर गिर कर अरे जालिम बुरी तरह घायल किया अफसोस दिल को दिल का अरमान भी न निकलने दिया

रावण का जटायु को तड़पते हुए छोड़ जाना

पर्दे में जटायु पर्दे में राम लक्ष्मण पर्दे पर

राम लक्ष्मण से प्यारे भैया अफसोस की सीता जी का अभी तक पता नहीं चला

पर्दे के अंदर से आवाज जटायु की अरे कोई रामचंद्र तक खबर पहुंचाओ और उनको मेरे पास बुला लाओ

राम लक्ष्मण से जरा सुन ना
भाई यह आवाज किधर से आ रही है

लक्ष्मण राम से ही भ्राता जी ऐसा मालूम होता है
जैसे कोई दर्द की वजह से कराह रहा है

और आपका नाम लेकर पुकार रहा है

राम लक्ष्मण से चलो भैया यहां से सीता जी की खबर मिले

पर्दा खुलना

लक्ष्मण राम से हाय हाय भाई गजब हो गया

यहां

तो महाराज जटायु घायल पड़े हुए हैं

राम जटायु से हे देवता हम तो अपनी किस्मत को रोते थे मगर आप किस जालिम के
हत्थे चढ़ गए

राम जटायु का सिर अपनी जांग पर रख लेते हैं

जटायु राम से राधेश्याम राम एक राक्षस दक्षिण हां राम नाम ले चला था उनको

हां राम ना बोला जाता है हां राम छुड़ाना सका उनको

हां राम लड़ा था उनसे हां मुझे अब मरने दो

हां राम सामने आ जाओ राम यह रुप निखरने दो

राम जटायु से दर्द में हाय इस जगह हमारा एक ही गम खवार था मगर अफसोस वह भी मुश्किल के वक्त साथ छोड़ रहा है हे महाराज आप इस तरह न तरफ है मैं उस जालिम से बदला लेकर छोड़ूंगा

जटायु राम से भगवान मुझे ना बदला लेने की इच्छा है अब तो आखरी सफर की तैयारी है

राम जटायु से अच्छा महात्मन मेरा एक काम कर देना

जटायु राम से क्या काम है भगवान

राम जटायु से राधेश्याम महात्मा भाई यह समाचार कहना ना पिताजी से जा कर

मैं राघव दुष्प्रचार कहेगा कुल सहित आकर कर

अच्छा जाओगे भक्तराज जाओ परमधाम को तुम

जाते जाते इतना सुन लो ऋणी कर चले राम को तुम

जटायु राम से अच्छा भगवान यह ध्यान रहे मेरा दाह संस्कार उस जगह करना जहां किसी का भी ना हुआ हो

राम जटायु से अच्छा भक्तराज तथास्तु ऐसा ही होगा

जटायु का स्वर्ग धाम चले जाना

राम जटायु से हे भक्तराज मुझे ऐसी जगह कहीं नहीं दिख रही है मगर मैं आपका ध्यान संस्कार अपनी हथेली पर करता हूं

जटायु का दृश्य समाप्त

पर्दा गिरना

103 98

शबरी की कुटिया

शबरी श्रद्धा सुमन का गाना मैं तो कर रही रास्ता साफ आज घर राम जी आएंगे
राम शबरी से कहो भक्तों में श्रेष्ठ श्रद्धा शबरी चित हम प्रसन्न है
सबरी राम से आहा आइए महाराज पधारिए बड़े सुकुमार दया के भंडार
लाऊं पहले आसन लगाऊं
103 98
नहीं पहले चरण धुलाऊं
औह भूल गई पहले कुछ खिलाऊं क्या करूं

राम शबरी से घबराओ नहीं देवी हम तो केवल प्रेम के भूखे हैं तुम काहे को चिंता करती हो

सबरी राम से हाथ जोड़कर... क्षमा कीजिए महाराज बड़ी भूल हुई जल्दी में आपके पांव छू लिए आप को स्नान करना पड़ेगा

राम सबरी से क्यों क्या हो गया क्यों सनान करना पड़ेगा मुझे
सबरी राम से भगवन मेरे हाथ लगाने से आप के वस्त्र अशुद्ध हो गए होंगे और मेरी छाया पड़ने से लोग तुरंत नहाते हैं
दोहा कोई मुझ नीच से पल्ला नहीं अपना मिलाता है
मेरा रास्ता रोक कर सारा संसार जाता है
राम शबरी से हे देवी यह उनकी भूल है मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान माना जाता है
दोहा बड़प्पन धन कुटुंब वैभव सकल गुण और चतुराई
यह कुछ नहीं काम आएगा यह भक्ति नहीं पाई...
शबरी राम से भगवान... सबरी राम से भगवान मैं नीच कुजाती कबुद्धि और अज्ञानी हूं मेरे से दूर रहने में संसार का कल्याण है

राम शबरी से ऐसा ना कहो सबरी जो धर्म मूल्य सिद्धांत नहीं जानते हैं वही जाती और भेद भाव मानते हैं जिसके मन में भक्ति और प्रेम का दरिया बहता है वह संसार में किसी को नीच नहीं कहता है

दोहा ..है कोई चंडाल या ऊंचा किसी का वंश है आत्मा सबकी उसी परमात्मा का अंश है

सबरी राम से धन्य है भगवन आज आपने मेरा सारा भ्रम मिटा दिया ज्ञान का महा दरिया बहा दिया

राम शबरी से से इसमें हैरानी की क्या बात है देवी धर्म तो नीच को उचा बनाता है

दोहा नीच है या ऊच है या दुष्ट हत्यारा है वह जिसका प्यारा धर्म है भगवान का प्यारा है वह
सबरी राम से जय हो प्रभो की जय हो संकटमोचन की

राम शबरी से देवी भूख लग रही है यदि कुछ खाने की वस्तु हो तो लाओ

सबरी का इधर उधर भटक खाने की वस्तुओं को खोजना

राम शबरी से नहीं सबरी कुछ संकोच न कर लाओ जो कुछ भी हो तुरंत लाओ

सबरी राम से महाराज मैंने झाड़ी के बैर तोड़ रखे हैं

राम शबरी से .. ला बेर क्यों देर करें .2...
.यह बेर सुधा से बढ़कर हैं
मक्खन मिश्री से भी अच्छे ताकतवर मधुर मनोहर है

सबरी राम से ..लीजिए भगवान

राम शबरी से यह बेर तेरे बड़े निराले हैं भक्ति रस के प्याले हैं

सबरी राम से बेर देकर यह लीजिए महाराज यह बहुत मीठा है

राम शबरी के बेर खाकर सूखे बेर में जो मिला यहा
राज घरों में सवाद कहां

शबरी लक्ष्मण से यह बेर आप भी लीजिए महाराज

लक्ष्मण बेर खा कर.. दोहा महल के भोजन जीनहे भाते न थे सद्भाव से .
आज वे ही खा रहे .बेर सूखे चाव से

राम लक्ष्मण से राधेश्याम लक्ष्मण तुमने खाया ना बेर.2
यह देखो कैसा मीठा है
पृथ्वी से लेकर आकाश तलक जो कुछ है इसमें फीका है

तुमने भी बहुत खिलआए है पर इन से बढ़कर स्वाद नहीं
सीता का परोसा भोजन भी देता इतना स्वाद नहीं

लक्ष्मण राम से भैया अब सीता जी की भी सुधी लीजिए

बेरो का स्वाद छोड़िए और माता जी को बंधन से छुड़ाने की चिंता कीजिए

राम सबरी से भीलनी तू सच्ची भगतणी है भक्तों में नहीं झमेला है

क्या खान-पान की बात यहां भक्ति मार्ग अलबेला है

राम लक्ष्मण से हां हां
लक्ष्मण तुमने ठीक ही कहा अब यहां से चलना चाहिए
सबरी राम से किस और जाना है भगवन जरा सारा वृत्तांत सुनाओ

राम शबरी से राधेश्याम हम दोनों भाई राम लक्ष्मण वनवासी बनकर आए है
सीता को अपने साथ साथ इस दंडक वन में लाए थे
दुर्दिन नें ऐसा कर डाला उस और पिता का मरण हुआ इस और स्वर्ण मृग के कारण
कुटिया से सीता का हरण हुआ
दोहा तू भी है बनवासीनी में बतलादो कुछ राय

कहां जाए किस से कहें क्या हम करें उपाय

सबरी राम से हे भगवन् मैं बावरी क्या बतलाऊं
बतलाऊं राय

पूछ रहे हैं तो आप , तो सुनिए एक उपाय
राधेश्याम आगे है ऋषि मुख पर्वत सुग्रीव वहां पर रहता है

अपने भाई के कारण वह अत्यंत कष्ट नित सहता है

बस वही पधारे महाराज सीता की सुधि मिल जाएगी

जो कली यहां मुरझाई है वह उसी जगह खिल जाएगी

राम शबरी से हे देवी आप ने बड़ी कृपा की मुझे आप जैसे भक्तों पर नाज है

पर्दा बंद होना सबरी का दृश्य समाप्त

105.   100

सुग्रीव और राम की मित्रता

सुग्रीव हनुमान से राधे श्याम हनुमान देखना जा कर दो पुरुष इधर को आते हैं

दोनों ही तपस्वी तेजस्वी हैं नरसिंह समान सुशोभित है
मातम श्राप वंश भरात यद्यपि न यहां आ सकता है
मैं जब तक इस दुनिया में हूं वह चैन नहीं पा सकता है

संभव है उसके गुप्त दूत मेरा यों भेद लगाते हैं
छल से बल से या कौशल से वध करने मुझको आते हैं

इसलिए प्रथम चतुराई से सब पता ठिकाना लेना तुम
फिर हो मेरा संदेह सही तो मुझे इशारा कर देना तुम

हनुमान सुग्रीव से जैसी आज्ञा हो महाराज मैं जाता हूं और सारा भेद निकाल कर लाता हूं
हनुमान राम से राधेश्याम कठिनाई मार्ग है यहां का वन अति गंभीर आप कौन श्रीमान है श्यामल गौर शरीर है
हनुमान का गाना राम से लावणी में

कौन ग्राम क्या नाम देवता कहां से आप पधारे हैं
जाहिर मैं तो हो तपस्वी फिर शास्त्र क्यों धारे हैं

इधर तुम्हारे युवा अवस्था उधर फकीरी बाणा है

कारण वन में फिररने का असली कौन ठिकाना है
ईधर जलाल अजब चेहरे का सूरत शक्ल सुहाना है

इधर हवा दवाइयां उड़ रही मुंह पर इसका भेद ना जाना है
उत्तम कुल और क्षत्रिय गंजेपन के बसव आप में सारे हैं

कौन ग्राम क्या नाम देव का

राम हनुमान से गाना लावणी में

क्या पूछोगे महाराज हम प्रबंध के मारे हैं
कहने को तो हम दोनों दशरथ के राज दुलारे हैं

लेकिन अब तो अरसे से दर पर अजार जमाना है
बेपरवाह बेजार बेघर वेदर ना कोई खास ठिकाना है

तेरे कटते दिन गर्दिश के इसी तरह मर जाना है
जगह-जगह हम फिरे ढूंढते सीता का नहीं मिला ठिकाना है

साथ मेरे यह छोटे भाई लक्ष्मण प्राण प्यारे हैं

क्या पूछो हे महाराज हम प्रारब्ध के मारे

हनुमान राम से गाना

कहो साफ हाल कुंवर जी क्या विपदा तुम पर आई है
हो गया ऐसा क्या कारण घर से निकले दोनों भाई हैं
असल हकीकत वजह उदासी अब तलक नहीं बतलाई है
हो रही हालत क्यों अवतार चेहरे पर जर्दी छाई है

पड़ी मुसीबत क्या तुम पर भारी जो उड़े ओसान तुम्हारे हैं
कौन ग्राम के नाम देवता कहां से आप पधारे हैं

लक्ष्मण हनुमान से राधे श्याम राम पिता की आज्ञा से वन भ्रमण करने आए थे
इस सेवक और सीता जी को अपने संग में लाए थे

फिर से फिर से यूं ही वनों में 9:00 10 साल बिताएं थे

कुछ अरसे से पंचवटी में डेरे आन लगाए थे
सीता को हर ले गया रावण ढूंढ ढूंढ हम हारे है
क्या पूछोगे महाराज

लक्ष्मण हनुमान जी राधेश्याम माता सीता को ढूंढ रहे सुधीर ना अब तक पाई है
धनियों के हैं सब मददगार निर्धन का कौन सहाई है
हम दोनों भाई राम लक्ष्मण अब खेल रहे हैं प्राणो पर
कर देंगे दुष्ट हीन धरती आशा है अपने बाणों पर

107 102

पूछा तो हमने प्रकट किया अन्यथा ना कहना ही अच्छा है
जग में तो सभी स्वार्थी है कोई न किसी की सुनता है

हनुमान राम से श्री महाराज हम वानर है ब्राह्मण शरीर का धोखा है
सुग्रीव यहीं पर रहता है जो हम लोगों का राजा है
जिस पापी दुष्ट ने सिया हरि हम उसका दिया बुझाएंगे
आज्ञा हो तो प्रभु की पालन हम करते जाएंगे

कल अपना पूर्ण लगा देंगे स्वामी का दुख मिटाने पर
बलिदान सुखों का कर देंगे सीता का पता लगाने पर

जो काम आप करने आए हैं उसमें हाथ बटाएंगे
धरती दुष्टों से हीन करें इस प्रण पर प्राण लगाएंगे

हनुमान राम से भगवान आप सुग्रीव के पास तशरीफ ले चले तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी मेरा नाम हनुमान है सुग्रीव किष्किंधा का आजकल निगहबान है
राम हनुमान से हां हां प्यारे हनुमान हमें कब इनकार है
हनुमान राम से चलिए भगवान
दोनों को कंधे पर बैठाकर सुग्रीव के पास ले जाना

सुग्रीव राम से प्रणाम भगवान मेरे अहोभाग्य है जो आप ने दर्शन दिए
हनुमान राम से सुग्रीव की ओर इशारा करके देखिए भगवान यही हमारे स्वामी सुग्रीव किष्किंधा नरेश है जो अपने दुष्ट भाई बाली के हाथों बड़ा कष्ट पा रहे हैं और नगर को छोड़कर इस पर्वत पर जीवन बिता रहे हैं
राम हनुमान से सुग्रीव जी मुझे आपके साथ सच्ची सहानुभूति है
सुग्रीव हनुमान से प्यारे हनुमान मुझे भी तो परिचय कराइए और निवास स्थान भी बताइए
हनुमान सुग्रीव जी महाराज यह दोनों होनहार महाराज अयोध्यापति दशरथ के राजकुमार हैं जो कि आपकी तरह जमाने के हाथों सख्त बेजार है
राम जी की ओर इशारा करके

इनका नाम श्री शुभ रामचंद्र जी हैं
लक्ष्मण की ओर इशारा करके
इनका नाम लक्ष्मण जी पुकारते हैं

108 पेज नंबर पर रामायण के 103 पेज नंबर

सुग्रीव राम से हाथ जोड़कर मेरा सौभाग्य है जो आप का दीदार हो गया और आज विलासक मझधार से पार हो गया

भगवान मुझे आप पूरी कहानी तो सुनाइए

राम सुग्रीव से हे सुग्रीव मेरी सौतेली माता ने पिताजी से दो वचन पूरे करने का इकरार किया था मेरी माता ने उन्हें पूरा करने के लिए मेरे लिए 14 वर्ष का बनवास और मेरे छोटे भाई भारत के लिए राजतिलक का इसरार किया था मैंने उनका हुकुम खुशी से मंजूर किया इधर लक्ष्मण और मेरी पत्नी सीता मेरे साथ आई 13 साल से वनों में भ्रमण कर रहे थे इसी बीच एक दिन दुष्ट रावण हमें धोखा दे गया मेरी तथा लक्ष्मण की गैरहाजिरी में सीता को चुरा ले गया उन की तलाश में मैं और लक्ष्मण आवारा फिर रहे हैं

सुग्रीव आराम से खा महाराज मैं एक दिन इसी पर्वत पर बैठा हुआ था दुर्भाग्य को रो रहा था और इसी पर्वत पर बैठा आंसू बहा रहा था उसी समय एक विमान आकाश में उड़ा जा रहा था
जाने कि जी बड़ा विलाप करती हुई जा रही थी अपने आभूषण को नोच नोचकर गिरा रही थी उनमें से कुछ मैंने भी इकट्ठे कर लिए थे और संभाल कर अपने पास रख लिए थे
राम सुग्रीव से रो कर तो सुग्रीव वह आभूषण हमको भी दिखाओ

सुग्रीव राम लीजिए महाराज इनकी पहचान कीजिए
राम लक्ष्मण से गाना बहरे तबील

भाई लक्ष्मण जनक तू ही पहचान कर
कि यह सीता का गहना भी है या नहीं
देख ले देखभाल ले खूब अच्छी तरह

कभी सीता ने पहना भी है या नहीं

जितने जेवर रत्न और जड़ाऊं जड़े
हार माला बंदी जुगनी व करें कड़े

जो हैं सारे तुम्हारे अगाड़ी पड़े

पेज नंबर 109 रामायण 104

उसके माथे का बैना भी है या नहीं
मुझे देवर यह सुग्रीव ने दिए
और कहां जाता था रावण उसको लिए
ताने सीता ने यहां तक दिए
कि तेरी माता बहन भी है या नहीं

मेरे होश हवास ठिकाने नहीं
इसलिए यह जेवर पहचाने नहीं
अब जोहरी अयोध्या से आने नहीं
कुछ इसका जवाब भी दे तो सही

नाटक

राम लक्ष्मण अरे भैया मैं कैसा पागल हो गया हूं भैया इनका पहचान ना भी मेरे लिए मुश्किल हो गया
है भैया लक्ष्मण तुम ही पहचानो कि यह कुंडल आगे करके सीता जी का कुंडल है या नहीं

लक्ष्मण राम से राधेश्याम
मैंने तो चरण निहारे हैं देखें माता के कान नहीं
मैं तो बिच्छुओं का सेवक हूं कुंडल कि मुझे पहचान नहीं

नाक से खून यह अच्छा है धड़कन है तीर कमान ओ में
यही दिन वह आएगा कुंडल होगा उन कानों में

कुंडल वाली बेदेही का इस भानी हनन करने वाले
अब सावधान होकर सोना आते हैं रण करने वाले

सतवंती सीता की आहे नाचेंगी तेरे प्राणों पर
दक्षिण दिशा को जाने वाले अब मरना हमारे बाणों पर
लक्ष्मण राम से यशवंत सिंह भैया मैं इन जेवरों को नहीं पहचान सकता था अगर गांव की पाजेब हो तो दीजिए जब मैं प्रातः उठकर आता था तो पांवो में आकर शीश झुकाता था और मुझे पांव का जेवर ही नजर आता था

राम लक्ष्मण से पाजेब दिखा कर देखिए भैया इस पाजेब की पहचान कीजिए
लक्ष्मण राम से हां भैया बिलासक सीता जी का गहना है

पेज नंबर 110 रामायण 105

सुग्रीव लक्ष्मण से लक्ष्मण तुम धन्य हो आपकी शर्म लज्जा का क्या कहना है यह भी भाई है जिसने प्रेम भक्ति की मिसाल पैदा कर दिखाई है मेरा वह कमीना भाई जिसने अपनी भाई की स्त्री ही भायी और मुझे जंगलों की खाक छानवाई है

राम सुग्रीव उसे राधेश्याम जब से हम ऋषि मुख पर्वत पर आए तुम को उदास ही पाते हैं
चिंता में डूबा देख हम भी चिंतित हो जाते हैं

छिपकर पहाड़ पर रहने का क्या गुप्त भेद क्या कारण है
हम साथ ही सुख-दुख ओके है क्या चलो तुम्हारा क्या प्रण है

सुग्रीव राम से राधेश्याम मैं जिसके भय से गाय बना वह नाहर सा दुखदाई है
यद्यपि है मेरा भाई पर भाई नहीं कसाई है

छोटी छोटी सी बातों पर रहता सर्वदा तना वह
ले लिया राज पत्नी छीनी अब मेरा काल बना वह

जो भाई कभी चाहता था वध पर अब ततपर रहता है
है आस्तीन का सांप वही जग जिसको भुजावल कहता है
उसके डर से ही ऋषि मुख मैं जान छुपा कर बैठा हूं

आसकता नहीं श्राप बंद है इसलिए यहां पर रहता हूं

इन सात ताड़ के वृक्षों को जो एक बाण से डाएगा
ऋषि ने यह कह रखा है वह विजय बाली पर पाएगा
राम सुग्रीव से राधे श्याम बस अधिक नहीं सुन सकता मैं. अब भुज को दंड तोलती है
मालूम मुझे यह होता है उसके सिर मृत्यु बोलती है

पी चुके सीरणित अपना अब उसका रक्त पिलाएंगे
सब राज पाठ सुग्रीव तुम्हें हम संध्या तक दिलवाएंगे

यशवंत सिंह हे सुग्रीव जो भी वृक्ष मेरे बाण के सामने आएगा सात नहीं सब के सब भीदं जाएंगे तीर छोड़ना
हनुमान राम से भगवन कमाल किया एक ही बाण से सात वृक्षों को उखाड़ दिया

सुग्रीव राम से धन्य हो प्रभु अब मुझे विश्वास हो गया कि आप अवश्य ही बालि को मारेंगे और मेरा कष्ट निवारोगे महाराज उसे ब्रह्मा का वरदान है कि जो उससे युद्ध करने सामने जाएगा उसका आधा बालि में चला जाएगा अच्छा महाराज मैं जाता हूं किंतु याद रखिए आप थोड़ी देर भी लगाएंगे तो मेरे प्राण पखेरु आकाश में उड़ जाएंगे

राम सुग्रीव से नहीं ऐसा नहीं होगा तुम सावधान होकर जाओ

पाली का दरबार मंत्री साथ में पेज नंबर 106 रामायण का डिजिटल का 101 नंबर

18. वानर राज बाली का दरबार.

मंत्री साथ में

बाली मंत्री से मंत्री वर अब तो सुग्रीव कई दिनों से लापता है

मंत्री बाली से:_महाराज उस पर रहम कर दिया जाए तो अच्छा है क्योंकि वह बेखता है

बाली मंत्री से क्रोध में मालूम होता है तुमने उससे कुछ रिश्वत खाई है

मंत्री बाली से नहीं महाराज वह आपका भाई है

सुग्रीव बाली से ललकार कर जरा बाहर आओ भाई आज मै रोज रोज का झगड़ा मिटा दूंगा या तो आपकी जान लूंगा या अपना सिर कटवा लूंगा

बाली सुग्रीव से :- क्रोध मैं जरा ठहर आज मैं तेरी अच्छी तरह से मरम्मत बनाऊंगा

सुग्रीव बाली से क्रोध में जरा मैदान में आओ वहीं बैठे बाते नहीं बनाओ

बाली सुग्रीव से मैदान में आकर मालूम होता है आज फिर तेरी खाल खुजलाई

सुग्रीव बाली से क्रोध में ना मालूम मेरी खॉल खुजला रही है या तुम्हारी मौत तुम्हें बुला रही है

दोनों की लड़ाई सुग्रीव का नीचे आना CHHATI पर रख कर

बता मरदूद कर दो एक के दो

सुग्रीव मन से बोल कर व्यर्थ ही किसी के दम झासों में आकर जान फसाई उस भले मानस ने तो अभी तलक अपनी शक्ल भी नहीं दिखाई ..उठ कर भाग जाना..

बाली सुग्रीव से :- वह बुजदिल कुछ कुछ शर्म आई आखिर भाग कर ही जान बचाई

रामचंद्र के कैंप में सुग्रीव का पहुंचना.. राम लक्ष्मण हनुमान झावंत...

सुग्रीव राम से राधेश्याम सांस भर कर हे राम तेरे कहने से ये झगड़ा मो L लिया मैंने

है काल समान बाली सारा बंल तोल लिया मैंने

आज्ञा पर राम ही तुम्हारी ही मेरे बाजू लड़ते ही रहे

तुम खड़े खड़े तकते ही रहे मुझ पर मुक्के पढ़ते ही रहे

राम सुग्रीव से राधेश्याम मैं सोच रहा था खड़ा-खड़ा दोनो बैर निकलने दु

यह दोनों भाई भाई है मिल जाए तो मिलने दु

इतने पर भी मैं बार-बार धनुष पर बाण चढ़ता था तुम दोनों का रूप एक

इसीलिए धोखा खा रहा था

अच्छा यह हार पहन जाओ जिससे मुझे पहचान रहे
यह तुम पर कवच सम्मान रहे मुझे भी हार का ध्यान रहे

सुग्रीव राम हे भगवान देखना अब भी लापरवाही से काम लिया तो मुझको जान से मार देगा

राम सुग्रीव से नहीं प्यारे सुग्रीव वह मैदान में आते ही अपनी जान गवाएगा और अधिक देर तक जीवित नहीं रह पाएगा ..सुग्रीव का मैदान ए जंग में जाना.. पड़ता बंद..

î ẅ ə बाली और तारा ɕ ẅ î

सुग्रीव बाली को ललकार कर वहां अच्छी बहादुर दिखाई कुछ नया बंद पड़ा तो घर में बैठे जान छुपाई
जरा बाहर आ जाओ भाई

बाली सुग्रीव से अरे ओ सोदाई मालूम होता है तेरी खाल फिर खुजलाई

सुग्रीव बाली से बाहर भी आएगा या वहीं बैठा बातें बनाएगा

बाली सुग्रीव से उठकर और शैतान तू इसी तरह जुबान चलाएगा या अपनी शरारत से बाज आएगा

तारा बाली से पाव पकड़ कर स्वामी जी जरा ठहर जाइए और मेरी विनती सुन लीजिए

बाली तारा से गुस्से में अच्छा तो यही था कि तुम चुप ही रहो वरना जो कहना जल्दी से कहो

तारा बाली से हे प्राणनाथ सुग्रीव आपका भाई जिस माता का आपने दूध पिया है उसी गोद में उसने परवरिश पाई है इसलिए उसका हक उसे दे दो और इस वैर भाव को दिल से निकाल दो
BALI तारा से हा हा हा मैं समझ गया दिल की आग ने तुझे मजबूर कर रखा है और प्यारी रोमा के सऊदी अरब में तेरा सीना चकनाचूर कर रखा है इसलिए यह मसले सुना रही हो

पेज नंबर 113 रामायण 108

तारा Bवाली से हे प्राणनाथ आपके चरणों की सौगंध खाती हूं और आपको विश्वास दिलाती हूं कि आज लड़ाई आपके लिए खतरनाक है अभी मुझे अंगद ने बताया है कि अयोध्या के दो राजकुमारों को अपना मित्र बनाया है हे स्वामी इतनी मार खाकर सुग्रीव दोबारा लड़ाई में आया है यह तो आप अच्छी तरह से सोच सकते हैं

पाली तारा से क्रोध में बस बस ओ बेवकूफ अधिक बक बक न लगा और मेरे आगे

से हट जा

ना मैं उन से डरता हूं ना किसी मददगार का खौफ खाता हूं औ जालिम तो मुझे कायर बनाना चाहती है और मुझे घर में छुपाना चाहती है उन छोकरों की मेरे सामने क्या औकात है

तारा वाली से गाना बहरे तबील

मैं हूं दासी तुम्हारी ए प्राण पति
जो सजा दो खुशी से गवारा करूं
मान लो विनती मेरी इतनी मगर
आपसे अर्ज ये मैं दोबारा करूं

आप रोमा से बेसक मोहब्बत करो
मैं यूं ही बैठी घर में गुजारा करूं
आपके दर्शनों की तलब गार हूं
और सब झंझटों से किनारा करुं

रंडी बनकर रहना मुझे मंजूर है
काम घर में तुम्हारे संवारा करूं
हाथ जोड़ूं कहा मान लो मेरा

जो कहो मैं कहा तुम्हारा करूं
तुम मेरा दामन छोड़ दो
तारा बाली से ईश्वर के वास्ते इस जिद को छोड़ दो
बाली तारा से तुम्हारे कहने से मैं अपने आपको बट्टा नहीं लगा सकता

तारा बाली से स्वामी जी मान जाओ गया वक्त फिर हाथ नहीं आ सकता

सुग्रीव बाली से ललकार कर घर में बैठा बातें बनाएगा या फिर बाहर भी आएगा

पेज नंबर 114 रामायण 109

बाली तारा से हाथ छुड़ाकर छोड़ छोड़ सुनती नहीं वह किस तरह ललकार रहा है

बाली का बाहर जाना

तारा वाली से औंधे मुंह गिरकर प्राणनाथ अब उसे और कोई उभार रहा है

पर्दा गिरना

बाली और सुग्रीव युद्ध

बाली सुग्रीव से आ रे बेशर्म उस वक्त भाग कर जान बचाई अब दुबारा लड़ाई में आया है तुझे शर्म नहीं आई

सुग्रीव बाली से मुझे मेरा हक दे दो
बात गई आई ना झगडा न लड़ाई
बाली सुग्रीव से शिवाय आवारागर्दी के कोई हक नहीं
सुग्रीव बाली से तो आज तुम्हारी मौत में भी कोई शक नहीं
बाली सुग्रीव से अरे ओ बुजदिल होशियार हो जा

सुग्रीव बाली से ओ संगदिल तू भी मरने के लिए तैयार हो जा

दोनों की लड़ाई बाली का सुग्रीव पर बैठ जाना राम का तीर से मारना

बाली राम से दुख में अरे यह कौन अन्यायी जिसने छिपकर चोट पहुंचाई
राम वाली से किसी का क्या दोष है तुम्हारी करनी तुम्हारे आगे आई
बाली राम से राधेश्याम होकर सुग्रीव के प्यारे तुमने ही उसे उभारा है

इन वृक्षों के पीछे छुप कर क्या मुझे तुम ही ने मारा है
सचमुच मेरा भाग्य जागा घर बैठे जगवंदन आए हैं
भाई के कारण मैंने भी समदर्शी के दर्शन पाए हैं

बैरी का छल वध करना है सूरवीर का कर्म नहीं
छुप कर जो मेरे प्राण लिए यह रघुवंशी का धर्म नहीं

राम बाली से राधेश्याम तूने वर ऐसा मांगा था सामने ने मारा जाएगा
सम्मुख लड़ने वाले का बल तुझ में खींचकर आ जाएगा
वरदान किसी का नष्ट न करें ऐसा ना स्वभाव हमारा है
बस इन्ही विचारों से हमने यह बाण आड़ से मारा है

बाली राम से राधेश्याम सुग्रीव हमारा भाई है भाई भाई हैं हम दोनों
प्रभु की नजरों में चाहिए एक ही सम दोनों

पेज नंबर 115 रामायण 110

सुग्रीव मित्र बाली शत्रु यह कैसा न्याय विलक्षण है
रघुकुल के नायक उत्तर दें वध करने का क्या कारण है

राम वाली से राधेश्याम

कन्या बहन सुत की पत्नी या छोटे भाई की नारी है
जो इन्हें कुदृष्टि से देखता है वह वध के योग्य दुराचारी है

सुग्रीव भाई की पत्नी को तूने अपने घर में डाला है
इस कारण बाण मारकर तुम्हें समाप्त कर डाला है

जो मेरी बिछड़ी सीता को प्रण करें मिलाने का
क्या मैं कुछ भी न प्रयत्न करूं उसकी तकलीफ मिटाने का

बाली राम से राधेश्याम निर्बल सुकंवर में यह आशा वह सीता सुधी से काम करें
गीदड़ में शक्ति कहां है यह जो शूरवीरों से संग्राम करें

हां प्रभु मुझसे पहले मिलते तो मैं अवश्य दिखला देता

अग्नि की साक्षी फिर होती सीता से प्रथम मिला देता

मैं उसे खूब जानता हूं जो उसे चुरा कर भागा है
मैंने उस तुच्छ अनाड़ी को छह मास काख में दाबा है

अच्छा जो बीती बीत गई अब बकने से क्या होता है
अब तो मुझ सा भाग जगा यह बाली सदा को सोता है

राम वाली से राधेश्याम अब तक नहीं जानते थे हम तो ऐसा है तू इतना है
अब बातें कुछ हो जाने पर समझे है तू कितना है

जो कुछ इच्छा हो मांगो वाली बतलाओ तुम को क्या वर दे
यदि मरना नहीं चाहते हो तो तुझे अभी जिंदा कर दें

बाली राम से अच्छा भगवान जो कुछ हो गुजरा अब उसका क्या अफसोस है
मुझे पर लेने की कोई जरुरत नहीं अब आप सम्मुख है मुझे कीसी चीज की जरूरत नहीं
अब मुझे हर तरह से संतोष है सामने देख कर मेरी प्राणपTNI तारा आ रही है और अंगद को भी ला रही है बेहोश हो जाना

तारा बाली से होकर आए प्राणनाथ तुम कौन सी नींद में सो गए

तारा बाली से गाना मेरे स्वामी सिर के ताज मुख से बोलो तो सही

पेज नंबर 116 रामायण 111

जिसके बल से कांपते धरती और आकाश

पढ़ा धरण पर ले रहा लंबे सांस

मुख से बोलो

छोड़ मुझे मझधार में सो रहे लंबे तान
जिसका मुझे खौफ था वही हुआ आखिर
क्यों होती यह दुर्दशा जो लेते कहना मान

मुख से बोलो जय श्रीराम जय श्रीराम

जिसका मुझे ख़ौफ़ था वही हुआ आखिर
अंगद मेरे लाल की कौन बंधाऐ धीर

मुख से बोलो राम राम राम जय श्री राम जय श्री राम

क्या बिगड़ा सुग्रीव का फूटे मेरे भाग

एक एक आन की आन में हो गया नष्ट सुहाग

मुख से बोलो जय श्री राम जय जय श्री राम

कहना मेरा माना नहीं बहुत मचाया शोर

होनी तो अपने बल चली चला न किसी का जोर

मुख से बोलो जय श्री राम जय जय श्री राम

नाटक

तारा बाली से हाय मेरे सरदार हां हे मेरे प्राणों के आधार आप क्यों मुझ से क्यों मुझ से मुंह मोड़ जाते हो मुझे अपनी जिंदगी की परवाह नहीं जिस तरह हो सका निभाऊंगी नहीं तो आपके साथ स्वर्ग की राह लूंगी

राम तारा से हे देवी यह दुख तेरे लिए बढ़ा सख्त है ऐसा कौन है जिसने तुझ पर तरस ना आता हो हे देवी अब तो सब्र करने में ही भलाई है अंगद तथा आपकी इसी में धनाई है बाली के साथ बस आपका इतना ही संबंध था

और आराम से क्रोध में तू अपने आप में धर्मात्मा जरुर है मगर मेरी आंखों से थोड़ी दूर रहो अरे बेरहम अन्याई तुझको बिना कसूर हत्या करते गैरत नहीं आई

बाली तारा से आंखें खोलकर और प्यारी तारा तुमने समझाने में बहुत मगज मारी अफसोस मैंने तेरी नसीहत का कोई फायदा नहीं उठाया जिसका यह नतीजा सामने आया औह प्यारी तारा सब्र करो भगवान पर तो तुम्हारा फिजूल गिला है

बाली सुग्रीव से मेरे प्यारे भाई तुम को मुंह दिखाने का मन नहीं चाहता मगर तेरे सिवा मुझे और कोई नजर नहीं आता जिसको अंगद का हाथ पकड़ाऊं मुझे उम्मीद है कि तुम दिल से बैर भाव निकालकर मेरी दुश्मनी का अंगद पर बोझ नहीं डालोगे यह जैसा बेटा मेरा है वैसा ही आपका है यह राक्षसों की लड़ाई मैं वहां हाथ

दिखाएगा जिससे छठी का दूध याद आ जाएगा

पेज नंबर 117 रामायण 112

सुग्रीव बाली से रोककर भैया मैंने बड़ा उत्पाद किया जो 4 दिन की जिंदगी के लिए भाई का घात किया

भाई मैं इस राज को लेकर क्या सुख पाऊंगा और परमेश्वर को क्या मुंह दिखाऊंगा भैया यह काम आप अंगद के सुपुर्द कर दीजिए और मुझे साथ चलने की आज्ञा दीजिए

बाली सुग्रीव से भैया जरा तबीयत को संभालिए ऐसे कायरपन की बातें मुंह से न निकालिए यदि ऐसे कायरपन दिखाएंगे तो राम जी का वायदा कैसे निभाएंगे प्यारे भाई मेरी घड़ी बहुत नजदीक आ रही है और सिरहाने खड़ी मौत मुझे बुला रही है इसलिए मेरे अंतिम संस्कार की तैयारी करो हिचकी लेकर हे प्रभु मुझ पापी का कल्याण करो

अंगद बाली से रोक कर हाय पिताजी आप किसके सहारे छोड़ गए और हम से क्यों मुंह मोड़ गए

तारा BAली से हे प्राणनाथ मुझे भी साथ ले चलो

तारा का रोना
राम तारा से हे देवी अब सब्र करो अब तुम्हारा फिजूल रोना है अब तो बाली को जिंदा नहीं होना है जैसा बाली ने कर्म किया वैसा ही भोग लिया है

तारा और बाली का दृश्य समाप्त

सुग्रीव को राज तिलक

पंपापुर

राम लक्ष्मण से भाई लक्ष्मण अब किष्किंधा नगरी का राज्य राजा के बिना सूना पड़ा है
इसलिए तुम जाकर सुग्रीव को किष्किंधा का ताज पहनाऔ

हनुमान राम से जी महाराज राज्यभिषेक का कार्य आपके हाथों से होना चाहिए वानर जाति की यही इच्छा है

राम हनुमान से हनुमान जी मैं पिता की आज्ञा और अपनी प्रतिज्ञा के कारण 14 वर्ष से पहले नगरी में प्रवेश नहीं कर सकता इसलिए तुम लक्ष्मण जी को भी साथ ले जाओ और सारा कार्य विधि पूर्वक करवाओ

सुग्रीव राम से भगवन पहले जानकी जी का पता लगाना चाहिए यह काम तो बाद में भी होते रहेंगे

राम सुग्रीव से नहीं सुग्रीव जी ऐसे शुभ कार्य में विलंब नहीं करना चाहिए इसके अलावा अब वर्षा ऋतु शुरू होने वाली है इस ऋतु में जानकी जी की खोज करना भी मुश्किल है

हनुमान राम से धन्य है दयालु भगवान आपकी उदारता धन्य है
दोहा
दे दिया प्रेमी को सब कुछ पास रखा कुछ नहीं
भक्ति की चिंता है केवल अपनी चिंता कुछ नहीं

राम लक्ष्मण से भैया लक्ष्मण तुम जल्दी जाओ
और अधिक देर न लगाओ क्योंकि किष्किंधा का सिहासन बिल्कुल खाली पड़ा है

लक्ष्मण राम से जैसी आज्ञा हो भ्राता जी

लक्ष्मण का पर्दे के अंदर चला जाना

सुग्रीव को राज देना

अंगद लक्ष्मण सुग्रीव हनुमान बोलो सुग्रीव महाराज की जय हो

राम लक्ष्मण से राधेश्याम हे लक्ष्मण वर्षा ऋतु बीत गई अब शुद्ध शरद ऋतु आई है

मैं बड़ा अभागा हूं अब तक न सुधि सीता की पाई है
कपि पति का मुझे भरोसा था वह भी तो मुझसे दूर हुआ
माया की महा तरंगों में वचनों का बेड़ा चूर हुआ

भाई है सच्ची बात यही पदवी सब कुछ कर सकती है

सुग्रीव नहीं दोस्ती उसने यह सब दौलत की खूबी है

जब तक मनुष्य कंगाल रहे तब तक उत्पात नहीं करता है

जब वही धनी हो जाता है मुंह से बात नहीं करता है

लक्ष्मण राम से राधेश्याम

भैया तुम आराम करो मैं पंपापुर में जाता हूं
धन मदवाले मतवाले को अभी बांध कर लाता हूं

भरपुर उसे शिक्षा दूंगा जो झूठा बनकर बैठा है
सब गरब मिटाऊंगा उसका जो राजा बनकर बैठा है

अग्निबाण चढ़ाकर धन्य हो प्रभु परंतु आज्ञा हो तो पहले उस कपटी मित्र को ठिकाने लगाऊं
जिसने आज तक मुंह तक नहीं दिखाया
वचन देकर भी जानकी जी का पता नहीं लगाया
मैं पंपापुर को एक बाण से समुद्र में फेंक डालूंगा

राम लक्ष्मण से भैया ऐसा कदापि नहीं होना चाहिए जिसे एक बार मित्र बना लिया उसे कभी नहीं खोना चाहिए

लक्ष्मण राम से गुस्से से परंतु भगवान नीच लोग गर्मी से नहीं माना करते लातों के भूत बातों से नहीं माना करते

राम लक्ष्मण से अच्छा तो भैया तुम चले जाओ आदर सहित सुग्रीव को ले आओ

लक्ष्मण राम से जैसी आज्ञा हो भ्राता जी

लक्ष्मण का चले जाना

सुग्रीव अंगद नल नील तारा हनुमान की वार्ता

हनुमान सुग्रीव से महाराज वर्षा ऋतु बीत गई किंतु जो आपने वादा किया था वह भी याद है

सुग्रीव हनुमान से भूल गया बड़ा अपराध हुआ इस विषय भोग ने मेरा सारा ज्ञान हर

लिया

हनुमान सुग्रीव से अनर्थ हो गया लक्ष्मण जी महा क्रोध में किष्किंधा पधार रहे हैं

सुग्रीव मन में औ देव अब क्या होगा आज मेरी रक्षा किस तरह होगी

हनुमान सुग्रीव से महाराज अब समय नष्ट न करें उन्हें शांत करने का उपाय किया जाए

पेज नंबर 119 रामायण 114

सुग्रीव हनुमान से अच्छा प्यारे हनुमान तुमसे घर चले जाओ और विनय याचना के साथ उन्हें यहां बुला लाओ

हनुमान सुग्रीव से जैसी आज्ञा हो महाराज

पर्दा गिरना हनुमान का जाना

हनुमान लक्ष्मण से प्रणाम महाराज

लक्ष्मण हनुमान से खुश रहो प्यारे हनुमान

हनुमान लक्ष्मण से महाराज चलकर दरबार सुशोभित कीजिए

लक्ष्मण हनुमान से सुग्रीव जी के दरबार में पधारने के लिए तो यहां आया हूं चलो

पर्दा खोल ना

सुग्रीव अंगत जामवंत बैठे हैं सुग्रीव के पास लक्ष्मण का पहुंचना

सुग्रीव लक्ष्मण के पांव गिर कर क्षमा कीजिए महाराज मुझसे अपराध हुआ
लक्ष्मण सुग्रीव से क्रोध में हे शुक्रिया तुमने मित्र बनकर हमें धोखा दिया है
जानते हो विश्वासघात का क्या फल होता है

सुग्रीव लक्ष्मण से राधेश्याम

माया के चक्कर में पड़कर मेरी दुर्दशा हो गई
मैं हुआ हूं पागल सा गति मति संपूर्ण खो गई

नारी पर जो मोहित ना हुआ दुर्लभ है ऐसा नर जग में
बच गया लोभ फांसी से जो है वही तस्वीर जग में

लक्ष्मण सुग्रीव से अच्छा तो चलो तुम हे भगवान बुलाते हैं

सुग्रीव लक्ष्मण से चलिए लक्ष्मण जी

राम का आश्रम

सुग्रीव राम से राधेश्याम
रघुवीर बाण भी रखा है अपराधी भी चरणों में है
चाहे मारवाड़ी आसमां करो निर्णय प्रभु के हाथों में है

राम सुग्रीव से राधेश्याम अब मत रोओ अब मत रुलाओ मेरे तो परम सखा हो तुम
मुझ रोगी की औषध हो तुम मुझ विरह की आशा हो तुम

जिस का सच्चा प्यारा हूं वह उसे प्राण सा होता है

दर्शन चाहे वर्षों में हो अनुराग कम नहीं होता है

पिछली बातों को जाने दो आगे का ध्यान धरो भाई

पेज नंबर 120 रामायण 115

सीता जी जिस से पता लगे वह काम करो भाई

हनुमान सुग्रीव से महाराज बहुत से वानर रीछ तशरीफ ला रहे हैं

राम हनुमान से कूंच करने से पहले इत्मीनान कर लिया जाए तो अच्छा है

सुग्रीव हनुमान से हे प्यारे हनुमान दूसरी दिशाओं में तो और दूध भेज दीजिए मगर लंका के लिए खास तुम्हें तैनात करता हूं अंगद तथा जामवंत को तुम्हारे साथ करता हूं क्योंकि तुम होशियार हो और लंका के गली कूचों से वाकिफ हो

राम सुग्रीव से हे शुक्रिया आपने मेरे मुंह की बात छीन ली है
बेशक हनुमान जी इस कदर तकलीफ करें तो हमारी कामयाबी यकीनन ही है

हनुमान राम से हाथ जोड़कर भगवन जिसे आप तकलीफ कह रहे हैं
वह मेरे लिए बिल्कुल आसान काम है
फिर भी हे भगवन माता सीता मुझे कैसे पहचानेंगी और मेरी बात का कैसे यकीन मानेंगी
इसलिए आप इतनी मेहरबानी कीजिए और मुझे कोई अपनी खास निशानी दीजिए
जिस कि उन्हें पहचान हो
ताकि मेरी तरफ से उन्हें पूरा इत्मीनान हो

राम हनुमान से गाना बहरे तबील

हे पवनसुत दिलावर हनुमान जी
आप इमदाद इतनी हमारी करें
लीजिए यह अंगूठी निशानी मेरी
आप जल्दी चलने की तैयारी करें

लीजिए साथ सामान अपना सभी
और कब्जे में खंजर कटारी करें
सीधे लंका में जाना जरूरी नहीं
बस यही से तलाश आप जारी करें

जानकी जी को कहना मेरी ओर से
की हरगिज़ न वह आहो कार करें
अब मुसीबत का होने को है खात्मा
चार दिनों तक जरा इंतजार करें

हनुमान राम से बहरे तबील साथ मेरे है आशीर्वाद आपका

पेज नंबर 121 रामायण 116

तो मैं लंका को जड़ से हिला कर हटूं
झुलस दूं फूंक दूं आन की आन में
खाक मिट्टी में उसकी मिलाकर हटु

जो हुक्म हो तो रावण के कुनबे सहित
मैं लगा आग जिंदा जलाकर हटु
जो कहो तो पकड़ कर लाऊं जिंदा यहां
या उसकी वहीं पर खुला कर हटुं

छान मारूंगा आकाश पाताल तक
सारी तदबीर अपनी चलाकर हटुं
जान में जान है जब तक यशवंत सिंह
मैं पता जानकी जी का लगा कर हटु

राम हनुमान से राधेश्याम सब प्रकार उसकी कुशल पूछ फिर मेरी दुआ झुका देना
निज दल बल का परिचय देकर धीरज भी उसे बंधा दे ना

उसकी मणि मुंदरी है यह बजरंग उसे देते आना
मेरे लिए भी निशानी लौटते समय लेते आना

हनुमान राम से पांव में गिरकर भगवन आप कुछ फिक्र न करें मुझे आप आशीर्वाद देकर कृतार्थ करें

अंगद जामवंत हनुमान तीनों का बारी-बारी प्रणाम करना

राम सभी से गाना

जाओ वीरो रणधीरो सीता जी की खोजन को
कोई पूरब कोई पश्चिम कोई उत्तर कोई दक्षिण को
काम राम का नाम ग्राम का नाम जाति का राखन को

जाओ वीरो रणधीरो सीता जी की खोजन को

इधर-उधर को जिधर जिधर को पहाड़ी बस्ती कानन को
तन मन धन से प्राण वचन से प्रभु की आज्ञा पालन को
जाओ वीरो रणधीरो सीता जी की खोजन को

दृश्य समाप्त

राम लक्ष्मण सुग्रीव पर्दे मे

सागर तट

अंगद जामवंत से आहा वन नंदी पर्वत और गुफाओं में बहुत जगह ढूंढा
परंतु कहीं भी माता सीता का पता नहीं लगा अब कौन मुंह लेकर लौट कर जाए
इससे तो अच्छा है हम अपने प्राण यहीं पर त्याग दें

पेज नंबर 122 रामायण 117

जामवंत अंगद से ठीक है सुग्रीव ने जो समय दिया था वह समाप्त होने को आया है
परंतु जानकी जी का कहीं पता नहीं लग पाया है

पर्दा खुलना संपाती का बोलना

संपाती सभी से राधेश्याम वर्षों से भूखा प्यासा हूं भर पेट न भोजन खाया है
विधना ने आज अनुग्रह कर सब एक साथ भिजवाया है
दो चार नीमिश में ही आकर दस बीस ग्रास कर जाता हूं
भागो मत बैठे रहो वही तुम सबको मैं आकर खाता हूं

जामवंत हनुमान से प्यारे हनुमान जी सुनो कश्यप ऋषि जी की विनता नामक स्त्री
के दो पुत्र उत्पन्न हुए थे
एक अरुण दूसरा गरुड़
फिर अरुण के दो पुत्र हुए थे एक संपाती दूसरा जटायु

एक दिन वह दोनों भाई सूर्य को पकड़ने के लिए उसकी ओर उड़े बड़ी देर तक
उड़ने पर
सूर्य की गर्मी से घबराकर जटायु तो लौट आया
किंतु संपत्ति उड़ता ही गया. अंत में संपाती के पंख जल गए

और संपाती मूर्छित होकर महेंद्र गिरी पर्वत पर आ गिरा
उस पर्वत पर चंद्र ऋषि तप करते थे
संपाती ने उनकी सेवा की फिर चंद्र ऋषि ने उन्हें वरदान दिया
कि जानकी जी की खोज करते हुए जब वानर इधर पहुंचेंगे
तो तेरे पंख निकल आएंगे उसी समय से यह पंख बिना पड़ा है
और अपना जीवन बिता रहा है

हनुमान मन से धन्य है जटायु महाराज तुम अन्य हो तुम ने रामचंद्र जी की सेवा में अपने प्राण लगा दिए

संपाती हनुमान से हे वानरों क्या कहा जटायु ने प्राण गवा दिए सारा हाल सुनाओ

हनुमान संपत्ति से राधेश्याम
कौशल की रानी सीता का जब दंडक वन में हरण हुआ
तब उन्हीं दिनों उपकार हेतु वह गिद्धराज हरि शरण हुआ

जिस ने सीता का हरण किया उसने ही उसे मारा है
दंडक वन का वही डाकू हे भाई शत्रु तुम्हारा है

हम सब तलाश में हैं उसकी तुम भी उसे तलाश करो

भाई का बदला लेना हो तो उस बैरी का नाश करो

संपाती वानरों से राधेश्याम

करता है राज्य वहां रावण वही सीता का हरता है

अपने अशोक बाग में उसने उस महा शक्ति को रखा है

पेज नंबर 123 रामायण 118

सौ योजन सिंधु लांग कर जो बलवीर वहां पर जाएगा

वह ही सीता सुधि लाएगा वही यह यश कमाएगा

अंगद हनुमान से

युवराज कहाकर मौन रहूं तो मुझ पर लांछन आता है

जिस कारण सिंधु लांगने को यह अंगद बालक जाता है
उस पार पहुंच ही जाऊंगा यह तो मेरा दृढ़ निश्चय है
लेकिन इस पर लौटने में थोड़ा सा मुझ को संशय है

लांघूंगा सिंधु इधर से तो जगदंबा सन्मुख आएगी
वे अपना बल देकर मुझे लंका नगरी पहुंचाएंगे

पर सुधि लेकर जब लौटूंगा तो पीठ उधर हो जाएगी
मेरी वह महा शक्ति पूजा उस समय न कुछ कर पाएगी

जामवंत अंगद से राधेश्याम हम तुम सब लोग अधूरे हैं पूरा वह राम दुलारा है

बाजी उसके ही हाथों दो वही मल्लाह हमारा है

अंगद हनुमान से राधेश्याम हे पवनपुत्र अंजनी लाल अपनी तंद्रा को त्यागो तुम
संपूर्ण शक्ति के साथ साथ हे राम दुलारे जागो तुम

हे कामरूप हे शंकर रूप बजरंगी नाम तुम्हारा है
अपने जीवन को याद करो यह जंगी काम तुम्हारा है

सूरज को तुमने ग्रास किया शैलों को तुमने तोड़ा है
जिस बल से ऐसे काम किए वह बल कहा-अब छोड़ा है
रणधीर उठो बलबीर उठो अब लाज तुम्हारे हाथों है
हे कृपा धाम के कृपा पात्र यह काज तुम्हारे हाथों है

हनुमान अंगद से क्रोध में औ अंगद क्या कहते हो जा कर बादल पर गरजू मैं
पहले लंकेश्वर को मारुं या लंका उल्टी कर दूं मैं

खारे जल की धारा को लांघूं या अभी लील हो जाऊं
जिस जगह लंकापुरी है वह गिरि कुट ही ले आऊं

पेज नंबर 124 रामायण 119

सौगंध पूर्वक कहता हूं..
जो कहता हूं दिखलाऊंगा
अपनी माता सीता को
अब राघव से अभी मिलवाऊंगा

अंगद हनुमान जी राधेश्याम तुम केवल लंका में जाकर
माता का पता लगा आओ
आवश्यक समझो तो कुछ बोल रावण को भी दिखला आओ
हम यही मिलेंगे वीर तुम्हें अतिशीघ्र कार्य यह कर आओ
शुभाशीष साथ तुम्हारे हैं हे बजरंग बली जाओ जाओ

हनुमान जामवंत से राधेश्याम मैं जब तक लोट नहीं आऊं तब तलक यही ठहरे रहना
श्री राम नाम का कीर्तन कर आशीष मुझे देते रहना

बोलो श्री रामचंद्र की जय

लंका का दृश्य

लंकिनी पहरे पर

लंकिनी हनुमान से अरे ओ निडर वानर ऐसा निर्भय.
होकर कहां जाता है

क्या तुझे ज्ञात नहीं तेरे सामने   काल बैठा है

दोहा :-जाता है किस ठौर बता क्या मौत तेरी यहां लाई है
खौफ नहीं तुझको मेरा क्या जी मैं तेरे समाई है

नाम लंकिनी है मे यहा लंका का पहरा देती हूं
जो लंका में वानर आता है भेट में उसकी लेती हू

आकर तूने संकट में क्यों अपनी जान फसाई है
पाव बढ़ाया आगे को क्यों मरता बिन आई है

हनुमान लंकिनी से राधेश्याम क्या बोली दुष्ट चंडालिनी
सामत तेरी आई है

हनुमान को नहीं जानती इतनी राड़ बढाई है
राह खड़ी जो रोक रही क्या मरना ही चाहती है
देख गदा हमारी क्यों इतनी इतराई है

लंकिनी हनुमान से गरज कर अरे मूर्ख ठहर मैं अभी
आती हूं और दांतो से चबाकर तेरा चूर्ण बनाती हूं

लंकिनी का मुंह फाड़ कर हनुमान की ओर आना

हनुमान का गुसा मारना लंकिनी का गिरना

पेज नंबर 125 रामायण 120

लंकिनी हनुमान से महाराज तुम भगवान राम जी के दूत तो नहीं
हनुमान लंकिनी से हां हां मैं ही उनका दूत हूं अब रास्ता छोड़ कर प्राण बचाती है या परलोक जाना चाहती है

लंकिनी हनुमान से हाथ जोड़कर बस बस महाराज अब दूसरा घुसा मत मारना नहीं तो मेरे प्राण पखेरु उड़ जाएंगे
हां मुझे ब्रह्मा जी का वरदान याद आया जो उन्होंने रावण को वरदान देकर लौटते समय मुझे कहा था

जब तू एक वानर के घुसे की मार खाकर ढेर हो जाएगी तभी से राक्षसों की आखरी घड़ी आएगी

हनुमान लंकनी से अच्छा यही बात है तो मार्ग से हट जा रास्ते में रोड़ा न अटका
लंकिनी हनुमान से राधेश्याम हे महावीर है महावीर रघुवर का तुझ पर हाथ रहे

जा बेखट के अब लंका में जय और विजय साथ रहे

लंकिनी का दृश्य समाप्त

पर्दा गिरना
हनुमान पर्दे से बाहर

हनुमान अपने मन में सभी बाग-बगीचे छान मारे
परंतु जानकी जी का पता नहीं मिला

हे विधाता यह किस महात्मा का मकान है कौन ऐसा भक्त है जो आधी रात के समय
भगवान का नाम ले रहा है बस तो अब इसी और जाता हूं शायद यही से जानकी जी का कोई सुराग मिले

भक्त विभीषण का भवन

हनुमान विभीषण से राधेश्याम हे विप्र आपको देख यह हृदय आप ही खींचाआता है
है निश्चय यहा भक्त कोई यह मुझे दिखाई पड़ता है
विभीषण हनुमान से राधेश्याम ब्रड़ भागी करने आए हो क्या मुझ मूढ़ निशाचर को

हे महाराज श्री चरणों से करिए पवित्र मेरे घर को

हनुमान विभीषण से राधेश्याम अचरज है कागों के दल में यह हंस रूप दर्शन कैसा
कांटो से घीरे करीलों में फूल गुलाब का चंदन कैसा

पेज नंबर 126 रामायण 121

असुरों में कैसे भक्त राज तुम जीवन यापन करते हो

रावण की सेवा में रहकर श्री राम भजन तुम करते हो
विभीषण हनुमान से राधेश्याम जैसे जुबान रहती है 32 नुकीले दांतो में रहता है दास विभीषण भी उसी प्रकार राक्षसों में

प्यारे भक्त आप कौन हैं और किस तरह लंका में तशरीफ लाए हैं सारा हाल सुनाओ

हनुमान विभीषण से राधे श्याम प्यारे विभीषण मैं
किसकिंधा का हनुमान हूं वानर हूं
माता सीता की सुधि लेने आया हूं श्री रामचंद्र का सेवक
हूं

विभीषण हनुमान से क्या मुझ अनाथ निशाचर के भी रघु
वर बनेंगे नाथ कभी
क्या मुझसे अधर्म दास को भी रखेंगे राघव साथ कभी

सीता की सुधि पीछे लेना पहले मेरी सुधी ले लो भाई
जिन चरणों में रह रहे आप मुझको भी पहुंचा दो भाई

हनुमान विभीषण से राधे श्याम प्यारे भगवन दयानिधि है
अपने को नित अपनाते हैं
जो जन उनकी शरणागत हो छाती से उसे लगाते हैं

उनसे मिलने की राह यही विश्वासी हो जाओ भैया
अपना सब अर्पण कर उनके ही हो जाओ भैया
हो सकता है वह दिन आए जब भाग्य इस तरह चमका है
सिर पर राम विभीषण के चरणों में सारी लंका है

विभीषण हनुमान से राधेश्याम अच्छा अब जिस कारण
आए हो उस सेवा में जाओ भाई

है माता अशोक वाटिका में सुधि उनकी ले आओ भाई

वे माता है तुम भ्राता हो दोनों का तुच्छ दास हूं मैं
निर्भय होकर विचरो लंकापुर में छाया की तरह पास हूं मैं

प्रणाम भ्राता जी
हनुमान का चले जाना

पर्दा गिरना विभीषण का दृश्य समाप्त

अशोक वाटिका

पहरेदार हनुमान से ललकार कर खबरदार इस तरह मुंह उठाए कहां जाता है क्या तुझे अपनी जान प्यारी नहीं
हनुमान पहरेदार से भाई जिस काम के लिए आया हूं उसके सामने जान कोई चीज नहीं

पेज नंबर 127 रामायण 122

पहरेदार हनुमान से अरे मूर्ख तू खब्बीखान का मरीज तो नहीं

हनुमान पहरेदार से अरे भले मानस तुम्हें तो बोलने की भी तमीज नहीं

पहरेदार हनुमान से मालूम होता है आज तू मौत का भाव पूछने आया है
हनुमान पहरेदार से भाई मैं पहले ही कह चुका हूं जिस काम का बीड़ा उठाया है जीवन एकदम बुलाया है

पहरेदार हनुमान से आखिर हमें भी तो बताओ वह कौन सा काम है
हनुमान पहरेदार से मुझे सीता जी से मिलना है यही मेरे आने का परिणाम है

हनुमान पहरेदार से भला तुम्हारी मौत किस तरह से आएगी

पहरेदार हनुमान से बिगड़ कर अरे मूर्ख अगर तू ने सीता जी से बात कर ली तो मेरी मौत में क्या फर्क है

हनुमान बेपरवाही से बाग में जाते हुए

पहरेदार हनुमान से मुक्का मार कर इस तरह मुंह उठाए कहां जाता है जैसे बाबाजी का भाग है

हनुमान पहरेदार से मुक्का मार कर यहीं पढ़ा रहे हैं कमबख्त तेरा आखरी यही इलाज है

लड़ाई तीनों पहरेदारों का मरना

हनुमान मन में अब रात्रि भी बहुत व्यथित हो चुकी है दिन निकलने में अभी कुछ ही क्षण बाकी है
अशोक वाटिका का कोना कोना छान मारा परंतु माता सीता का कहीं भी पता नहीं चला
अब उधर की ओर देखता हूं

हनुमान का एक तरफ हो जाना

रावण की सवारी

रावण सीता से प्यारी सीता मुझे आशा है कि आपने ऊंच नीच क्यों सोच कर कोई नेक नतीजा निकाला होगा

सीता रावण से दुख में ओम अधर्मी तेरा न जाने यहां से कब मुंह काला होगा

रावण सीता से प्यारी मेरी दशा पर ईश्वर के वास्ते कुछ तो रहम कर

सीता रावण से ओम जालिम कुछ तो ईश्वर का भय कर

रावण सीता से अरे आखिर कब तक अपनी हट निभाएगी

सीता रावण से जब तक यह आत्मा शरीर से निकल न जाएगी
रावण सीता से प्यारी जानकी तेरा वहम है उनके फ़रिश्ते भी यहां कदम नहीं कर सकते

सीता रावण से अगर यहां कदम नहीं धर सकते तो स्वर्ग का रास्ता आप बंद नहीं कर सकते

रावण सीता से क्रोध में आखिर मुझे कठोरता से ही काम लेना पड़ेगा

पेज नंबर 127 रामायण 123

सीता रावण से तेरी तो ताकत ही क्या है ईश्वर भी मेरे इस ख़याल को नहीं बदल सकता

रावण सीता से प्रेम से सीता तू फूल है मगर तुझे बू नहीं

सीता रावण से तो विद्वान है मगर तुझ में इंसानियत की खूं नहीं

रावण सीता से क्रोध में बस बस ओ बदलगाम जरा अपनी जबान को थाम

सीता रावण से दर्द में मैंने अपनी जुबान को बहुत संभाला
और आज तक अपने मुंह से कोई ऐसा शब्द नहीं
निकाला
जो कुछ तूने कहा मैंने ठंडे दिल से सहा
आखिर सहन करने की भी कोई सीमा होती है
तेरे जैसे हरामी के साथ
सख्ती से कलामी का बर्ताव नहीं किया जाएगा
तब तक तू किसी भलाई की आशा न रखना

रावण सीता से
दोहा सीता अब भी मान ले हट तेरी फिजूल
अब तू मेरी कैद से छूट कर जाए ना मूल

सीता रावण से
दोहा... रावण क्यों बक बक करै रख जुबान को बंद
कामी कपटी कायरे बुजदिल हो फर्जंद

नाटक

रावण सीता से प्यार से सीता तू इतनी सौदाई बन

सीता रावण से तु राजा हो कर अन्यायी न बन

रावण सीता से मेरे न्याय की सारे संसार में धाक है

सीता रावण से यूं ही जुबान का बाजार गर्म है न्याय क्या
खाक है
रावण सीता से मन ही मन में आज मैं हैरान हूं कि
मेरा खंजर क्यों बेकार हो रहा है
जबकि मेरी शान में ऐसे शब्दों का व्यवहार हो रहा है एक
साधारण औरत और इसकी इतनी हिमाकत एक मैं और

मेरी ताकत
परंतु अब यह अजीब तरह की सीता है
जिस पर मेरा जादू नहीं चलता है
नर्मदा को जानती है और ना कठोरता से मांनती है जैसा
मैं मुंह से बोलता हूं उसका घड़ा घड़ाया उत्तर मिलता है
बेशक किसी ने भी मुझे बहुत अजमाया
मगर मुझे भी रावण कौन कहेगा
जो इसे सीधा ना बनाया

सीता की ओर बोलना
ओ अभागी स्त्री ज्ञात होता है तेरे सिर पर मौत मंडरा
रही है

सीता रावण से
दोहा नहीं मालूम तेरी खत्म कब तककार होवेगी
तू आज सुन ले या फिर सुन ले मेरी इंकार होवेगी

रावण सीता से तेरे जैसे सर्कसों को खूब अजमाया है
मेरे कर्मों में तो एक दिन आखिरकार होवेगी

सीता रावण से उधर जो राज हट है इदर भी हट त्रिया का
भला मैं देखूं दोनों में किसकी तक्रार होवेगी

रावण सीता से तू जिद कर ले या हट कर ले मगर एक
दिन जरूर होवेगी
भुजा रावण कि तेरे इ्स गले का हार होवेगी

सीता रावण से दो ही चीजें लग सकती है सीता की गर्दन
से
भुजा रघुवर की होगी या फिर तेरी तलवार होवेगी

रावण सीता से यह निश्चित है बिल्कुल तु नरमी से नहीं

मानेगी
मेरे खंजर से सीधी अरी मकार होवेगी

सीता रावण से राधेश्याम ओ कायर पामर रजनीचर
क्यों अबला पर इतराता है
पिंजरे में फंसी सिंहनी को नंगी तलवार दिखाता है
लंकेश नहीं कायर है तू लंका में मुझे छुपाया है
जल जा डूब जा जलनिधि में क्यों खड़ग दिखाने आया है
रावण सीता से प्यार से ओ प्यारी सीता मैं तेरे प्यार का
दीवाना हूं
और तेरे रूप का मस्ताना हूं जो बात करता हूं
तेरी भलाई के लिए करता हूं
अभी कहा मान ले नहीं तो एक दिन पछताएगी

सीता रावण से क्रोध में अरे निर्लज्ज यदि कोई लज्जा
वाला होता तो
इतनी लानत सुन कर डूब मरता और किसी को मुंह
दिखाने के लायक नही रहता
मालूम नहीं ईश्वर ने तुम्हें किस मिट्टी का बनाया है शर्म
और हया को तो तूने बेच खाया है

रावण सीता से क्रोध में ओ तलवार की अभिलाषी जरा
अपनी जुबान को संभाल
मैं तेरा अभी काम तमाम करता हूं और सदा के लिए
खत्म करता हूं

धर्म पालनी त्रिजटा तलवार पकड़ कर महाराज जरा
शांति से काम लीजिए
इस्त्री पर हाथ उठाना शूरवीरों के खिलाफ है
बल्कि उसे क्षमा कर देना ही इंसाफ है
इस निर्भाग के कर्मों में रोना ही लिखा है
रोती रहेगीऔर इसी तरह अपनी जवानी खोती रहेगी

रावण तलवार मयान में करके विचार तो यही था जब
तक इस के मस्तक से हवा नहीं निकालता
तब तक तलवार मयान में ना डालता
किंतु तुम्हारे कहने से अपने इरादे को बदल रहा हूं और
एक महीने का अवकाश और देता हूं
या तो फिर कहा मान लेगी नहीं तो यही खड़ग इसके
प्राण लेगी

पेज नंबर 130 रामायण 125

रावण का दृश्य समाप्त
सीता का दृश्य चालू
सीता अपने मन में रस्सी का फंदा डालकर

सीता परमात्मा से परमात्मा इन दिनों से तंग आकर खुशी
से मरना चाहती हूं
परंतु एक प्रार्थना जरूर करती हूं
कि अगले जन्म में भी श्री रामचंद्र जी मेरे पति हो
या ऐसा कोई कार्य किया हो जिससे मेरी गती हो
V
हनुमान सीता से वृक्ष से आवाज देवी ईश्वर का नाम ले
और धैर्य से काम ले
सीता आवाज से हैरानी यह आवाज किधर से आ रही है
इस पाप भूमि पर कौन पवित्र आत्मा है
भाई जरा सामने आओ और मुझे अपनी सूरत तो दिखा

हनुमान सीता से माता जी यह क्या कह रही हैं
जो इतनी समझदार होकर बुरी मौत मर रही है आत्मघात
करना तो महापाप है

सीता हनुमान जी भाई तुम्हारा क्या नाम है मेरी तो तुमसे न जान है न पहचान है

हनुमान सीता से माता जी मैं भगवान रामचंद्र जी का सेवक हूं
मेरा नाम हनुमान है निसंदेह आपका कहना ठीक है आप की हाजिरी में मेरी उस समयं तक कोई रसाई न थी
किंतु आप की खोज करते हुए भगवान ऋषि मुख पर्वत पर आए
हमारे राजा सुग्रीव ने आपस में मित्रता की
उसी दिन से यह सेवक आपकी सेवा में आया है

सीता हनुमान से पता नहीं क्या लिखा है लाल अक्षरों में
पीछे हट कर दूर दूर हो कायर आत्मा
मैंने खुद तुझ को जान लिया है
और भली प्रकार से जान लिया है अरे ओ दुष्ट वही समय था जो सख्त गलती खा गई
और तेरे धोखे में आ गई
अब तो मैं तेरी मिट्टी सूंघ कर बता दूंगी
कि यह दुष्ट रावण की कब्र है

हनुमान सीता से माता जी आपको सच बदगुमानी हैं
मगर आप के विश्वास के लिए मेरे पास
श्री रामचंद्र जी की खास निशानी है
अंगूठी दिखा कर लीजिए माता जी इसकी पहचान कीजिए और भली प्रकार इत्मिनान कीजिए

सीता हनुमान से अंगूठी देख कर चुम कर रो कर

हाय हाय मेरे प्राण प्यारे की अंगूठी मेरे भाग्य के साथ साथ तू भी रूठी

तुझको मेरी इस अवस्था पर दया न आई
और इतने दिनों बाद सकल दिखाई
हे प्रियतम की अंगूठी तू ही मेरी जिंदगानी है

हनुमान सीता से हे माता जी अब इन बातों को जाने दीजिए और मेरी तरफ ध्यान दीजिए

सीता हनुमान से प्यारे हनुमान जी मुझे क्षमा करना मैं तो अंगूठी को देखकर इतनाभी भुल गई थी
कि आप को भी भूल गई
है प्यारे हनुमान इस खुशी में जो शब्द गलत निकल गए हो तो माफी चाहती हूं

हनुमान सीता से माताजी अब मुझे अधिक लज्जित न कीजिए
मैं तो आपका खिदमतगार हूं और आपके लिए प्राण देने को तैयार हूं
माताजी अभिव्यक्ति के दिन खत्म हो गए हैं
पिछली दशा को मन से भुला दीजिए

पेज नंबर 131 रामायण 126
और इस प्रकार रुदन करके दिल को ना जलाओ
अब मेरा सिर्फ लौटने का इंतजार है
और वानर द्वीप का एक एक बच्चा जान हथेली पर रखे तैयार है
हे माता जी आप मुझे भगवान राम जी का विश्वास जीतने के लिए कोई खास निशानी दीजिए

सीता हनुमान से मैं हैरान हूं इस वक्त तुझे क्या निशानी दूं
और तो सारे आभूषण राह में फेंक आई थी
बतौर यह चूड़ामणि खास निशानी साथ में लाई थी जो तुम ले जा सकते हो और स्वामी जी को दिखा सकते हो

हनुमान सीता से राधेश्याम हे माता अब है विनय एक
यद्यपि कुछ हृदय हिचकता है
फिर भी मुख खोल कहे मां से बालक का चित मचलता है
आया समुद्र लांघकर में
इस कारण भूख सताती है
यह पेड़ फलों से लदे हुए देख
भूख भी कितनी बढ़ती जाती है

सीता हनुमान से सिर पर हाथ फेर कर हनुमान मेरी ओर से तुम्हें पूरा अधिकार है
किंतु ख्याल रखना कि यहां का एक एक राक्षस खूंखार है

हनुमान सीता से माताजी मुझे परवाह नहीं जब आपका आशीर्वाद मेरे साथ है

पर्दा गिरना

पहरेदार पहरे पर खड़े हैं अशोक वाटिका का

उजड़ना

बागवान हनुमान से ललकार कर अरे तू कौन है जो बाग को उजाड़त है

हनुमान बागवानों से क्यों मेंढक की भांति टर्रटर्रा रहा है और अकारण ही सिर पर चढ़ा आ रहा है

बागवान हनुमान से ये लो भाइयों एक तो फल तोड़ खावत है दूसरा हमको ही धमका वत है

हनुमान बागवान से अच्छा है तुम यहां से चले जाओ व्यर्थ अपने प्राण न गवाओ

बागवान हनुमान से अरे हमको मौत का भय दिखाता है
भला तलब कौन बात की पावत है

हनुमान का हाथ पकड़ कर

हम देखते है कौन भाग कर कहां जाता है

हनुमान बागवान से घुसा मार कर भाग कर नहीं जाऊंगा
बल्कि तुम सबको यमलोक पहुंचाऊंगा

रावण की राज्यसभा

रावण मंत्री से महामंत्री सतानी गाने वाली को बुलाओ

महामंत्री रावण से जैसी आज्ञा हो पृथ्वीराज

रावण गाना सुनकर हा हा हा हा दुनिया में अगर जादू है
तो गाना है गाने वाली अगर सुरीली है
तो आनंद का क्या ठिकाना है हा हा हा हा

पेज नंबर 132 रामायण 127

बागवान रावण से आ कर दुहाई महाराज की सारी
अशोक वाटिका उजड़ गई हमारी भी दुर्गति भई
काहे को सिर फूटो काहे को मुंह फूट गयो

रावण बागवानों से किस दुष्ट की मृत्यु आई है

जो यहां आकर आफत मचाई है

रावण अक्षय कुमार से बेटा अक्षय कुमार तुम अभी
जाओ और उसे गिरफ्तार कर के
दरबार में हाजिर करो
अक्षय कुमार रावण से जैसी आज्ञा हो पिता श्री

अक्षय कुमार का जाना पर्दा गिरना

अक्षय कुमार और हनुमान का युद्ध

अक्षय कुमार हनुमान से ललकार कर खबरदार हो बनरे
अब जाने नहीं पाएगा

हनुमान अक्षय कुमार से मुझे भी तुम्हारा इंतजार था अब
जरा दो हाथ दिखाने का मजा भी आएगा

अक्षय कुमार हनुमान से या तो सीधी तरह मेरे साथ चल
..अन्यथा समझ ले मेरा नाम अक्षय कुमार है

हनुमान अक्षय कुमार से यदि तू भी मुझे गिरफ्तार ना करें
तो तेरे जीने पर धिक्कार है

हनुमान अक्षय कुमार से तलवार छीनकर मारना यदि तेरे
जैसे छोकरे मुझे गिरफ्तार कर लेंगे तो मुझे हनुमान कौन
कहेगा

रावण का दरबार

सभी बैठे हुए है

दूत रावण से महाराज की जय हो अक्षय कुमार वानर के हाथों मारा गया

रावण दूत से क्या कहा अक्षय कुमार मारा गया
दूत रावण से जी हां महाराज
रावण मेघनाथ से बेटा मेघनाथ तुम जल्दी जाओ और जिस तरह हो सके उस वानर को दरबार में हाजिर करो

मेघनाथ रावण से जैसी आज्ञा हो पिताजी

पर्दा

मेघनाथ हनुमान से अरे बनरे क्या तु यहां से जीवित जाने की आशा रखता है

हनुमान मेघनाथ से अगर मैं जाना चाहूं तो मुझे कौन रोक सकता है
मेघनाथ हनुमान से जरा कदम तो उठा या मुंह की ओर क्या बकता है
हनुमान मेघनाथ से जरा आगे को आ वही छिनाला औरत की तरह वही खड़ा खड़ा मटक्कता है

पेज नंबर 137 रामायण 128

दोनों की लड़ाई मेघनाथ का ब्रह्म फास फेंककर हनुमान को गिरफ्तार करना

हनुमान मेघनाथ से अरे बेईमान आखिर यही धोखा करना था
मेघनाथ हनुमान से अरे तेरे साथ हाथापाई करके क्या

मरना था

हनुमान रावण से अच्छा चलिए अब तो लंकापति रावण के साथ ही बातें करेंगे अगर मौका मिला तो दो हाथ भी करेंगे

A लंका दहन॔

रावण का जंगी दरबार

विभीषण मेघनाथ आदि का होना

रावण मंत्री से महामंत्री सताकी कुछ मालूम हुआ अशोक वाटिका को उजाड़ने वाला और ..
अक्षय कुमार को मारने वाला कौन है

मंत्री रावण से जी हां मालूम हो गया वह पवन पुत्र हनुमान है

रावण मंत्री से महामंत्री क्या तुम्हें धोखा तो नहीं हुआ है

मंत्री रावण से नहीं महाराज वह देखो वीर मेघनाथ उसे पकड़ कर ही ला रहे हैं

मेघनाथ रावण से हनुमान को आगे करके
पिताजी अक्षय कुमार को मारने वाला और बाग को उजाड़ने वाला हाजिर है जैसी आपकी इच्छा हो दंड दिया जाए

रावण मेघनाथ से दंड देने से अच्छा है पहले इसे अपराध का कारण पूछ लिया जाए

मंत्री हनुमान से ओ बनरे जरा बता कि तेरे मन में क्या

हवा समाई है
जो कदाचित मृत्यु नजर नहीं आई है

हनुमान चुप й

चुप रहने से आप के प्राण नहीं बचेंगे जरा मुंह खोल कुछ जुबान से बोल

हनुमान मंत्री से क्योंकि बंदा इस वक्त अमीरी सुल्तानी है
इसलिए ऐरे गैरे से बात करने में मेरी हानि है
जब कोई पूछने वाला पूछेगा तो जवाब देंगे
और पाई-पाई का हिसाब देंगे

दोहा:- पड़ा हो शेर पिंजरे में मगर वह बू नहीं आती
दिलावर की कजा के सामने खूं नहीं जाती

रावण हनुमान से रस्सी जल गई मगर बल नहीं जला

हनुमान रावण से
दोहा:- जले बल किस तरह मेरा मुझे किस बात का गम है
वही तुम हो वही मैं हूं वहीं दम है वही खम है

रावण हनुमान से क्रोध में अरे मूढ यह नीच कार्य स्वीकार करने से तो अच्छा था कहीं डूबकर मर जाता
और प्रल्हाद के नाम पर तेरे जैसे कपूत के नाम पर
कलंक का टीका न लगता

पेज नंबर 134 रामायण 129

हनुमान रावण से दोहा अभी तक भी है तेरा काम
पश्चाताप करने का
किया है काम तूने विलासक डूब मरने का

रावण हनुमान से राधेश्याम तू कौन कहां से आया है

कुछ अपनी बात बता बनरे
बाग उजाडा क्यों मेरा क्या कारण था बतला बनरे

लंका के राजा का तुने क्या नाम कान से सुना नहीं
तू इतना ढीठ निरंकुश है क्या मेरे प्रताप से डरा नहीं
मारा है अक्षय कुमार मेरा तो तेरा क्यों न संघार करूं
तू ही न्याय बन कर कह दे तुझसे कैसा व्यवहार करूं

हनुमान रावण से राधेश्याम दसमुख की किताब के पन्ने
कर्म कर्म से लेता हूं
पहला जो प्रश्न पूछा उसका ही उत्तर देता हूं
अब दसरथ अजर बिहारी है
कहलाते रघुकुल भूषण है
रीझि थी जिन पर शूर्पणखा
हारे जिनसे खर दूषण है

फिर ओर एक ध्यान दे लो
जिनकी सीता को हर कर लाए हो
मैं उसी राम का सेवक हूं
जिसे तुमने बैर बढ़ाए हो

अब सुनिए लंका आया था
माता का पता लगाने को
इतने में भूख लगी ऐसी
हो गया विवश मन फल खाने को

सुधि तुमने न ली मेरी
निशाचर कुल है अभाव यह
फल खाकर पेड़ तोड़ता है
वानर का तो स्वभाव यह

अक्षय कुमार का उत्तर यह

है सब को तन मन प्यारा है
उसने मुझको मारा है
तो मैंने भी उसको मारा है

रावण हनुमान से प्रश्न तो यह है
अशोक वाटिका में जाने के लिए
तुमको किसने कहा था

हनुमान रावण से कहा था श्रीराम ने
और सुग्रीव ने सीता जी की खबर लाने के लिए
रावण हनुमान से हे हे सीता जी की खबर लाने के लिए

हनुमान रावण से हां सीता जी की खबर लाने के लिए

रावण थे ए हनुमान से परंतु सुग्रीव का रामचंद्र से क्या संबंध है

पेज नंबर 135 रामायण 130

हनुमान रावण से जब वह सीता जी को खोजते हुए
ऋषि मुख पर्वत पर आए
तो दोनों ने आपस में मित्रता की जिस बाली ने आपको
छह माह काख में दाबा है
रामचंद्र जी ने एक ही बाण से उसे नैपैद किया
अब आप ही उनके ताकत का अनुमान लगा सकते हैं
अगर अब मेरा कहना मानो तो आपकी इसी में भलाई है
अब तुम सीता जी को राम जी के चरणो में पहुंचा दे
और उनसे माफी मांग ले
वह अवश्य माफ कर देंगे

रावण हनुमान से क्रोध में अरे मूढ़ जरा जुबान को संभाल
और ऐसे अशुभ शब्द मुख से ना निकाल

औ मतिमंद क्या तू यहां से जीवित जाने की आशा रखता है
हां जिनकी महिमा तू भाटों की तरह गा रहा है
और डेढ़ फुट चौड़ा मुंह फैला रहा है
अच्छी तरह से जानता हूं
हंस कर हा हा प्रथम तो बनवासी रामचंद्र और लक्ष्मण
दूसरा साथ कौन मिला सुग्रीव बुद्धि का दुश्मन
कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा
भानुमती ने कुनबा जोड़ा
सौ पचास आदमी इधर उधर से इकट्ठे किए
और रावण से मुकाबला करने के मंसूबे बांध लिए
अरे मतीमंद उन पर तो मैंने लंका का एक कुत्ता भी छोड़ दिया
तो उन्हें छुपने की जगह न मिल पाएगी

हनुमान रावण से सच है किसी मनुष्य की बुरी घड़ी आती है
तो उसकी समझ ही उल्टी हो जाती है
कौन समझाए और सोए हुए को सोया हुआ कैसे जगा सकता है

मगर याद रख आखिर रोएगा पछताएगा
किंतु यह समय हाथ नहीं आएगा
मैं नहीं कहता तू किसी मनुष्य से डर ...
किंतु उस परमेश्वर का तो भय कर नहीं तो ये तेरे कुत्ते भोंकते रह जाएंगे
और तेरी खोपड़ी को ये नोच-नोच कर खाएंगे

रावण हनुमान से राधेश्याम
है धाक धरणी से गगन तलक
रचना समस्त मुझ में ही है
आज्ञा है सूर्य चंद्र सब उदय अस्त मुझ में ही है

मेरे त्यागी के चढ़ते ही त्रैलोकी नाचने लगते हैं
ग्रह काल सुरेश कुबेर मेरे घर पानी भरते हैं

आती है बड़ी हंसी मुझको
यह उटपटांग बाते सुनकर
उस उधम तपस्वी बच्चे को किस भाँति बखाना चुन-चुनकर

ना समझे किस घमंड में है
स्वामी को अपने समझा ले
उस वानर वाले तपस्वी से
क्या डर जावे लंका वाले

राधेशयाम

हनुमान रावण से तेरा यह फजूल खयाल है
मेरी ओर उंगली उठाने की किसकी मजाल है

शायद तू इसलिए बोल रहा है
कि मेघनाथ मुझ को पकड़ लाया
तेरे इस वीर को तो एक झटके में तोड़ देता पर समझा
कि किसी तरह तुझ तक पहुंच जाऊं
कुछ समझा बुझाकर सही रास्ते
पर लाऊं मगर जब मनुष्य की बुरी घड़ी आती है
तो उसे ना आंखों से दिखाई देता है ना कानों से सुनाई देता है
मगर मैं पुराने संबंध के कारण ही आपसे हमदर्दी कर रहा था
अन्यथा मुझको क्या चूल्हे में पड़े तू भाड़ में पड़े तेरी लंका

रावण हनुमान से दोहा

अरे नालायक बता तो मुझको तो खौफ किसका दिखा रहा है

मैं वह बला हूं जिसके भय से काल खुद खौफ खा रहा है

हनुमान रावण से लोग खुद ही देख लेंगे
क्यों इतना तिलमिला रहा है
कल जो खाता था खौफ जिसका वह आज तुझे खा रहा है

रावण हनुमान से ना मैंने उठाया खंजर अभी तलक चहचहा रहा है
तू अपने हाथों अदम का रास्ता बना रहा है

हनुमान रावण से चंद दिनों में होगी यह चर्चा वह दिन भी नजदीक आ रहा है
कहेगी दुनिया देखो रे लोगो
जनाजा रावण का जा रहा है

रावण हनुमान से तलवार उठा कर हरे.ओ नासा काट शरीर
रावण से ऐसी बेहूदा तकरीर अब मेरी तलवार ही तुझे खामोश कर आएगी
और सदा के लिए तुझे सुख की नींद सुलाएगी
रावण तलवार उठा कर

विभीषण रावण से तलवार पकड़ कर ...भाई साहब जरा धैर्य कीजिए यह काम आप की शान के खिलाफ है
भला दूत का वध करना कहां का इंसाफ है

रावण विभीषण से हट हट मेरा हाथ छोड़
यह तुम्हारा ख्याल झूठ है
कौन कहता है यह दूत है

विभीषण रावण से भाई साहब जब यह अपने स्वामी का

संदेश लाया है तो इसमें दूत होने में क्या शक है

रावण विभीषण से परंतु तुम्हें ऐसी बेहूदा बकवास करने का क्या हक है

विभीषण रावण से जो कुछ उसने कहा वह इसके मालिक की जुबानी है
विभीषण रावण से भ्राता जी यह राजनीति का असूल है

रावण विभीषण से यह बहाना फिजूल है
बल्कि इसकी वजह खास माकूल है

पेज नंबर 137 रामायण 132

हनुमान रावण से अगर तू भी मुझे गिरफ्तार न कर ले तो तेरे जीने पर धूल है

रावण सभा से पकड़ लो पकड़ लो भागने ना पाए

हनुमान का दौड़ कर
लंका को फूक. देना

श्री रामचंद्र जी का कैंप

नल नील लक्ष्मण सुग्रीव अंगद.   जामवंत

हनुमान जी का जयकारा बोलना

हनुमान राम से पांव में गिरकर प्रणाम भगवन

राम हनुमान से कहो महावीर तुम धन्य हो कहो कुशलता से तो आए

हनुमान राम से हे भगवान जब आपका आशीर्वाद मेरे साथ है
तो मुझे कष्ट क्यों होने पाए

सुग्रीव हनुमान से कहो बजरंगी सीता जी की खबर लाए

हनुमान सुग्रीव से हां हां हनुमान जाय और सीता जी की खबर ना लाए
राम हनुमान से कहो महावीर तुम लंका में कैसे पहुचे

हनुमान राम से भगवान मैं कई स्थानों पर खोज करता हुआ
लंका पहुंचा वहां कई जगह पर देखा भाला बड़ी मुश्किल से माताजी का पता लगा
भगवन माता जी अशोक वाटिका में कैद है
माताजी एक साधारण सी साड़ी में अपना शरीर डांप रही थी और मारे शीत के थर थर कांप रही थी
मैं यही सोच रहा था कि इतने में रावण वहां आ पहुंचा
उसने माताजी को खूब धमकाया
हे भगवन माता जी कुछ देर तो चुप रही
परंतु तंग आकर जुबान खोली जो कुछ मुंह में आया तो बोली
जिसे सुनकर रावण ने तलवार निकाली
परंतु एक स्त्री ने बीच में आकर माताजी की जान बचाई
अस्तु उसका अरमान दिल ही दिल में रह गया
और जाता हुआ वह कह गया
एक महीने और सब्र करुंगा
उसके जाने के पश्चात
मैं जिस वृक्ष पर बैठा था
वह उसी वृक्ष के नीचे आई
और साड़ी में से पल्ला काटकर

गले में लटकाया जिसके देखते ही मैंने सोचा माताजी
आत्मघात करने लगी है
मैंने वहां से कूदकर संभाला
पहले तो मुझे रावण समझकर
मुझे बुरा भला कहा
जब मैंने आप की निशानी दी तो उनका भ्रम जाता रहा
किंतु इस बीच माता जी रोती रही और आते समय मुझे
यह निशानी दी
चूड़ामणि आगे करके लीजिए.
भगवान पहचान लीजिए
राम हनुमान से चूड़ामणि लेकर निसंदेह यह मेरी प्राण
प्यारी की निशानी

पेज नंबर 138 रामायण 133

रो कर

प्यारे हनुमान
किंतु आप यह तो बताएं तुम्हारी रावण से भी मुलाकात
हुई थी या नहीं

हनुमान राम से हां रावण से भी मुलाकात कर आया हूं
और उसके बहादुरों को भी नीचा दिखा आया हूं
कईयों को मारा कईयों को पछाड़ा

राम हनुमान से हे प्यारे हनुमान नीचा दिखाने के बजाए
उसे सीधा मार्ग पर लाते तो अच्छा था

हनुमान राम से भगवन मैंने अपना सारा बल लगाया
लेकिन अभिमानी ने मेरी बातों को मखोल में ही उड़ाया ..
यहां तक कि मुझे मारने के लिए तलवार उठाई ..
किंतु बीच में पढ़कर विभीषण ने मेरी जान बचाई.

राम हनुमान से प्यारे हनुमान
जो कष्ट मेरे लिए सहन किया है

मैं आपका सच्चे दिल से
 मशरुर हूं.

हनुमान राम से बस भगवन
मुझे अधीक लज्जित न कीजिए

राम सुग्रीव से हे सुग्रीव जी
कहो अब क्या विचार है.

सुग्रीव राम से हमें अब किस बात का इंतजार है
उधर रावण का सिर और इधऱ हमारी तलवार है.

राम सुग्रीव से तो प्यारे सुग्रीव जी यहां से चलने की तैयारी कीजिए

सुग्रीव राम से जैसी आज्ञा हो भगवन.

हनुमान सीता दृश्य समाप्त

रावण की परेशानी

मेघनाथ विभीषण

इस पूरे वाक्यांश में कुछ गलतियां है इसको ठीक करना है

रावण सभा से ना जाने वह कौन सी मनहूस घड़ी थी जब से यह नागिन मेरे गले पड़ी थी
सांप के मुंह में छछूंदर खाए तो कोड़ी उगले
ना खाए तो कलंकी ..जब से इसे चुरा कर लाया हूं
मैं ना नींद भर सोया हूं
ना पेट भर खाया है
ना तो उसका हा मैं जवाब सुनने को आया है या इसके विरह में तड़पता रहु

रहे सहे को हनुमान जला गया
और मेरी मांन इज्जत को एक क्षण में खाक में मिला गया

मेघनाथ रावण से पिताजी जब तक मेघनाथ संसार में मौजूद हैं
आपका किसी प्रकार की चिंता करना बेशुद्ध है
मैं वही मेघनाथ हूं जिसका हनुमान एक झटका भी नहीं सह सका उसे मैं मामूली इंसान समझता हूं और भागे पीछे भागना अपना अपमान समझता हू

रावण मेघनाथ से शाबाश बेटा पर जो कुछ हुआ है
उसका अब क्या फिक्र करना है अब तो आगे की रोकथाम का जिक्र करना है
यूं तो मुझे किसी बात का गम नहीं क्योंकि मेरे बहादुर किसी से कम नहीं
भला लंका के बहादुरों से मुकाबला करने का किसी में दम नहीं

विभीषण रावण से भ्राता जी आपके सारे सभासद आप से डरते हैं
भैया अग्नि तथा दुश्मन को तुछ नहीं समझना चाहिए
इसलिए मेरी आपसे यही ताकीद है जिस प्रकार से हो सके
उस बला को गले से निकाल डालो और सारे कुल को इस आने वाली बर्बादी से बचा लें

अब साधारण सी बात यह है कि आप सीता जी को श्री रामचंद्र जी के पास पहुंचा दें
और उनसे मित्रता का हाथ बढ़ाएं वह न्यायकारी परमेश्वर आप को हृदय से लगाएंगे

मेघनाथ विभीषण से क्रोध में औ चाचा साहेब बस बहुत हो चुकी जरा चुप हो जाइए अगर राम से अधिक भय हो

तो कहीं जाकर छुप जाइए
कुल पर चाहे कितनी तबाही मचे
परंतु तुम ऐसी जगह छुपना
जहां आप की जान बचे शौक
आप जैसे निर्लज्ज हमारे कुल में कहां से पैदा हो गए
ना आज हम अपने भाग्य को रोते बहन की नाक काटी
जावे और भाई को शर्म न आए
जाओ जल्दी जाओ वरना मौत दिख जाएगी
और फिर छुपने को जगह ना पाएगी

विभीषण मेघनाथ से क्रोध में अरे नासमझ गुस्ताख
लड़के तू इस प्रकार जुबान चला रहा है
पृथ्वी तथा आकाश को कुलबे में मिला रहा है
माना की तू जवानी में मशरुर है परंतु बुद्धि और समझ से
कोसों दूर है
विलासत भर का लड़का और हाथ भर की जुबान
इस समय इतनी बहादुरी दिखा रहा है
तू कल कहां मर गया था जब हनुमान सहस्त्रों की
किरकिरी
कर गया था

मेघनाथ विभीषण से क्रोध में चाचा साहिब मैं जिस बात
को कहना ना चाहता था
अब आप कहला कर ही रहोगे चाचा साहेब उसमे भी
आप की साजिश थी
जो हनुमान भाग गया मानो आपका तो भाग्य जाग गया
अफसोस तुम्हारी बहन की
जिसने नाक काटी तुम उसी का पक्ष लेते हो
यदि कुछ शर्म हो तो चुल्लू भर पानी में डूब मरो

विभीषण रावण से भाई साहब देखते हो यह कल का
छोकरा

मुझे किस प्रकार जलील कर रहा है

नंबर 140 रामायण 135

रावण विभीषण से क्रोध में निसंदेह जो कुछ कह रहा है
बिल्कुल दुरुस्त कह रहा है
विभीषण रावण से शोक कि आप भी इस का पक्ष ले कर
मेरा अपमान कर रहे हो

और उसकी पीठ ठोकर मुझे सारे दरबार में कड़वे वचन
सुना रहे हो

रावण विभीषण से अरे निर्लज्ज अगर मैं इसका पक्ष भी
लेता हूं
तो यह शत्रु का वफादार तो नहीं और तेरी तरह कौम का
गद्दार तो नहीं
निसंदेह तेरी दुश्मन के साथ गहरी साज बाज है
हनुमान की वकालत करने के लिए तू बीच में पड़ गया
जब मैंने उसका वध करना चाहा
तो जट बीच में अड़ गया
अब मेघनाथ ने युद्ध की सलाह दी तो उसके सिर पर चढ़
गया

विभीषण रावण से भ्राता जी यह आपकी भूल है
और मेरे संबंध में ऐसा ख्याल लाना बिलकुल फिजूल है
पर मैं अब भी कहता हूं
कि आप सोई हुई राड़ को छेड़ रहे हैं ..एक स्त्री वह भी
पराई
जिसके कारण इतनी सख्त लड़ाई

रावन विभीषण से परंतु उनके दिल में यह क्या सब हवा

समाई
जो अकारण ही सूर्पनखा की नाक उड़ाई
अरे बेहया अब कुछ शर्म न भाई

विभीषण रावण से निसंदेह यही एक बात है
जिसने अपनी तबीयत इतनी भड़काई
पर कैसे वह खामखाह उनके सिर आई
और किए की सजा पाई

रावण विभीषण से विभीषण जरा कान खोल कर सुन
तेरी निस्बत चारों ओर से नाराजगी का इजहार है
जिस से स्पष्ट प्रकट होता है
तू शत्रु का खुल्लमखुल्ला वफादार है

विभीषण रावण से भाई साहब जैसे आप खुद फरामोश है
वैसे ही आपके सभा सदी हैं
इस समय आप के सुर में सुर मिला रहे हैं
और आप को उल्टे मार्ग पर चला रहे हैं
यह आपको अमृत के धोखे में
विष पिला रहे हैं समय आने पर
यह निखट्टू
अपने ही मुख से कह देंगे रावण की सख्त गलती थी

पेज नंबर 141 रामायण 136

मगर हम क्या करें हमारी पेश नहीं चलती थी

रावण विभीषण से विरोध में अरे पाजी मक्कार बेगैरत गद्दार
तू इसी वक्त यहां से काफूर हो जा और मेरी आंखों से दूर हो जा

तेरे प्राणों की रक्षा इसी में है
किंतु मेरी सीमा से निकल जाओ अरे निर्लज्ज
यदि मैं तेरे साथ कुछ भलाई करता हूं ...
तब भी उसकी हमदर्दी का दम भरता है....
वह तेरी बहन की इज्जत पर हाथ डाले ....
किंतु तुमको कुछ शर्म न आए
खर और दूषण का सेना सहित हनन करें
और तेरा रक्त जोश ना खाए
अरे पापी इस बेवफाई की जिंदगी से तो अच्छा था
कुछ खा कर मौत की नींद सो जाता ...
हां मगर मैं तेरे जैसा बेशर्म नहीं
हा अपनी मां जाए भाई का वध करना मेरा धर्म नहीं
माना की तू आला दर्जे का तु पापी और शैतान है
किंतु तेरे जैसे मुर्दे को मारना मेरा अपमान है
लात मारकर बेगैरत चला जा निकल जा दूर हो जा
अब लंका के भीतर कदम न धरना और सारी जिंदगी
मुझे मुंह न दिखाना

विभीषण रावण से गाना बहरे तबील

तेरे बर्बाद होने के दिन आ गए
दोस्त इसमें है भाई तुम्हारा नहीं
तेरी बुद्धि में रावण खलल आ गया
तूने अपना बेगाना विचारा नहीं

आप अपनी जुबान से कहो ना कहो
मुझे रहना यहां खुद गवारा नहीं
तेरी मतीमंद के राज्य में
अब विभीषण का कोई गुजारा नहीं

तुझे भाई की भाई को नसीहत नहीं
आज तुमको विभीषण प्यारा नहीं

अब मरने में न छोड़ी है कसर
शीश धड़ से मगर ये उतारा नहीं

पेज नंबर 142 रामायण 137

तख्ते लंका का तख्ता उलटने को है
क्या करूं मेरा चलता इजहारा नहीं
मेरे चलते समय का नमस्कार लो
तो दर्शन करूंगा दोबारा नहीं

नाटक.

विभीषण रावण से शोक मेरी शुभकामनाओं का
यही सिला मिलना था
और मुझे इसी प्रकार सारे दरबार से जलील होकर
निकलना था
अच्छा भैया तुम्हारा क्या कसूर है हाथ बांधकर .....अब
मेरा अंतिम नमस्कार लीजिए

श्री रामचंद्र जी का कैंप

राम अंगद हनुमान लक्ष्मण नल नील सुग्रीव

सुग्रीव राम से भगवन एक आश्चर्य की बात सुनिए
रावण का भाई विभीषण आपसे शरण मांगता है

राम हैरानी से हे हे रावण का भाई विभीषण

सुग्रीव राम से हां भगवान
राम सुग्रीव से तो आपका इस विषय में क्या विचार है
क्या विभीषण वास्तव में काबिले ऐतबार है

सुग्रीव राम से मेरी राय में तो हनुमान जी से पूछ लेना
ठीक रहेगा

हनुमान राम से भगवन और तों में कुछ नहीं कह सकता
मगर इतना कहे बगैर रह भी नहीं सकता
यदि विभीषण रावण के दरबार में मुझे ना बचाते तो
मैं कदाचित लौटकर वापस नहीं आता

राम हनुमान से तो बस ठीक है
प्यारे हनुमान जाइए
और विभीषण को आदर सहित
ले आइए

हनुमान राम से जैसी आज्ञा हो भगवन

हनुमान विभीषण से प्रणाम महाराज

विभीषण हनुमान से खुश रहो प्यारे हनुमान जी खुश रहो

हनुमान विभीषण से महाराज आपकी भक्ति पूरी हो गई
मुझ दास को आप को बुलाने के लिए भेजा है
चलिए भगवन के दर्शन कीजिए

विभीषण राम के पांव में गिर कर रोना
प्रणाम भगवान
राम विभीषण से गाना
मेरे भक्त विभीषण
क्या खौफ तूने खाया
आंखों में जल भरा है
किस दुष्ट ने सताया
मेरे भक्त विभीषण ....

जिसने मेरे भक्तों को
दुनिया में दुख दिया है
वंश नष्ट उसका ढूंढा
कहीं न पाया
मेरे भक्त......
तू मेरी शरण में आया
तुम को गले लगाया
क्यों रोते हो विभीषण
क्यों इतना ऩीर बहाया
मेरे भक्त.........
जल हाथ में लेकर
मस्तक तेरे चढ़ाया
जा आज से विभीषण
लंकापति बनाया
मेरे भक्त.....
पेज नंबर 145 रामायण 138
नाटक

राम विभीषण से विभीषण को उठा कर प्यारे विभीषण
उठो
क्यों जार जार रो रहे हो
अब आपको यहां पर
कोई कष्ट नहीं होगा
अब लंका जितने पर
शाही मुकट आपके सिर होगा
आज से मेरा यह वचन निश्यत रहेगा

विभीषण राम से गाना
भक्त विभीषण दास आपका
रखना लाज हमारी हे प्रभु
आया हूं शरण तुम्हारी

नाटक

विभीषण राम सेभगवन जैसा आपको सुना था
उस से भी बढ़कर पाया है
जिसने अपने शत्रु के भाई को
खुले दिल से गले लगाया है
हेभगवन यह एहसान
मैं जिंदगी भर नहीं भूलूंगा

राम विभीषण से प्यारे मित्र यह कोई एहसान नहीं
जो दुखी इंसान पर हमदर्दी नहीं करता
परले सिरे का कमीना होता है
मगर यह तो बताओ
तुम रावण को क्यों छोड़ आए
क्या उनसे कोई खास तकरार हो गयी
या उन्हें तुम्हारा कुछ बिगाड़ दिया

विभीषण राम से भगवन मैंने
उसअभिमानी को...
बार बार समझाया किंतु उसने मेरी बातों को मखोल में ही
उड़ा दिया मुझको कायर और बुजदिल ठहराया ...
आखिर उसने नाश होने पर पाया तो विवश होकर
मैं आप की शरण में आया
भगवन मेरी ओर से रावण मर गया और मैं रावण की
तरफ से मर गया हे भगवन अब तो मैं यह शरीर
आपके चरणो में कुर्बान कर चुका हूं

राम विभीषण से यदि रावण आपको और रावण को आप
साफ जवाब दे चुके हैं
तो हम आप को लंका की उपाधि तुम्हें दे चुके हैं
यहां आपका हर तरह से आदर किया जाएगा
और मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि
लंका विजय होने पर लंका का राज तुम्हें दिया जाएगा

हनुमान राम से धन्य हो भगवन जो संपदा महादेव जी ने
रावण को दस शीश का बलिदान देने पर दी थी
वह उपाधि आपने विभीषण को शरण में आने पर दे दी

राम हनुमान से प्यारे हनुमान जी भक्तों को क्या दे सकते
हैं भक्तों का कर्ज तो हर वक्त सिर पर होता है

पेज नंबर 144 रामायण 139

हनुमान

बोलो कृपा निधान भगवान
राम चंद्र की जय

सुग्रीव राम से भगवन अब लंका पर चढ़ाई करने का
हुक्म दीजिए

राम सुग्रीव से मेरी सम्मति में एक बार फिर किसी दूत को
भेजकर रावण को समझाना चाहिए
और जहां तक हो सके आगे आने वाली तबाही को
टालना चाहिए

हनुमान राम से ठीक है भगवन
मेरी समझ में भी रावण को
एक अवसर और देना चाहिए
और उनको समझाने के लिए युवराज अंगद को भेजना
चाहिए

राम हनुमान से जी हां हमारा विचार भी ऐसा ही है
अंगद युवक निपुण तथा सफल भी है
और वीर होने के साथ साथ निति कुशल भी है

अंगद राम से नाथ मुझे आशीर्वाद दीजिए
और उस अभिमानी से भेंट करने के लिए विदा कीजिए

राम अंगद से हे वत्स जाओ मेरा आशीर्वाद है
कि तुम संसार में अमर कीर्ति पाओगे

अंगद राम से जय हो प्रभु
दोहा चिंता ही क्या है आपका सिर पर जो हाथ है
देखूंगा जाकर उसको जो देवों का नाथ है

पर्दा

दृश्य समाप्त

रावण का दरबार

सातवां दिन शुरू

मेघनाथ पर हस्त मंत्री निकुंभ

अंगद रावण संवाद

रावण मंत्री से महामंत्री सताकी गाने वाली को दरबार में हाजिर करो
महामंत्री रावण से जैसी आज्ञा हो महाराज

गाना नृत्य

द्वारपाल रावण सहित महाराज की जय हो किसकिंधा से एक दूत आया है
रावण द्वारपाल से जाओ आदर सहित दरबार में ले आओ
द्वारपाल रावण से जो आज्ञा महाराज
रावण अंगद से राधेश्याम
मैं कहता हूं कौन है तू बदला अपना नाम
हुआ कहां से आगमन क्या है मुझसे काम

अंगद रावण से राधेश्याम
मैं कहता हूं लीजिए नमस्कार दसभाल
दूंगा चार जवाब में ..जब हैं चार सवाल

महाराजा राजाधिराज मैं
दूत राम रघुवर का हूं
युवराज देश किसकिंधा का
सूत बाली राज वानर का हूं

पेज नंबर 145 रामायण 140

रावण अंगद से दोहा मैं कहता हूं लिये है तुमने जिसके नाम
ध्यान नहीं उनका मुझे कौन बाली या राम
अंगद रावण से राधेश्याम मैं कहता हूं ध्यान न हो
कारण तब बुरी अवस्था थी
जब बाली की काख में बंदी थे
उस समय आपको मूर्छा थी

इसलिए बाली को भूल गए
तो बड़ी ना भूल महोदय की
इसमें अचरज है नहीं मुझे
पर एक बात है विस्मय की

भगिनी श्री सूर्पनखा जी
को प्रति दिन दस वंदन देखते हैं
इसलिए अचंभा तो यह है
श्री राम नाम भी भूले हैं

उन्हीं का सेवक अंगद है
यह कर्तव्य चुकाने आया है
इस उल्टी राज्यसभा में
कुछ सीधी समझाने आया है

रावण अंगद से राधेश्याम
क्या तू ही है अंगद हे अंगद

क्या तू ही बालि का बालक है

क्या तू ही बांस की जवाला है
क्या तू ही बालि का घातक है

यदि तेरा गर्भ नष्ट होता तो
होता आज अकाज नहीं
तपस्वी का दूत कहलाने में
आती तुझको लाज नहीं

मारा जिसने बाली बाप
धिक है तू उसका दास हुआ
जो मित्र पिता का है तेरे
उस पर ना तुझे विश्वास हुआ

अभी तू मुझसे मिल जाए
तो तेरी सुभदग्गति हो जाए

इस बड़े राज्य लंका का
कल से सेनापति हो जाए

अंगद रावण से राधेश्याम मैं यह सेवा करता परंतु
मुझ में इतनी योग्यता कहां
लंका का सेना अध्यक्ष बनु
यह बुद्धि और वीरता कहां

सेनापति अगर चाहते हो तो
रामदल में फाजिल है
दो चार नहीं सैकड़ों वहां
सेनापति बनने काबिल है

अन्यथा संदेशा है उनका

इस लंका दिशावर रावण को
सारी लंका में एक वही
बस शेष रहेगा तर्पण को

अन्यथा एक विभीषण तो
इस सेवा को आ सकता है
सेनापति तो तुम चाहो
वह राज्य भी चला सकता है

रावण अंगद से राधेश्याम अच्छा अगर संधि चाहते हैं
स्वीकार मुझे इन नियमों पर
पहले भेज दे विभीषण
सिर रखे मेरे चरणों पर

फिर तोड़े सेतू समुद्र का
आ सके न कोई लंका में
फिर हनुमान का मान मिटा
भेजिए रावण की सेवा में

उस समय दबा तिनका दांतो में शरणागत हो इन बाणों की
कर जोड़े हाथ मेरे आगे
रामलखन भिक्षा मांगे प्राणों की

अंगद रावण से बस यही है या कुछ और अधिक
यह तो मांगे साधारण है
मैं जाकर उनसे कह दूंगा
चारों बातें साधारण है

जिन हाथों से पुल बांधा है
वह उसे तुड़वा ही डालेंगे
लंका का मान विभीषण है
लंका मैं उसे भेज देंगे

हो चुकी हानियां जो अब तक
उन सबको तो हम भर देंगे
पर हुई एक महान हानी
उसे कैसे पूरी कर देंगे

जब जब तुम घर जाओगे
तब तब नजरों में आएगी
श्री सूर्पनखां की कटी नाक
वह कैसे जोड़ी जाएगी

रावण अंगद से क्रोध में अरे हो घमंडी निर्लज्ज
तूने अभी तक मेरा नाम नहीं सुना जो इतनी ठीठाई करने पर उतर आया है
मैं सूर्पनखा की नाक नहीं
जो तुम काट सकोगे
मैं रावण हूं रावण जमीन आसमान पर मेरी धाक है

अंगद रावण से नाम हां सुना है आपका नाम रावण है
परंतु एक रावण तो राजा बलि को जीतने के लिए पाताल लोक गया था जिसको बालको ने घुड़साल में बांध लिया

और एक रावण कीर्ति वीर्य के चुंगल में आया जिसको पुल्सित मुनि ने बड़ी मुश्किल से छुड़ाया

एक रावण सहस्त्रबाहु से लड़ने के लिए गया
वहां भी मार खाकर आ गया

और चौथे रावण को मेरे पिता बाली ने छह माह तक काख में दबा लिया
और संध्या होने तक डले की तरह छुपा लिया
अब बताइए आप उनमें से कौन से रावण हैं

रावण अंगद से मर्यादा के भीतर रह अधिकार न राड़ बढ़ाने का
बकवादी तेरा काम नहीं सिर होकर समझाने का

वह दोनों आप निपट लेंगे
जीन में ठन रही लड़ाई है
तू तो पेड़ों पर उछल कूद
क्यों बक बक यहां लगाई है

नाटक

रावण-अंगद से तू अभी बच्चा है नादान है और रावण से अनजान है मैं वह रावण हूं जिसने कई बार अपने शीश काटकर महादेव जी का पूजन किया और अपनी शक्ति से सारे देवताओं को परास्त किया आज मेरे बल का सारा संसार सिक्का मानता है

दोहा :-मही डोले गगन कांपे
कदम मेरे जमाने से
हिल जाते हैं पर्वत भी
जरा सा लब हिलाने से

मेरे आतंक से कॉल कलेजा
थाम लेता है
है क्या गिनती में यहां उनकी जिसका तु नाम लेता है

अंगद रावण से हा यदि ऐसे वीर थे तो शस्त्र बाहु को जीतकर क्यों ना नाम पाया
धनुष तोड़ कर क्यों नहीं बल दिखाया
और मैं विवश हूं नहीं तो
तुझे भूमि पर पटक कर
सारी सेना को मारकर

मंदोदरी सहित जानकी जी को ले जाता

दोहा :- सहे हैं सिर झुकाकर आज सब कड़वे वचन तेरे
पीये है विष की तरह
पापी कथन तेरे
अगर बन कर न आता दूत
तो लेखा चुका देता
पल में भाव आटे-दाल का
तुमको चखा देता
रावण अंगद से क्रोध मैं
ओ धूर्त तेरी इतनी ढीठाई
मेरे सामने उन तपस्वियों की
इतनी बड़ाई

दोहा भटकते फिर रहे आज तक नारी की चिंता में
यूं ही मर जाएंगे रोते-बिलखते
घोर विपदा में
अंगद रावण से क्रोध मैं
ओ अभिमानी जिसके भय से हजारों अहंकारी कांप गए
जिन की तीखी चितवन से परशुराम का अभिमान भाग
गया तु उनको डरना चाहता है और उन पर अपना
आतंक जमाना चाहता है ओ मूढ यह तेरी भूल है
रावण अंगद से क्रोध में बस बस औ धूर्त चंडाल आगे
शब्द ना निकाल नहीं तो जीभ तालू से निकायल दूंगा
जिनके बल पर इतना उछलता है उनका नाम ही दुनिया
से मिटा दूंगा
 दोहा बनूंगा क्रोध की बिजली झुलसा दूंगा जला दूंगा
मिटाकर पल में जीवन
लाश कुत्तों को खिला दूंग

अंगद रावण से क्रोध में ओ धुरत इतना अभिमान मेरे
सामने

भगवन का यह अपमान

दोहा नीच अपने पाप कर्मों का तमाशा देख ले

अंगद का भूमि पर हाथ मारना

शक्ति भी छोड़ती है साथ तेरा देख ले

रावण का मुकुट गिर जाना रामदल में जा कर पड़ना

रावण-अंगद से भडक कर ओह! इतना निर्लज्ज

दोहा चढ़ गया सिर पर घमंडी
नीच पापी बेहया
इस तरह के वचन जो आया
जुबां पर कह गया
याद रख अब अगर बकवास करता जाएगा
ठोकरें गलियों में पाजी शीश तेरा खाएगा
अंगद रावण से क्रोध में अरे ओ मूर्ख तुझे गाल बजाते शर्म नहीं आती
औ स्त्री चोर गद्दार मंदबुद्धि पाखंडी ले अपनी वीरता का एक दृश्य दिखाता हूं
और तेरे सामने पृथ्वी पर पांव जमाता हूं

अंगद का सभा में पांव जमाना

यदि तेरा कोई वीर इसे उठा देगा
तो अंगद सौगंध खाकर कहता है जानकी जी को हार जाएगा
नहीं तो सीता जी को
भगवन के चरणों में पहुंचाएगा बोलो है मंजूर

रावण अंगद से कहीं पीछे से मुकर जाओ अथवा अपनी शर्त से मुकर ना जाओ
अंगद रावण से यह बोलना तुम्हारा वाहीयाद है मर्दों का प्रण प्राणों के साथ है

रावण सभा से
योद्धाओं क्या देखते हो
इस का पांव तुरंत उखाड़ दो
और इस नामाकूल को
पटककर पछाड़ दो

दोहा इसको इस तरह पीसो कि ईसका नाम निशान तक न पा सके
धूल तक उड़कर न इसकी
रामा दल में जा सके

रावण मेघनाथ से बेटा मेघनाथ तुम जाओ और अपना बल दिखाओ

मेघनाथ खड़ा होकर रावण से चलूंगा जिस जमीन पर
उस जगह भूचाल आएगा
जमीं तो एक तरफ चरखे
कुल भी कांप जाएगा
मुजस्मि काल हूं मैं
यह क्या मेरा काल लाऐगा

भस्म यही हो जाएगा
जो मुझ से नजरें मिलाएगा
इसे तो एक झटके में
कई चक्कर खिला दूंगा
पांव तो चीज क्या है
इतनी जमीन भी हिला दूंगा
मेघनाथ अंगद के पांव से लिपटकर अजब लक्कड़ से पाला पड़ा है
अरे इसमें कोई मेख तो नहीं लगा दी है

रावण निकुंभ से बेटा निकुंभ

अब तुम्हारा वार है
निकुंभ खड़ा होकर मैं अपनी वीरता के तुमको जोहर दिखाता हूं
नजर मेरी तरफ रखना पैर क्युकर उठाता हूं
हुक्म हो तो इस पांव के टुकड़े बनाता हूं
खबरदार हो बुजदिल मैं तेरी और आता हूं

निकुंभ अंगद के पांव से लिपटकर जोर लगाना
अंगद निकुंभ से हीला दे भाई हिला दे अन्यथा दो टुकड़े हो जाएंगे

शर्म के मारे हार कर बैठ जाना निकुंभ का
रावण प्रहस्त से बेटा परहस्त इस नालायक को उठाकर समुद्र में फेंक दो

प्रहस्त खड़ा होकर उठाया कदम जब मैंने
पांव इसका उठाने को
ना पाएगी जगह इस को
मुंह दिखाने को
मेरी ताकत से आ जाएगी ताकत कुल जमाने की
संभल जाओ अब आता हूं तेरा बल अजमाने को

अंगद के पैरों से लिपट कर

इस लड़के से क्या सिर खपाएंगे कोई बहादुर हो तो हाथ दिखाएंगे

हार कर बैठ जाना

रावण मंत्री से दोहा :-देखता क्या है उठाकर फेंक दे आकाश पर
ना तो रोए कोई ऐसे बेहया की लाश पर

मंत्री रावण से दोहा :-हुक्म है हुआ है सरकार का
फौरन बजा लाऊं
उठा दुं पैर पृथ्वी से तभी बलवान कहलाऊं

मंत्री अंगद के पांव से लिपट कर:-
दोहा :-हिलाऊं पैर क्या
सारे को भोजन जान कर खा लूंगा
अगर हो हुकम तो एक आन में भूमि भी हिला दूंगा

मंत्री का हार कर बैठ जाना
अंगद मंत्री से भाई जब युद्ध भूमि में आएगा तो
कुछ मजा भी आएगा

रावण सभा से क्रोध में मुझे हैरानी है आज तुम्हारी ताकत
को
चिड़िया चुग गई

अंगद रावण से ललकार कर

खड़ा है सामने अंगद भ्रम अपना मिटा ले तू
कोई बाकी रहा हो तो उसको भी बुला ले तू
अभी है वक्त लंका को तबाही से बचा ले तू
शर्म की जा है गर अब भी प्रण अपना पा ले तू

ना फिर यह वक्त मिलने का
अगर इस वक्त चुकेगा

फलक आंसू बहाए का
जमाना मुंह पर थुकेगा

रावण-अंगद से अरे ओ नामा कुल क्यों कैंची की तरह

जुबान चला रहा है और तुछ के लिए मयान से निकलता
जा रहा है
रावण अपनी जगह से उठकर
जरा ठहर
मैं तेरा अभिमान तोडुंगा
पांओ तो चीज क्या है
तुझे भी उठा कर छोड़ूंगा

पांव की ओर लपक कर अब अपना सारा जोर लगा ले
और पांव को अच्छी तरह से जमा ले

अंगद रावण से बस बस माफ कीजिए
इस प्रकार मामला साफ नहीं
हो सकता
अगर अपने किए पर पछताते हो तो भगवन के चरणों में
जाओ
वह आपको जरूर अकसमा
कर देंगे
हां मैं अकस्मा करवाने में
आपकी सहायता जरुर कर सकता हूं

रावण अंगद से राधेश्याम जा हट जा भाग जा यहां से
जा अन्यथा बुरा फल पाएगा
मैं अब तलवार चलाऊगां
जो फिर तू जुबान चलाएगा

उन तपस्वी बच्चों से कह दे
तत्पर हूं रण करने को
वह उल्टे पैरों घर जाएं
क्यों आए कटने मरने को

अंगद रावण से राधेश्याम श्री महाराज नाराज ना हो

मैं रामा दल में जाता हूं
अंतिम प्रार्थना और भी है यहां से कुछ गायब है
यदि रघुराई की शरण मैं गए तो जीते जी तर जाओगे
अन्यथा अकाल मृत्यु होगी
बेमौत स्वयं मारे जाओगे

रावण अंगद से अरे कपूत
तेरी भलाई इसी में है
कि तू यहां से चला जा
और मुझे अपनी शक्ल न दिखा बेहूदा बकवास का उत्तर
मेरी जुबान से नहीं तलवार से दिया जाएगा
और देखूंगा कि तू युद्ध भूमि में कितनी देर पांव जमाए गा

अंगद रावण से यह तेरी सरासर हिमाकत है
जिन भाइयों के भरोसे कुद रहा है उनमे तो बातें बनाने
की ही ताकत है
खैर अगर तुझे अपनी तलवार पर इतना ही अभिमान है
तो हमारी ओर से भी युद्ध का ऐलान है
अंगद और रावण संवाद समाप्त

अंगद का रावण के दरबार से संदेश लेकर रामा दल में
जाना

राम लक्ष्मण हनुमान सुग्रीव जामवंत नल नील आदि
सबका पर्दे.   के पीछे होना

राम सुग्रीव से समय बहुत हो गया है परंतु अंगत जी अभी
तक नहीं आए न जाने कुशल भी हैं

विभीषण राम से भगवन रावण जैसे हठधर्मी को
समझा कर के सीधे मार्ग पर लाना बिल्कुल निराधार है .

क्योंकि उसके
सिर पर तो

अहंकार का भूत सवार है

राम विभीषण से हां ठीक है
परंतु हमने तो नीति का पालन किया है
वह माने ना माने उसकी इच्छा है

अंगद का दंगल में से आना
हनुमान राम से देखिए भगवन अंगद जी आ रहे हैं
अंगद राम से राम के पांव में गिरकर प्रणाम भगवान
राम अंगद से चिरंजीव रहो
कहो अंगद क्या खबर लाए हो
अंगद राम से भगवन मैंने उसको अनेक बार समझाया
परंतु उस हठधर्मी ने तो
मेरी बातों को मखोल में ही उड़ाया

अंत में मैंने अपना पैर जमाया आप के प्रताप से लंका का कोई भी वीर पांव को हिला ना पाया

राम अंगद से धन्य हो तुम से
हमें यही आशा थी

सुग्रीव अंगद से अंगद यहां कुछ मुकट आ गिरे थे क्या
वह तुम ही ने फेंके थे

अंगद सुग्रीव से हां महाराज मे राजा के चारों गुण थे
जो उसका साथ छोड़ कर चले गए

अब रावण साम-दाम-दंड-भेद से हीन हो गया है

राम अंगद से तो अंत में क्या परिणाम निकला

अंगद राम से भगवन जब वह नीति के मार्ग पर न आया तो
मैं युद्ध का ऐलान कर चला आया

राम सुग्रीव से तो है प्यारे सुग्रीव अब युद्ध की तैयारी करो
सुग्रीव राम से जैसी आज्ञा हो प्रभु

सुग्रीव का अंत पर्दे के अंदर चले जाना
प्रदा गिरना दृश्य समाप्त

रावण का दरबार

मेघनाथ मंत्री दरबारी

रावण सभा से हा हा हा हा हा रामचंद्र हम से डरता है
इसलिए बार-बार अपनी खुशामद करता है ....हा हा हा हा हा ....
यह कौन सी मोम की नाक है
जो जल्दी मुड़ जाएगी
अब तो उसे अच्छी तरह हाथ दिखाऊंगा
और लंका पर चढ़ाई करने का
मजा चख आऊंगा

मेघनाथ रावण से पिता जी यदि ऐसे ऐरे गैरे लंका में आएंगे तो
हम काहे को मुंह दिखाएंगे
माना कि अंगद का पांव
पृथ्वी से नहीं हीला
मगर मुझे भी तो पूरा जोर लगाने का मौका नहीं मिला

मंत्री रावण से महाराज अब इन बातों को जाने दीजिए
और सेना की तैयारी कीजिए

और सब जगह मोर्चेबंदी कीजिए

रावण मेघनाथ से बेटा कल का सेनापति हम तुम्हें मनाते हैं
क्योंकि युद्ध का पहला दिन है
और तुम हर विद्या में निपुण हो

मेघनाथ रावण से गाना चलत

पिताजी देखियो ताकत मेरी टेक
उस रामा दल की मेरै आगे
चालै ना हेराफेरी
सर सर करते तीर चालै करुंगा बौछार में
रण मैं पड़ूं कुद कै
कोन्या मान्नू हार में

बुआ जी का बदला लूंगा
लयाऊ शिस तार में
रण में इसतरिया चालु जैसे बण कै कैहरी
पिताजी देखीयो ताकत मेरी

शस्त्र उठा कर जाता हूं
देखूं उनके हाथ में
लडूंगा युद्ध में ऐसे जैसे दिन की कर दूं रात में
इंद्रजीत है नाम मेरा देवी का हूं दास में ..पिताजी अब ना लाऊं देरी पिताजी देखियो ताकत मेरी

करता हूं प्रणाम पिता जी
युद्ध करूंगा डट डट कै
मैं मोर्चाबंदी ऐसी बनाऊं
खत्म करूंगा झटके मैं

करता हूं लड़ाई जाके दुर्गा मां को भेंट में
मार मार के कर दूं मैं सबकी डूबा डेयरी ..
पिताजी देखी ओ ताकत मेरी
बर्म शकती है मेरे पास में
बांका बणु खिलाड़ी मैं
दुश्मन को मैं ऐसे मारुं ना हमारे बाद शिकारी ....पीता जी देखियो ताकत मेरी

बेफिक्र रहो आप पिताजी मौत उनकी आ रही
अब करता हूं जाकर नए दिन की रात अंधेरी
पिताजी देखिए ताकत मेरी

मेघनाथ रावण से पिता जी अब मैं जाता हूं
अब आप बेफिक्र रहें
मैं उनका सिर काटकर
आपके सामने लाता हूं

पेज नंबर 153 रामायण 148

मेघनाथ पर्दे पर ललकार कर हा हा हा कहां है वह अयोध्या के वनवासी अब जरा मेघनाथ के मुकाबले पर तो आए

दोहा आए हैं जितने सारे ही मारे जाएंगे
आज सारे पाप के बदले उतारे जाएंगे

रामा दल में युद्ध की तैयारी

पेज नंबर 153 रामायण 148

राम लक्ष्मण विभीषण हनुमान सुग्रीव झावंत नल-नीलअगंद

राम विभीषण से कुछ मालूम है शत्रु की सेना का संचालन किसके हाथ है

विभीषण राम से हां भगवन जानते है आज का सेनापति
मेघनाथ है

राम विभीषण से क्या मेघनाथ अच्छा होशियार है

विभीषण राम से बेशक रावण की सेना को पूरा ऐतबार है
सेना की मोर्चेबंदी ऐसी गजब की करता है
शत्रु के सहस्त्र बहादुर मरे तो उन का एक मरता है

राम विभीषण से तो ठीक है
आज मैं स्वयं ही सेना का संचालन करुंगा
और उसकी मोर्चेबंदी क्षण भर में विनाश कर दूंगा

लक्ष्मण राम से भ्राता जी
आप विश्राम कीजिए
और मेघनाथ के मुकाबले पर
जाने की मुझे आज्ञा दीजिए

राम लक्ष्मण से भाई तु अभी
नासमझ हैं
और लड़ाई का पहला रोज है
आज की लड़ाई पर दोनों की हार जीत का दारमदार है

हनुमान राम से. हे भगवन जब यह खुद अनुरोध करते हैं
तो आप क्यों विरोध करते हैं आख़िर कोई खतरनाक
सूरत होगी तो हम भी साथ हैं

राम हनुमान से बहुत अच्छा यदि तुम सब की यही इच्छा
है तो
मुझे कब इनकार है

राम .हे हनुमान जी तुम लक्ष्मण के साथ रहना
क्योंकि मेघनाथ बड़ा ही मक्कार है

लक्ष्मण राम से पांव में गिरकर
जब मेरे सिर पर आपका आशीर्वाद है
तो मेघनाथ जैसों की क्या बुनियाद है

राम लक्ष्मण से प्यारे भाई जाओ और अपनी वीरता के जोहर दिखाओ

लक्ष्मण राम से जैसी आज्ञा हो भ्राता जी

पर्दा

लक्ष्मण हनुमान बाहर मेघनाथ अंदर से

वीर लक्ष्मण समर भूमि

योद्धा मेघनाथ

मेघनाथ लक्ष्मण से कौन सा वीर मेरे मुकाबले पर आया है
आकर अपनी शक्ल तो दिखाएं

लक्ष्मण मेघनाथ से आज मैं ही तेरा स्वागत करूंगा

मेघनाथ लक्ष्मण से राधे श्याम यह युद्ध स्थल है वीरों का
खिलवाड़ नहीं है बच्चों का
धारे हैं यहां कृपाणो की
बाज़ार नहीं है मिष्ठानों का

यह सूर्पनखा की नाक नहीं
पीछा ना बाली बानर का
यह नहीं शिकार है सरवन का
यह लहू हैं लंकेश्वर का है

जिन दातों का सुखा ना दूध

दुख होता है उन्हें तोड़ने में
इसलिए लौट जाओ घर को
खुश है मेघनाथ छोड़ने में

अन्यथा ताड़का वध शाला अभिमान चूर्ण हो जाएगा
खर दूषण त्रिशिरा के बाद का प्रतिघात पूर्ण हो जाएगा

लक्ष्मण मेघनाथ से राधेश्याम लंका पर रघुकुल की कमान
इस कारण आकर कड़की है
ऋषियों के यज्ञ की ज्वाला
बदला लेने के लिए भड़की है

इसलिए संभल जा इंद्रजीत
यह इंद्रिय जीत बढ़ रहा है
क्षत्रियों के काल धनु पर
शावक जग नित चढ़ रहा है

वह नहीं कहीं दब सकता है
जो बल रखता है मुष्ठों का
है रघुवंश आन का पूरा है
कर देगा चुरा दुष्टों का

मेघनाथ लक्ष्मण से बाण छोड़ कर ले अब यह बाण तेरे लिए
मौत का पैगाम लाया है

लक्ष्मण मेघनाथ से औ दुष्ट देख यह तो खाली जाता है
हनुमान का आगे आना

एक पुरुष मेघनाथ से कहिए महाराज लड़ाई का क्या हाल है आपका तो शरीर जख्मों से बेहाल है

मेघनाथ एक पुरुष से ऐसा कौन सा उपाय है
जो मैंने अपनी ओर से ना कर रखा हो किंतु इस लड़के ने तो

नाक में दम कर रखा है

एक पुरुष मेघनाथ से हे महाराज इस शक्ति बाण को क्या
धो धो कर पियोगे
या देख देख कर जिओगे

मेघनाथ एक पुरुष से इसको भी कई बार काम में ले चुका हूं
और अच्छी तरह से अजमा चुका हूं

एक पुरुष मेघनाथ से इसमें तो पाया जाता है कि
लक्ष्मण इस विद्या का उस्ताद है

मेघनाथ एक पुरुष से उस बेचारे की तो क्या बुनियाद है
पर हनुमान को इसकी रोकथाम याद है

एक पुरुष मेघनाथ से हे महाराज हनुमान को दूर करना
मामूली बात है

मेघनाथ एक पुरुष से तो मैदान हमारे हाथ है

एक पुरुषऔर हनुमान की लड़ाई अंदर चले जाना

मेघनाथ लक्ष्मण से आग लगाकर बाण हाथ में राधेश्याम
अब तक मैं खेल खिलाता था
अब खा जाने की बारी है
इस शक्ति बाण का रूप धार
आ पहुंची मृत्यु तुम्हारी है

यह ब्रहम शक्ति है ब्रहमा की
जो देवलोक से पाई थी
जिस समय इंद्र को जीता था
उस समय हाथ में आई थी

इसका मारा बेसुध होता
दिन उगते ही प्राण गवाता है
ज्यूं ही तन पर पड़ती है
तन मृत्युतुल्य हो जाता है

इसलिए संभल औ रघुवंशी
तु आज न बचने पाएगा
बाण छोड़ कर
यह इंद्रजीत भूमंडल पर
अब लक्ष्मण जीत कहलाएगा

लक्ष्मण मेघनाथ से राधेश्याम कितने भी आज पतित हो तुम
पर ब्राह्मण वंश तुम्हारा है
यह ब्रह्मा शक्ति का आदर है
जिस से सिर झुका हमारा है

अन्यथा तुम्हारी ताकत को
मिट्टी धूल कर देते
होता न प्रश्न ब्राह्मण का तो चकनाचूर कर देते

क्या चिंता है ब्रहम फांस द्वारा
यह क्षेत्रीय हारा जाता है
फिर चमकेगा कुछ घड़ियों में
अब चंद्रग्रहण आ जाता है

लक्ष्मण का गिरना
मेघनाथ का उठाने का प्रयतन

मेघनाथ लक्ष्मण को उठाने की कोशिश करते हुए हाथ लगा कर
उठाना चाहता हूं पर उठाया नहीं जाता है
मृतक शरीर है या कोई धोखा नजर आता है

पेज नंबर 156 रामायण 151

मेघनाथ चला हंस कर इस मिट्टी को ले जा कर क्या करुंगा विजय शंकर की हा हा हा

मेघनाथ का चले जाना दृश्य चालू

हनुमान का आना लक्ष्मण से
है विधाता यह क्या कर दिखाया सारी आशाओं को एकदम
मिट्टी में मिला दिया
अब भगवन के सामने
क्या मुंह लेकर जाऊंगा
लक्ष्मण को उठाना

पर्दा खोलना दृश्य

राम सुग्रीवअंगत जामंत सब खड़े है

रामा दल
में प्रवेश हनुमान का

राम हनुमान से हनुमान यह क्या है लक्ष्मण को क्या हो गया

हनुमान राम से भगवन भाग्य फूट गया आशाएं सब साथ

छोड़ गई तकदीर धोखा दे गई

दोहा बैठते थे जिनके सहारे वह सहारा गिर गया
नाथ आशाओं पर अपनी आज पानी फिर गया

लक्ष्मण मूर्छा
रामा दल

राम लक्ष्मण का सिर जांग पर रखकर
ए प्यारे भाई ऐसी विपति
के समय में ऐसी ही बेवफाई आखिर जिस बात से डरता था
वही आगे आई

विभीषण राम से लक्ष्मण का हाथ पकड़कर भगवन मेरे
ख्याल में तो लक्ष्मण सही सलामत है
और उनके चेहरे की बड़ी अयामत है

राम का गाना विलाप
ऐ लक्ष्मण वीरन जाग जरा
तुझे कैसी निंद्रा आई है... टेक

औ कहां लगी भ्राता शक्ति
जो प्राण हरण का बल रखती
किसने की है इतनी भक्ति
जो तुम से लड़ जय पाई है

मैं देख तेरे इस लक्षण को
रावण को करूं क्या भक्षण को
दे दिया था राज विभीषण को
यह वाणी झूठ कराई है

लक्ष्मण वीरन जाग जरा

मैं किस तरह अवध में जाऊंगा जाकर क्या मुंह
दिखाऊंगा
किस किसको क्या सुनाऊंगा
नारी हित खोया भाई है

लक्ष्मण वीरन जाग जरा

चेहरा तेरा हो गया रे मंद
विपदा में पड़ गये रामचंद्र
उठ रे भैया हो जावे आनंद
श्री चंद ने कीर्ति गई है

लक्ष्मण वीरन जाग जरा
तुझे कैसी निद्रा आई है

नाटक

राम लक्ष्मण से लक्ष्मण के मुंह पर हाथ फेर कर
लक्ष्मण प्यारे लक्ष्मण

पेज नंबर 157 रामायण 152

उठ जाओ अब तो बहुत सो चुके हो रो कर अफ़सोस
भैया तुम्हारे हाथ-पांव तो ठंडे हो चुके हैं
मस्तक चूम कर ओ प्यारे भाई कर चले हम से जुदाई
और मेरी आंखों का नूर खत्म हो गया
हाय मेरे जीवन के सहारे करो दीदार मेरी हालत जार जार
रो रही हैं
जिनके लिए मैं रोता हूं
वह तो गहरी नींद सो रहे हैं
न करवट लेते हैं ना किसी बात का उत्तर देते हैं

लक्ष्मण का मुंह चूमकर मेरे वीर तुझको किस दुष्ट की नजर खा गई जो ऐसी दर्द की घड़ी आ गई

सुग्रीव राम से भगवन कुछ धैर्य करो रोने को कौन नहीं रो सकता
किंतु इस प्रकार लक्ष्मण जीवित नहीं हो सकता
इसलिए सोच समझकर इनका इलाज कीजिए
और इस रोने धोने को जाने दीजिए

राम सुग्रीव से और किस का इलाज और किस की दवाई
लक्ष्मण ने तो अभी तक आंख भी नहीं खिलाई
वो अन्याई मेघनाथ तेरा वार चल गया
और लक्ष्मण को घायल कर के जीवित निकल गया
वो कमबख्त रावण
तेरे घी के दीपक जल गए
और काल के दूत तेरे सिर से टल गए
रोकर ओ प्यारी सीता
अपने छुटकारे की आस छोड़
और रावण की कैद में दिन तोड़

हे सुग्रीव जाओ और अपना राज संभालो
वीर अंगद तुम भी जाओ
और अपने चाचा के राजकाज में हाथ बटाओ
प्यारे विभीषण मैंने जो लंका का राज दिलाने का वचन दिया था उसको मैं पूरा करने से लाचार हूं इसलिए क्षमा मांगने का मोहताज हूं

विभीषण राम से अगर लक्ष्मण जी ठीक हो जाए तो
एक लंका क्या हजार लंका
इसी जगह कुर्बान कर दूं

राम हनुमान से यह कौन खड़ा है हनुमान

हनुमान रोकर हां कृपा निधान

राम हनुमान से भाई रोते क्यों हो परमात्मा की इच्छा पूरी हो गई किसी का क्या दोष है
मेरी किस्मत ही सो गई

हनुमान राम से रोककर भगवन निसंदेह मैं सख्त गलती खा गया और राक्षसों के धोखे में आ गया तलवार ले कर लीजिए
भगवन मुझे भी लक्ष्मण के बराबर सुला दीजिए

राम हनुमान से नहीं प्यारे हनुमान यह कलंक मुझ पर न लगाओ तुम्हारा कोई कसूर नहीं

राम लक्ष्मण से गाना उठ जाग मुझे पहचान रे लक्ष्मण
बीर बीर बीर
तुम बिन हे लक्ष्मण कौन बनावे
धीर धीर धीर
टेक
टुक आंख खोल हे भाई
तुझे नींद किधर से आई
तज कर सब गट अमीरी
ली मेरे साथ फकीरी

था यह मिलाप आख़िरी
था इतना सिर सिर सिर
तुम बिन हे लक्ष्मण धीर धीर धीर
तुम तोड़ मेरे से नाता
कहां चल दिए मेरे भ्राता
जब सुनेगी मैं अपनी माता
लगेगा तीर तीर तीर

मांगेगा राज विभीषण क्या
जवाब दूंगा रे लक्ष्मण
बर्बाद कर गया दुश्मन दुष्ट
वे पीर पीर पीर

अभी भरत ने मिलने आना
उनको तो मिल कर जाना
मेरी आंखों में नहीं पाना
तब तक नीर नीर नीर

तुम बिन हे लक्ष्मण वीर वीर वीर

सुग्रीव राम से भगवन युद्ध में लड़ना मरना मारना घायल होना
एक मामूली सी बात है
किंतु स्त्रियों की भांति
रोना-पीटना वाहियात है
आप धैर्य रखो अब लक्ष्मण
जी को जीवित कराएंगे
और विभीषण जी को
लंका का राज्य दिला दिलाएंगे

राम सुग्रीव से राधेश्याम
वनवास मिला था जब मैंने
तो ऊबल उठा था भाई यह
भाई की सेवा के लिए
तैयार हुआ था भाई यह

मैंने तो मां की आज्ञा से
शाही पोशाक उतारी थी
पर इसने प्यारे भाई पर
महलों को ठोकर मारी थी

राम लक्ष्मण से गाना
परदेसियों सेनाअखियां मिलाना तर्ज
मेरे प्यारे भइया तेरा ऐसे में में जाना
सह न सकेगा ये सारा जमाना टेक
युद्ध में तू ना जा मना बार बार किया था रोका था तुझको इनकार किया था.
पेज नंबर 159 रामायण154 क्या इसलिए पहना
तुने फकीरी ये बाणा
मेरे भैया तेरा

पूछेगी माता तेरी क्या मैं बताऊगां रास्ता बता दे मुझे किधर को मैं जाऊगां
पूछेगा भ्राता भरत करूं क्या बहाना
मेरे भइया तेरा

माता ने मुझे उपदेश दिया था
चुमा था माथा तेरा प्यार किया था
तीनों जा रहे हो तूम अकेला नाआना
मेरे भइया तेरा

चलते समय तूने इरादा किया था साथ निभाने का वादा किया था
किए हुए वादों को कभी न भुलाना
मेरे भइया तेरा जाना

वनों में जब से हम तीनों मिले थे तरह तरह के फूल खिले थे
सह नहीं सकता हूं मैं
इनका मुरझाना
मेरे भइया तेरा जाना

नाटक

राम लक्ष्मण पर विलाप कर
हाय अफसोस मेरा रोना धोना चिल्लाना सब बेफजुल गया
मस्तक चूमकर हे लक्ष्मण
तुम जुबान को तो हिलाओ
और मुझे एक बार
भाई कहकर तो बुलाओ

सीर हिला कर

लक्ष्मण लक्ष्मण औ मेरे प्यारे लक्ष्मण
तुझे मेरी अवस्था पर तरस नहीं आता
इस प्रकार यदि किसी बैरी के पास जाता और जाकर चिल्लाता तो कुछ न कुछ तो जरूर बकवास लेता
औअपतलक गज रफ्तार
मुझ पर परमेश्वर की मार

शस्त्रों को फेंक कर जाओ जाओ चूल्हे में पड़ो तुम
जब समय पर तुम काम ना आए
तो कौन मूर्ख है जो तुम्हारा बोझ उठाए फिरे
नहीं नहीं अभी नहीं
भाई का बदला लेकर छोड़ूंगा
और कपटी मेघनाथ का अच्छी तरह अभिमान तोडूंगा
औअत्याचारी मेघनाथ
अब समझ ले तेरा काल
तेरे सिर पर मंडरा रहा है

सुग्रीव राम से भगवन जरा तबीयत को संभालिए
प्रथम तो लक्ष्मण ईश्वर की दया से तंदुरुस्त हैं
यदि मान भी लो आपका ख्याल दुरुस्त है
फिर रणभूमि में हुआ ही क्या करता है

या तो शत्रु को मारता है या खुद मरता है
फिर लक्ष्मण जी की ओर से आपका यह मिथ्या ख्याल है
और ऐसी अवस्था में जीत का मुंह देखना सख्त मुहाल है

राम सुग्रीव से हां भाई ऐसा कौन है जो उपदेश करना नहीं जानता हो परंतु ऐसा कोई है

जो दूसरों का दुख अपने जैसा जानता हो
कल तुम ही बाली के मृतक शरीर पर धाएं मार मार कर रो रहे थे
परंतु वह समय तुमको याद नहीं हे सुग्रीव लक्ष्मण जैसा भाई तो
दुनिया में दीपक लेकर ढूंढने से भी नहीं मिलता
प्यारे लक्ष्मण एक बार तो मुंह से कुछ बोलो
प्यारे लक्ष्मण

दोहा कोई कहता दीवाना
कोई कहता है सौदाई
मैं सब से यही कहता हूं ठीक है भाई

विभीषण राम से भगवन आपको विश्वास है
कि यह रोने धोने से कोई संतोषजनक परिणाम होगा
अथवा लक्ष्मण जी को खुद आराम होगा

राम विभीषण से हे प्यारे विभीषण इस बात को कौन नहीं जानता
पर क्या करुं मन ही नहीं मानता
पर आप ही कुछ धीर बधाएं

विभीषण राम से लंका में एक सुषेण वैद्य विख्यात नाम का
है अपने
वह औषध पूर्ण जानता है

सब भांति का काम है अपने
मेरा जाना तो ठीक नहीं
जा कर आने में दुविधा है
जो लंका से परिचित हो
वही उसे ला सकता है

राम हनुमान से प्यारे हनुमान जी इस समय और कौन जाएगा
और यह कठिन काम किसी के
बस में नहीं आएगा

हनुमान राम जी जैसी आज्ञा हो प्रभु

पर्दे के अंदर से हनुमान जी का सुषेण वैद्य को लाना सुला देना

राम का गाना
उठ ना जरा ए वैद्य जी
बेड़ा मेरा जाता बहा टेक

उठिए जरा कृपा कीजिए तेरे चरणों में सिर रखा है
मेरे दिल में चोट लगी दुख मेरे से ना सहा है उठना जरा ऐ वैध

मांगेंगे राज विभीषण क्या शीश मैं दूंगा रे लक्ष्मण
सीता जी रहेंगी कैद में झूठा मेरा वादा रहा उठना जरा वैद्य...

यहां लाने का आपका
यही मतलब है वैद्य जी
श्रीराम ने तेरे यूं चरणों का अंगूठा गहा उठना वैद्य जी ....

नाटक
सुषेण वैद्य राम से मैं कहां आ गया हूं

मुझे यहाँ कौन लाया है
मैं तो लंका में सोया हुआ था
तुम बोलते क्यों नहीं

राम सुषेण वैद्य से हे वैद्यराज जी आप रामा दल में आए हुए हैं
आप डरिए नहीं हमने आपको बुलाया था
मेरे भाई लक्ष्मण बेहोश है
आप नाड़ी देख दवा बूटी कीजिए

वैद्य सुषेण राम से राधेश्याम
मैं वैद्य दशानन के घर का
किस तरह यहां का काम करूं
गलत होगा यदि बैरी को लंकापति के आराम करूं
जिसमें प्रत्यक्ष बुराई है
वह कैसे कर्म किया जावे
हे राम आज्ञा देते हो तो
इस समय अधर्म किया जावे

राम सुषेण वैद्य से जिस धर्म हेतु निज राज गया
जिसमें पृत्त देव का मरण हुआ
जिस धर्म प्रिय भरत झूठा
सीता प्यारी का हरण हुआ
उस धर्म सत्य पर लक्ष्मण भी मर जाए तो मर जाए
आवाज यही होगी अपनी हां धर्म ना किसी का जाए

सुषेण वैद्य राम से राधेश्याम हे नाथ धर्म चर्चा की थी
केवल इस समय परीक्षा को
अन्यथा दास तो करने आया है स्वामी की सेवा को
प्रभु सचमुच है धर्म अवतार
मैं दर्शन पाकर धन्य हुआ
मेरा जड़ जीवन जड़ शरीर

इन शब्दों से चैतन्य हुआ

सुषेण वैद्य लक्ष्मण की नाड़ी देखकर

राम सुषेण वैद्य से क्यों वैद्य जी उम्मीद है या बिल्कुल आशा नहीं

सुषेण वैद्य राम से अवस्था तो अच्छी है
किंतु जिस औषध की जरूरत है वह मेरे पास नहीं है

राम सुषेण वैद्य से वह कौन सी औषधि है
संभव है खोज करने से मिल जाए

सुषेण वैद्य राम से गाना
ना मेरे बस की बात ना मेरे पास दवाई टेक

कहते मुनि रे मुनि वैद्य पुकारा
न कोई दीखत वहां जावन हारा
वह तो सात सौ कोस बताई
ना मेरे बस की बात ना मेरे पास दवाई

कोई बलि रे तुम जल्दी ले जाओ
दिन निकलने से पहले रे आओ
देना ना सूरज दिखाई
नाम मेरे बस की.....

वह ऐसी है बुटी ना गोटे से ऊंची
कली-कली रे भवरा रस सींचे
देती है जगती दिखाई
नाम मेरे बस की बात...

सुषेण वैद्य राम से राधेश्याम सूरज उगने से पहले ही
मिल जाए जड़ी तो संजीवन है
अन्यथा असंभव है उतना

विष ने निर्जीव किया तन है

अत्यंत दूर है औषध वह
आ सकती नहीं रात ही में
ऐसा कौन है योद्धा यहां
जो लाए इसे रात ही में

राम हनुमान से गाना तर्ज लावणी
हनुमत बोले नैया डोले
तू ही लगा दे पार रे
बूंटी लाओ बचाओ भैया को टेक

न जाने किस बैरी ने ये ऐसा बाण चलाया है
आधी रात बीत जाने को
अब भी होश न आया है
भैया ना बोले बाण विष घोले अब तू ही सुन ले पुकार रे
बूटी लाओ......

जन्म तेरा गुण ना भूलो जो
तूने साथ निभाया रे
युग युग में तेरी पूजा रे होगी
तूने ऐसा नाम कमाया रे
जल्दी तैयार हो ले लंका से पार
होले
तेरी रक्षा करेगा करतार रे
बूंटी लाओ......

हनुमान सुषेण वैद्य से राधेश्याम
भूतल में हो या नभ में हो
पर्वत में हो या सागर में हो
लाएगा दास अभी उसको
चाहे हो ब्रह्मा के घर में

बतलाओ उसका रंग रूप
किस ठोर हाथ वह आएगी
रघु राई अगर सही है तो
रात रहे आ जाएगी

पेज नंबर 163 रामायण 158

सुषेण वैद्य हनुमान से राधेश्याम अच्छा बलवीर बढ़ो आगे
तुम लाओगे औषध वह
उत्तर में जो द्रोणगिरी है
उस पर पाएगी औषध वह

संजीवनी उसको कहते हैं
जवाला की भांति चमकती है
यदि भोर तक नहीं आई तो
जान नहीं बच सकती है

हनुमान सुषेन वैद्य से या तो बुंटी लेकर ही आऊंगा
नहीं तो तुम्हें शक्ल नहीं दिखाऊंगा

रावण का दरबार

रावण गाना सुनने के बाद

रावण सभा से वाह वाह आज तो आनंद आ रहा है
बेटा मेघनाथ तू वास्तव में
बलधामं है लक्ष्मण को मारना तेरा ही काम था
अब राम अकेला क्या करेगा स्त्री और भाई के वियोग में
सर मरेगा हा हा हा हा हा हा

मेघनाथ रावण से अभी क्या है देखते जाइए पिताजी
एक एक की छाती को

किस प्रकार तोड़ूंगा
जितने लंका पर चढ़ आए हैं
उन्हें एक भी जीवित नहीं छोड़ूंगा

रावण मेघनाथ से क्यों नहीं मुझे तुमसे यही आशा थी

दोहा युद्ध में करके पराजित
एक दिन राम को
है मुझे विश्वास पुरा
रोशन करेगा मेरे नाम को

दूत रावण से महाराज की जय हो रामा दल में लक्ष्मण के रोग का उपचार किया जा रहा है
दूत रावण से हां महाराज संजीवनी बूटी लाने के लिए हनुमान द्रोणगिरि पर्वत पर जा रहा है
यदि हनुमान प्रातकाल से पहले बूटी ले आएगा तो लक्ष्मण अवश्य जीवित हो जाएगा

रावण कालनेमि को याद करना कालनेमि का हाजिर होना

रावण कालनेमि से देखो कालनेमि तुम लंका के पुराने हितेषी और आज्ञाकारी हो
इसलिए जल्दी जाओ और कपट धोखे का जाल बिछाओ
हनुमान संजीवनी लाने के लिए द्रोणगिरि पर्वत पर जा रहा है
तो मार्ग में पहुंचकर
कोई मायावी जाल फैला
जिससे वह पर्वत पर ना पहुंचने पाए और सूर्य निकल आए

कालनेमि रावण से जैसी आज्ञा हो महाराज

पर्दा गिरना

कालनेमि दंगल से हां द्रोणा चल पर जाने का रास्ता यही है
मैं अपनी माया से साधु का भेष बनाकर अपना आसन जमाता हूं

साधु का वेश बनाकर बैठना

कालनेमि भक्ति करते हुए राम राम राम राम राम
साधु करुणा का भंडार तू ही निराकार तू ही जीवन का आधार

हनुमान का दंगल से आना मंच पर आकर दंगल की तरफ मुह करना
ओम प्यास बहुत लग रही है
सामने किसी मुनि का
सुंदर आश्रम है
चलो और वहां जाकर जल पीऊं

कालनेमि हनुमान को आते देखकर जय कौशल्या जी श्री रामचंद्र की जय संकट मोचन पतित पावन भगवान की जय हो

हनुमान कालनेमि से हाथ जोड़कर प्रणाम मुनिवर

कालनेमि हनुमान जी चिरंजीव रहो कल्याण हो

हनुमान कालनेमि से मुनिराज आजकल रावण राम संग्राम हो रहा है उसका क्या परिणाम होगा

कालनेमि हनुमान जी हां यह संग्राम मैं यह ज्ञान दृष्टि से शताब्दी देख रहा हूं
निसंदेह राम की जीत और दुष्टों का संहार होगा

हनुमान कालनेमि से धन्य हो महाराज अच्छा मुनिवर मुझे प्यास लग रही है कुछ जल हो तो मेरी प्यास बुझा दीजिए

कालनेमि हनुमान से कमंडल देकर इस में से कुछ जल है लो इसे पीकर अपनी प्यास बुझा और फिर उपदेश लो

हनुमान कालनेमि से हे मुनिवर इस थोड़े जल से मेरी प्यास नहीं बुझेगी

कालनेमि हनुमान से अच्छा तो सामने सरोवर है
उस पर चले जाओ और अपनी प्यास बुझाओ
परंतु लौट कर आना गुरु और मंत्र लेते जाना

हनुमान का पर्दे के पास पहुंचना डंकनी का पाव पकड़ना

पेज नंबर 165 रामायण 160

हनुमान ह ह मेरे पांव मैं कया चिपक गया

हनुमान का पांव मारना असली रुप में डंकनी

डंकनी हनुमान से धन्य हो राम भक्त हनुमान तुम धन्य हो

हनुमान डंकनी से तुम कौन हो यहा किस प्रकार आई हो

डंकनी हनुमान से हे नाथ मैं स्वर्ग की अप्सरा हूं
मुनि के श्राप से डकंनी बनकर इस तालाब में पड़ी हुई थी

आज मुझे आपके चरण छू कर
मेरा कल्याण हो गया
देखिए महाराज यह मुनि नहीं है
यह रावण का भेजा हुआ राक्षस है जो आप के मार्ग में
बाधा डालने के लिए मुनी का भेष बना कर आया है
आप इससे सावधान रहें
और अब मैं तो अपने लोक में जाती हूं

हनुमान कालनेमि के पास पहुंच कर

कालनेमि हनुमान से आओ हनुमान बैठो मैं तुम्हें गुरु मंत्र देता हूं

हनुमान कालनेमि से नहीं महाराज पहले गुरु दक्षिणा ले लीजिए और फिर उपदेश दीजिए

हनुमान का कालनेमि को मुक्का मारना कालनेमि का हनुमान को कालनेमि का गर्जना

कालनेमि हनुमान जी अरे मैं तो मर गया दुष्ट का साथ दे कर

लक्ष्मण मूर्छा रामा दल

राम लक्ष्मण से उठो भाई गले से लगों दुख सहा नहीं जाता है

आंखों से आंसू बहे मन में संतोष नहीं पाता है
लक्ष्मण मेरे जीवन के सहारे
लक्ष्मण मेरी कामनाओं की तस्वीर तुम कहां हो
तुम्हारा वह सच्चा प्रेम कहां है
सहन संकट किए दुनिया के वास्ते तूने चूने हैं फूल की जगह कांटे मेरे वास्ते

औह रात भी पंख लगाए दौड़ी जा रही है
न जाने इसे क्या मौत खा रही है ज्यों ज्यों रात खत्म होती जाती है तो सूर्य देवता तू संसार के वास्ते प्रकाश लाएगा परंतु तेरे उदय होते ही लक्ष्मण सदा की नींद सो जाएगा
परमेश्वर के वास्ते कुछ तो यतन बना ले
और थोड़ी ही देर के लिए अपने आपको कहीं छुपा ले
अन्यथा आपकी गति का यही हाल रहा तो हनुमान जी का सही वक्त पर पहुंचना सख्त मुहाल है

पर्दा

हनुमान बूंटी लेकेआना

अयोध्या

भरत दृश्य आरंभ हनुमान पहाड़ उठाया ना

भरत मन में यह कोई राक्षस है जो पहाड़ उठाए जा रहा है यह अयोध्या पर ना डाल दे

पेज नंबर 166 रामायण 161

अब मैं अपना कुशल बाण मारता हूं

बाण का मारना

हनुमान भरत से हाय राम मुझे क्षमा करना मैं सही वक्त पर नहीं पहुंच पाउंगा

भरत घबराकर हनुमान जी आप कौन हैं
राम का भक्त बड़ी भूल हुई

ऐ विधाता क्या मैं सारे जीवन
राम से बैर करता रहूंगा

रोकर यदि मैं मन कर्म से प्रभु के प्रति सच्चा प्यार रखता हूं
तो आप इस बाण की चोट से मुक्त हो जाएं
और सारी थकान खो कर राम का हाल सुनाओ
उठो एक बार फिर बोलो

हनुमान भरत से जय कौशल्या धीरज भगवान श्री रामचंद्र की जय

भरत हनुमान से जय कोटि-कोटि बार बार जय कहो कपि राज तुम कौन हो
यह पर्वत उठाए कहां जाते हो
हनुमान भरत से कुछ ना पूछो महाराज इस समय रामा दल पर बहुत संकट आया है
मेघनाथ के शक्ति बाण से
लक्ष्मण मूर्छित हो गए हैं
मैं उनके लिए संजीवनी ले जा रहा हूं
अब लंका की ओर जा रहा था ऐतात मैं किष्किंधा नरेश सुग्रीव का मंत्री पवनसुत हनुमान हूं

भरत हनुमान से हे देव में कितना अभागा हूं मैंने संसार में जन्म ही क्यों लिया
भरत हनुमान से हे कपिराज तुम्हें जाने में देर लगेगी
इसलिए पर्वत सहित मेरे बाण पर चढ़ जाओ
और तुरंत लंका में जाकर प्रभु का संकट मिटाओ

हनुमान का बाण पर पांव रखना
हनुमान भरत से नहीं महाराज मैं आपके प्रताप से बाण समान ही जाऊंगा और प्रभु के वास्ते पवन बनकर

जाऊंगा

भरत हनुमान का दृश्य समाप्त

रामा दल

लक्ष्मण मूर्छा चालू

राम लक्ष्मण से गाना
नैया तो रे भैया लोट चली मझेदार टेक
नल नील अंगद सुग्रीव तुम क्यों हो बेजार
अपने अपने जाऔ वतन को अवध पति गया हार
नैया तो रे भइया ढुब चली मझदार

विभीषण को दिया राजतिलक और झुठा हुआ करार
निशचर कुल की जीत हुई और हुई हमारी हार
नैया तो रे भइया.....

रघुकुल को दाग लगा और जीने को धिक्कार

एक औरत के वास्ते भाई का हुआ संघार
नैया तो भैया...

अशोक बाग में जनक दुलारी मर जाएंगी टक्कर मार
दोनों भाई साथ जलेंगे करो चिता अब तैयार
नैया तो भैया.....

दोहा अकेली लकड़ी ना जले ना उजाला हो
लक्ष्मण भाई मार के राम आज अकेला हो
राम लक्ष्मण से दोहा राधेश्याम

लक्ष्मण ही नहीं जब
तो जीने से क्या काम

बंधुवरो तुमसे विदा होता है
अब यह राम
इतना करना हम दोनों की छातियां मिला देना भाई
एक ही वस्तर में दोनों को कसकर लिपटा देना भाई

यदि चिता बनानी मुश्किल हो तो जल में यहां वहा देना

जलनिधि की ठंडी लहरों में दोनों को साथ सुला देना

दोनों के रुधिर से इतना लिख देना सागर के तट पर

भाई भाई की यादगार है इसी सागर के मरघट पर

यशवंत सिंह राम आकाश की ओर देख कर
सुग्रीव जी ऐसा प्रतीत होता है सूरज निकलने वाला है
क्योंकि पूर्व में उजियाला है
ओ गज्वी सूर्य जरा ठहर नहीं तो गजब हो जाएगा

सुग्रीव राम से नहीं भगवन ऐसा क्या अंधेर है सूरज
निकलने में अभी बहुत देर है

राम लक्ष्मण से रोकर बोलो लक्ष्मण बोलो कुछ अब मुंह
से बोलो हां मैं क्या जानता था कि
वनों में भाई का वियोग होगा
यदि मैं यह जानता तो पिता के वचनों को कभी नहीं
मानता

दोहा बुरा बन कर ही जी लेता
सहन करता बुराई को
जगत की गालियां सहता
मगर खोता न भाई को

सुग्रीव राम से हनुमान को आते देख कर
देखिए भगवन हनुमान जी चले आ रहे हैं और बड़ी
शीघ्रता से कदम बढ़ा रहे हैं

पेज नंबर 168 रामायण 163

हनुमान का पहुंचना सभी वानर प्रसन्न होकर
बोलो पवनसुत हनुमान की जय

हनुमान राम से प्रणाम भगवन

राम हनुमान से धन्य हो केसरी नंदन तुम धन्य हो
मैं आज तुम्हें वरदान देता हूं
कलयुग में तुम्हारी घर घर में पूजा होगी

वैद्य सुषेण बूटी लेकर लक्ष्मण के मुंह में पिसकर डालना
लक्ष्मण का होश में आना

लक्ष्मण का खड़ा होना भाई से घले मिलना

आठवां दिन शुरू

पेज नंबर 168 रामायण का पेज163

रावण का दरबार मेघनाथ परहसत मंत्री

रावण मंत्री से महा मंत्री दरबार में गाना पेश करो
मंत्री रावण से जैसी आज्ञा हो महाराज गाने वाली अप्सरा
दरबार में हाजिर हो

रावण सभा से हा हा हा लंका की सान भी क्या सान है

दोहा बन चुके हैं दास मेरे सब
रंक से चौपाल तक

जां गड़ी है नीव मेरी
राज्य की पाताल तक
सामने जो आ गया
फोरन मसल डाला गया
सिर उठाया जिसने
उसका सिर कुचल डाला गया

हा युद्ध भी चलता रहे
और आनंद का दरबार भी लगा रहे
रण के बाजे भी बजे
पायल की झंकार भी .
वाह संगीत क्या जादू है

दूत आकर रावण से महाराज की जय हो
महाराज लक्ष्मण की मूर्छा खुल गई है अब शत्रु फिर युद्ध की तैयारी कर रहे हैं

रावण दूत से क्या कहा मूर्छा खुल गई
दूत रावण से. हां महाराज

रावण सभा से औ अनर्थ हो गया सब बना बनाया काम अब बिगड़ गया

मेघनाथ रावण से पिता जी कुछ परवाह नहीं जिन बुझाऔ ने उसे मूर्छित किया था वह भुजाएं अब उसे सुरपुर पहुंचा देंगी

रावण मेघनाथ से पहले मुझे कुछ सोचने दो सब लोग जाओ और आराम करो

सबका चले जाना

रावण अकेले हां अब क्या करूं
और आए हुए संकट को कैसे टालू बस बस अब उचित यही है कि कुंभकर्ण के शयन गृह में जाऊं और उसे जगा लाऊं
यदि युद्ध भूमि में चला गया तो सबको काल समान खा जाएगा

पर्दा गिरना

कुंभकरण का महल

रावण मंत्री से महामंत्री आप कुंभकरण को जगाओ जिस तरह हो सके जल्दी जगाओ

महामंत्री रावण से जैसी आज्ञा हो महाराज

महामंत्री कुंभकरण से महाराज जल्दी जागिए लंकापति तशरीफ ला रहे हैं
चाचा कुंभकरण जल्दी उठो महाराज आए हुए हैं

रावण मंत्री से उसको ढ़ोलक बाजों से जगाओ
नहीं जागे तो हाथी उसके नाक में भर दो

कुंभकरण अंगड़ाई लेकर पानी लाओ मदिरा लाओ खा पीकर डकार ले कर
वह पापी कौन है जिसने मुझे कच्ची नींद से जगाया है

रावण कुंभकरण से हे भाई मुझ पर महान संकट आया है इसलिए तुझे जगाया है

कुंभकर्ण रावण से कौन रावण

कहो भाई ऐसी क्या आपत्ति आई जो तुम्हारी दशा
कितनी मलिन बनाई

रावण कुंभकरण से कुछ ना पूछो भाई
आजकल मैं संकट में हूं
अयोध्या के दो राजकुमारों ने सूर्पनखा की नाक काट कर
घोर अनर्थ कर डाला
जब खर दूषण बदला लेने गए तो उन्हें भी मार डाला

कुंभकर्ण रावण से यह तो बड़ा अनर्थ हुआ फिर तुमने
क्या किया

रावण कुंभकरण से जब राम लक्ष्मण ने अधिक कदम
उठाया
तो मैं राम की स्त्री जानकी को चुरा लाया

कुंभकर्ण रावण से राधेश्याम
क्यों गई वहां सूर्पनखा
क्या काम भला था जाने का
कोई तो कारण होगा
लड़कों से नाक कटाने का

पेज नंबर 170 रामायण 165

इस बे मतलब के झगड़े में
लंका की सत्यानाशी है
भाई अब तिथियां क्या गिनते हो अपनी भी पूर्णमासी है

यशवंत सिंह अरे भाई साहब तूने यह बहुत बुरा किया
राज पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया
जिसे तुम जानकी कहते हो
जगत की जननी जगदंबा है निशाचरों का नाश करने
वाली साक्षात कालिका है
और स्त्री को चुराना भी अन्याय है पाप है

रावण कुंभकरण से तो तुम इतने कायर हो गए हो की
भाई के शत्रुओं की बढ़ाई करने लगे हो

कुंभकर्ण रावण से बड़ाई नहीं सच्ची बात है
नारद जी ने मुझे उपदेश दिया था कि जब तुम परनारी
चुरा कर लाओगे
तो राक्षसों का नाश होगा

रावण कुंभकरण से मालूम होता है कि मांस मदिरा नहीं
मिलने पर तुम्हारी बुद्धि ठिकाने नहीं आई

मंत्री से मंत्री जी इसे मांस मदिरा में डूबा दो

कुंभकरण खा पीकर रावण से गर्ज कर
अरे भाई तू क्यों घबराता है
देख अब युद्ध में शत्रुओं का काल जाता है

कुंभकरण का जाना

पर्दा गिरना

रामा दल

राम लक्ष्मण सुग्रीव अंगद विभीषण.   नल नील

विभीषण राम से भगवन आज के युद्ध को
साधारण युद्ध ना समझीए
बल्कि एक महा प्रलय की घड़ी है

सुग्रीव विभीषण से आप कुछ चिंता न करें
और मुझे उस के मुकाबले पर जाने की आज्ञा दीजिए

राम सुग्रीव से आप इस हट को जाने दो और कुंभकरण से मुझे ही हाथ मिलाने दो

सुग्रीव राम से आखिर कुंभकरण कोई खुदा तो नहीं
यदि ऐसी अवस्था हुई तो
आप भी हमसे जुदा तो नहीं

पर्दे पर कुंभकरण का ललकारना

कुंभकरण तलवार निकाल कर जरा सामने आओ
वह कौन काल का अभिलाषी है मेरी तलवार भी मुद्दत से प्यासी है

सुग्रीव कुंभकरण से जरा आगे आ ताकि तेरी प्यास बुझाऊं

कुंभकरण सुग्रीव से तुभी बोलने को मरता है उल्लू कहीं का

सुग्रीव कुंभकर्ण से मरने के लिए तैयार हो जा क्यों ज्यादा अ़कड़ता है

दोनों की लड़ाई सुग्रीव का मूर्छित होना

हनुमान कुंभकरण से ठहर ठहर कहां जाता है

कुंभकरण हनुमान से क्यों अपने काल को बुलाता है
क्या तू भी सुग्रीव के पास पहुंचना चाहता है

हनुमान कुंभकरण से अरे कायर किस करतूत पर इतना अकड़ रहा है

और एठ एठ कर बातें कर रहा है

दोनों की लड़ाई हनुमान का मूर्छित होना

अंगद राम से हे भगवन कुंभकरण गजब ढा रहा है
जिस तरफ बढ़ता है मैदान साफ करता जा रहा है

राम अंगद से निसंदेह कुंभकरण एक प्रत्यक्ष काल है
परंतु जो कुछ करना था कर चुका है बल्कि कुंभकरण को
अब जिंदा न समझो वास्तव में वह मर चुका है

कुंभकरण राम से आओ मरने वालो अब जरा कुंभकरण
के मुकाबले पर आओ
इधर उधर ना छिप कर जान बचाओ

राम कुंभकरण से आगे बढ़कर बस खड़ा रह आगे कहां
आता है

कुंभकरण राम से हंसकर छोटी उमर और इतना साहस
नन्हा सा बालक और कुंभकरण से युद्ध हा हा हा हा हा
हा हा

दोहा मच्छर उड़ा है चांद को पकड़ने देखना
चींटी चली है शेर से लड़ने देखना

राम कुंभकरण से अरे अभिमानी इतने अहंकार में क्यों
आता है
आगे बढ़ कर हाथ क्यों नहीं
दिखाता है

कुंभकरण राम से हंसकर हाथ तुझे दिखाऊं हाथ

दोहा बच्चों का खेल युद्ध का पासार समझ लिया
क्या कुंभकरण भी कोई कायर समझ लिया

राम कुंभकरण कुंभकरण तु नहीं जानता साहसी पुरुष
कहते नहीं करते हैं

दोहा कर्म करना कठिन है
कहना जीन्हे आसान है
कायरों की दुनिया में
बस यही एक पहचान है

राम कुंभकरण से कुंभकरण आज मैं तेरा सारा नशा
उतार दुगां
याद रख युद्ध में तुझे अवश्य मारूंगा

दोहा कह दिया जो मुंह से
करके उसे दिखाऊंगा
यह मेरा अटल निश्चय है
स्वर्ग पुर तुझे पहुंचाऊंगा

कुंभकरण राम से जरा आगे हो भाग जाने का दांव लगा
रहा है याद रख

दोहा मैं नहीं बच्चा जिसे
घाटों सेतु वह काटेगा
बात कितनी भी बना
ना बच कर जिंदा जाएगा

कुंभकरण राम से अच्छा तो संभल बुजदिल जाने ना
पायेगा

राम तीर छोड़कर अरे ओ पापी यम के द्वारे चल
कोई रोने भी नहीं आएगा

पर्दा कुंभकरण का सफाया

रावण का जंगी दरबार

गाने के बाद
रावण सभा से युद्ध दिन-प्रतिदिन भयंकर होता जाता है
परंतु हमारा पक्ष जीतने में नहीं आता है
देखो आज का युद्ध किसके हाथ रहेगा
और कुंभकरण की कहां तक बात रहगी

दूत रावण से महाराज की जय हो पृथ्वीराज अंधेरा हो गया बली कुंभकरण भी गहरी नींद सो गया

रावण दूत से चौंक कर क्या कहा कुंभकरण मारा गया

दूत रावण से हां महाराज
रावण दर्द में बस बस निसंदेह अब लंका के बुरे दिन आ गए
जो ऐसे-ऐसे योद्धा काल की गोद में समा गए

मेघनाथ रावण से पिता जी चिंता की क्या बात है
आज समझ लो मैदान हमारे हाथ है

रावण मेघनाथ से नहीं नहीं अब उन पर विजय पाना कठिन है

मेघनाथ रावण से कठिन किस लिए है
क्या मैं बलहीन हो गया हूं
क्या देवताओं को परास्त करने वाला बल सो गया है

नहीं पिताजी आप घबराएं नहीं

दोहा कसम है आपकी
मैं आज वह कोतूक दिखाऊंगा
कि एक चार और फिर चार के सो सो बनाऊंगा

समय बतलायेगा उस
राम का परिणाम क्या होगा
प्रलय का नाच होगा
आज का संग्राम क्या होगा

रावण मेघनाथ से अच्छा बेटा जाओ
युद्ध में वह कौशल दिखाओ
जिससे त्रिलोकी त्राहि-त्राहि बोल जाए
और भय के कारण शत्रु की छाती खुल जाए.
पेज नंबर 169 रमायण 164

मेघनाथ रावण से दोहा मैं मर जाऊंगा कर दूंगा कमाल
हाथ देखेंगे मेरे राम लक्ष्मण धरती कर दूंगा लाल रावण
हा हा हा हा हा

राम दल

राम सुग्रीव अंगद हनुमान लक्ष्मण विभीषण

राम विभीषण से प्यारे विभीषण रावण की ओर से आज
सेना का संचालन करने वाला कौन है

विभीषण राम से भगवन आज फिर मेघनाथ लड़ने आया
है

राम विभीषण से तो आने दो मेरा भी हौसला बढ़ा जा रहा
है

लक्ष्मण राम से हाथ जोड़कर भ्राता जी आज के युद्ध में
मुझे ही जाने दीजिए

राम लक्ष्मण से भाई वह राक्षस बड़ा कठोर व पराक्रमी है
तुम्हारे काबू में नहीं आएगा

लक्ष्मण राम से तो बात ही क्या है आपके चरणों की
सौगंध खाकर कहता हूं कि
आज उसे अवश्य मारूंगा
और शक्ति बाण का बदला
भली प्रकार उतारूंगा

क्रोध में दोहा रघुकुल की आन है मुझको
धनुष और तीर की सौगंध
कसम माता सुमित्रा कि
मुझे रघुवीर की सौगंध है

लड़ूंगा विशव शक्ति से
ना -पग पीछे हटाऊंगा
यदि यमराज भी होगा तो
वध करके ही आऊंगा

राम लक्ष्मण से अच्छा भ्राता
यदि तुमने प्रण ही ठान लिया है
तो जाओ मेरा आशीर्वाद आपके साथ है
मगर एक बात का ध्यान रखना
राधेश्याम सती प्रमिला सलोचना जो मेघनाथ की नारी है
तिरू भवन में विख्यात साध्वी
है वासु की राजकुमारी वह

इस जगह में उत्तम श्रेणी की

वह पति व्रता कहलाती है
उनके व्रत की है शक्ति सदा
स्वामी को विजय दिलाती है

ऐसी सतवंती के पति का सिर
अगर भूमि पर आएगा
कपि दल तो किस गिनती में है संसार भस्म हो जाएगा

लक्ष्मण राम से अच्छा भैया आपका आशीर्वाद मेरे साथ है
तो विजय लक्ष्मण के हाथ है

योद्धा मेघनाथ ....युद्धवीर.   लक्ष्मण

मेघनाथ पर्दे पर आओ ऐ मौत के शिकारो
कौन मरने के लिए आया
जरा शक्ल तो दिखाएं

लक्ष्मण मेघनाथ से ललकार कर सावधान अरे कायर अब भी तू सिर पर छा गया

मेघनाथ लक्ष्मण से अरे मूर्ख पिछली मार को इतनी जल्दी भूल गया जो आज फिर सामने आ गया

दोहा जिसने बालक जानकर
पहले तुझे मारा नहीं
जिसके आगे काल सा
बलवान भी ठहरा नहीं

लक्ष्मण मेघनाथ से अरे कायर अब तो कुछ सोच
देख मेघनाथ इधर देख इस धनुष
और बाण को देख

फिर विष्णु के वरदान को देख

दोहा   तेरह वर्ष तक भूमि की
सैया पर सोया नही
किया भोजन फलों का
विजय पाई है निंद्रा पर

किया काम को बस में
लगाई चैन को ठोकर
मिटाया अपने जीवन को
चला संन्यास के पथ पर

उठाए कष्ट इतने है
तब कहीं पूरा प्रण होगा
समझले आज निश्चय ही
तेरा स्वर्ग पूरी गमन होगा

मेघनाथ लक्ष्मण से ओम मूर्ख छोकरे ऐसी असंभव बातें
ना बना तू नहीं जानता मैंने विकराल का गला तोड़ा है
लक्ष्मण मेघनाथ से हो अभिमानी तू नहीं जानता
कि फूस की डेरी को एक छोटी सी चिंगारी जला देती है
और एक बड़े वृक्ष को एक छोटी सी कुल्हाड़ी गिरा देती है
मेघनाथ लक्ष्मण से दोहा कर्म भूमि है यहां बच्चों की
पाठशाला नहीं
युद्ध का मैदान है
खेल का पाला नहीं

लक्ष्मण मेघनाथ से क्रोध में औ राक्षस जुबान को लगाम
दो और वीरों की तरह चोट को रोक

मेघनाथ लक्ष्मण से अच्छा होशियार हो जा मुझ से
मरकर ही जाएगा

लक्ष्मण मेघनाथ से अच्छा होशियार होजा और मरने के लिए तैयार हौजा
मेरे हाथ से आज मर कर ही जाएगा

दोनों की लड़ाई मेघनाथ का मारा जाना
लक्ष्मण ने मेघनाथ का सिर काटना पड़ता

सती सुलोचना का महल साथ में बांदी

सुलोचना अपने मन में हाय मेरा दिल आज बुरी तरह धड़क रहा है और कलेजा आप ही आप फलक रहा
जिस और मेरी दृष्टि जाती है
प्राण प्यारे की सूरत नजर आती है न जाने युद्ध का क्या परिणाम होगा किस किस बेचारे का काम तमाम होगा

सहेली सुलोचना से प्यारी सुलोचना आज तुम्हारा मन इस प्रकार क्यों उदास है
सुलोचना सहेली से क्या बताऊं जब से वह युद्ध में गए हैं तब से मेरी तबीयत कुछ घबरा रही है
सहेली सुलोचना से तुम व्यर्थ ही अपने मन को चिंता में डाल रही हो भला हमारे युवराज से मुकाबला करने की किसकी मजाल है

सुलोचना सहेली से यह तुम्हारी गलती है
किसी की एक सम्मान नहीं चलती है
आज चढ़ती है तो कल डलती है फिर भी छिन्न-भिन्न होकर ही टलती है
चौकं कर.. देखना देखना सामने यहां क्या वस्तुओं गिरी

सहेली सुलोचना से हाय हाय यह तो किसी अभागे की भुजा है

सुलोचना सहेली से जरा पहचानो तो सही यह किसकी भुजा है क्योंकि बाण इसमें अभी तक चुभा है

सहेली सुलोचना से प्यारी सुलोचना इसके हाथ में तो शाही अंगूठी है
सुलोचना रोकर हाय-हाय यह तो मेरी ही तकदीर फूटी है
रोना हे

प्राणनाथ कैसे कटा आपका हाथ मेरा मन तो पहले ही बैठा जा रहा था और युद्ध का परिणाम दूर से नजर आ रहा था
बताओ प्राणनाथ यह कैसे हुआ...

हाथ का लिखकर बताना

राधेश्याम शेषअवतार है लक्ष्मणलाल उनके द्वारा संघार हुआ
इस बैर भक्ति से मुक्ति हुई
इस रण कारण उद्धार हुआ

धड़ तो लंका के द्वारे हैं
शीश सुरक्षित हैं रामा दल में
आत्मा अभिलाषी विचल रहा
सुख से अंततः के आंचल मे ं

सतवंती उसी सत्य से
लंका में ज्योति जगा देना
कहते हैं जिसको पतिव्रता
दुनिया को दिखा देना

सुलोचना हाय प्राणनाथ में जरूर जाऊंगी और आपका

सिर लाकर आपके साथ सती हो जाऊंगी

सुलोचना का गाना भुजा हाथ मे लेकर
कैसे बताऊं कैसे सुनाऊं दुखड़ा
मेरे प्राणनाथ
सूरत दिखाओ यह तो बताओ काटा किस जालिम ने हाथ

आज सुबह से हो रहे सब ही बुरे सगुन मानो दरो दीवारों
बरस रहा है खून

मंडला रही चीले अब विले कल को पड़ी है सारी रात
कैसे बताऊ ऐसे सुनाओ

स्वामी किसके आश्रे छोड़ चले मझधार
देखो तुम मेरी तरफ मेरे प्राण आधार
जल्दी न कीजिए विनती सुन लीजिए मुझको भी ले
चलिए साथ कैसे बताऊं कैसे सुनाओ

बैठे-बैठे सुलोचना की गर्दिश ने
घेर मेरी आंखो में हुआ चारों ओर अंधेरा
हे प्राण प्यारे किसके सहारे छोड़ी दुनिया में अनाथ कैसे
बताऊं कैसे सुनाऊं मेरे प्राण नाथ
संबंधी संसार के हो भली भली के मित्र
साजन किस दोष पर छोड़ चले हो प्रीत
संबंधी सारे तुम बिन प्यारे कोई नहीं पूछेगा बात कैसे
बताऊं कैसे सुनाओ

सलोचना का नाटक हां हां मेरे सिर के ताज मेरी इज्जत
को लाज
मेरे साथ आपके जो वादे थे
सभी फजूल गए और जाते समय मुझे साथ ले जाना भूल
गए हे प्राणनाथ थोड़ा धीरे कीजिए और मुझे माता पिता

की आज्ञा लेने दीजिए मैं आपके साथ चलूंगी प्राणनाथ

रावण का महल मंदोदरी सुलोचना

रावण मंत्री से मंत्री आज मेघनाथ ने अवश्य ही राम का
सिर उड़ा दिया होगा
और झगड़ा सदा के लिए मिटा दिया होगा.....

मंत्री रावण से हां महाराज अवश्य ही

दूत दंगल मैं से रावण को रोकर महाराज

रावण दूत से क्यों क्या हुआ
दूत रावण से रो कर महाराज मेघनाथ युद्ध में मारा गया

रावण दूध से दुख में मेघनाथ मारा गया वह भी घोर अति
घोर अनर्थ अन्याय हुआ

दोहा किस तरह खाया चक्कर आज यह आकाश ने
कर दिया है नाश पुत्र मेरा
आज तेरे नाश ने

मंदोदरी रावण से प्राणनाथ यदि आप नाराज ना हो तो मैं
भी कुछ अर्ज करूं

रावण मंदोदरी से नहीं नाराज होने की कौन सी बात है
शायद तुम्हारी बातों से अवश्य लाभ उठा लूंगा

मंदोदरी रावण से हाथ जोड़कर प्राणनाथ यदि आप मेरी
बात को मानते हैं तो
सीता को अब भी रामचंद्र के पास छोड़ आए

जो कुछ बचा है उसी को अपना माने

रावण मंदोदरी से ऐसे कहने से तो अच्छा था कि
तुम भी कुछ ना कहती
और बिल्कुल खामोश ही रहती शौक तुम भी कुछ धीरज देने की बजाय
मेरे जख्मों पर नमक डाल रही हो और ऐसे कायरता के शब्द मुख से निकाल रही हो
अब पृथ्वी पर से एक एक का काम तमाम होगा
मैं प्रतिज्ञा पूर्वक कहता हूं
कल रामचंद्रपुर लक्ष्मण का कुंभकर्ण और मेघनाथ जैसा परिणाम होगा

मंदोदरी रावण से हे प्राणनाथ आपका यह गलत ख्याल है
जहां तक मैं देखती हूं
इस युद्ध में विजय पाना सख्त मुहाल है
क्योंकि सच्चाई उनकी तरफ धार हैं

रावण मंदोदरी से क्रोध में बस बस चुप रहो
अधिक कान ना खाओ
इसी वक्त मेरे सामने से चली जाओ मुझे तेरे ऐसे उपदेशों की जरूरत नहीं
यदि ज्यादा बकवास की तो समझ ले तेरी भी बचने की सूरत नहीं

दंगल में से सुलोचना का गाना इसी सीन पर आहा मेरे करतार प्यारे स्वर्ग सिधारे
छोड़ मुझे मझधार हाय रे मेरे करतार
युद्ध बीच में माता मेरे स्वामी स्वर्ग सिधार गए

विधवा कर गए मुझ दुखिया को ना जीती ने मार गए
लुट गए सब सिंगार हाय रे मेरे करतार

हे माता अब इस दासी का रंज आलम गम दूर करो
शीश मंगा दो मेरे पति का यह विनती मंजूर करो
कर दो अब मेरा उद्धार हाय मेरे करतार

तुम्हें यकीन दिलाने को मैं भुजा साथ में लाई हूं
सती होंउगी साथ पती के निश्चय कर के आई हूं
अब जीना है बेकार हाय रे करतार

सुलोचना का नाटक मंदोदरी से
माताजी मेरे भाग्य का दीपक ठंडा हो गया
और आपका पुत्र मुझे दोनों जहान से खो गया ? परंतु हे माता
आप तो सब दुखों से आजाद हो गए
मगर आप का बुढ़ापा और मेरी जवानी बर्बाद कर गए हैं
माता जी बस आप इतनी कृपा कीजिए
जिस तरह हो सके मेरे पति का सिर मंगवा दीजिए
ऐसा न हो के साथी दूर निकल जाए और दासी मिलने ही ना पाए

मंदोदरी सुलोचना से सुलोचना को गले लगाकर बेटी तुझे धैर्य दू या अपने दुखि मन को संभालु
जरा मेरी ओर देखो
मैं भी बि्तर में कितने गांव लिए बैठी हु
किस पर क्या अफसोस है अपने ही कर्मों का दोष है
मरने वाला तो मर गया परंतु साथ मरकर किसी ने क्या कर लिया
बेटी हिम्मत के साथ रह

सुलोचना मंदोदरी से रोकर आपकी कृपा तथा मेहरबानी की मराकुर हूं परंतु आपकी यह आज्ञा मानने से मजबूर हूं

माता जी मैं अपने विचारों को कदापि नहीं बदल सकती

दोहा मोह के धंधो में फंसकर धर्म कैसे छोड़ दूं
यह टूटने वाला नहीं संबंध
में कैसे तोड़ दुं

मंदोदरी रावण से प्राणनाथ सुलोचना बड़ी देर से रो रही है
और मेघनाथ का शीश मगांने के लिए हट कर रही है

रावण मंदोदरी से उसका सिर मंगवा कर क्या करेगी

मंदोदरी रावण से करेगी क्या पति के साथ सती होगी

रावण मंदोदरी से पहले तो इसका विचार ही वहीयात है
दूसरा इस समय सिर का मिलना कोई साधारण बात नहीं
जब तक वह एक सिर के बदले सौ ..पचास.. और सिर
और न ले लेंगे मेघनाथ का सिर कोई सहज थोड़े ही दे
देंगे

सुलोचन रावण से पिता जी आप इस विषय पर कोई
चिंता नहीं कीजिए केवल आज्ञा दे दीजिए पिताजी मैं
स्वयं जाऊंगी
और अपने पति का सिर ले आऊंगी

रावण सुलोचना से तो यह क्यों नहीं कहती
मैं स्वयं जाकर शत्रु के बंधन में फंस जाऊंगी

सुलोचना रावण से पिता जी यह केवल आपका भ्रम है
सुलोचना को कैद करने की किसको पराक्रम है
रामचंद्र को आपसे हजार शत्रुता तथा लाख कटुरत है
परंतु फिर भी वह सदाचार धर्म की मूरत है
मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह इस अवसर पर कदापि शत्रुता

का विचार नहीं करेंगे

रावण सुलोचना से क्रोध में यह तुम्हारी सरासर भूल और
इस विषय पर हट करना बिल्कुल फिजूल है
तो वहां जाते ही कैद हो जाएगी क्योंकि इसके द्वारा
उनको सीता के छुटकारे की पूरी उम्मीद हो जाएगी

सुलोचना रावण से मान लो यदि ऐसा ही हुआ तो मेरी
जान मेरे हाथ है फिर चिंता करने की कौन सी बात है
रावण सुलोचना से जब तू हुजत बाजी से मेरी हर बात
काटती है
तो मेरा मगज क्यों चाटती है

जो तेरे मन में आए कर और
मेरी आंखों से दूर हो कर मर

सुलोचना का जाना पर्दा गिराना

श्री रामचंद्र जी का कैंप राम लक्ष्मण सुग्रीव अंगद हनुमान
राम विभीषण से विभीषण जी रावण भी कितना हठधर्मी
है
इतना विनाश होने के बाद भी
हट नहीं छोड़ता

विभीषण राम से भगवन वह सदा से ऐसा ही अहंकारी है

हनुमान राम से भगवन रावण की पुत्रवधू हाजिर होना
चाहती है

राम हनुमान से कोई बात नहीं आने दो
सुलोचना राम से प्रणाम भगवन

राम सुलोचना से खुश रहो देवी अपने आने का कारण कहो

सुलोचना राम से भगवन मुझे पति देव की भुजा ने मृत्यु का समाचार लिख कर बता दिया है
और मेरा सारा संदेह है मिटा दिया है
अब मैं सती होना चाहती हुं
और अपने स्वामी का सिर लेने के लिए आप की शरण में आई हूं
और मेरे पति का वध करने वाले के दर्शन करना चाहती हूं

राम लक्ष्मण से भैया लक्ष्मण इनको मेघनाथ का शीश ला कर देदो
और अपनी शक्ल भी दिखा दो

सुलोचना लक्ष्मण से लक्ष्मण की और देखकर लक्ष्मण तू जति है
मेरे पति को जितना तेरा ही काम है

सुलोचना सिर को लेकर हांय नाथ कितने हताश हो रहे हो चेहरा मुरझा गया है
बालों में धूल भर गई है
कितने थके हुए दिखाई देते हो ....

आंचल से सिर् की धूल पौछना..

सुग्रीव राम से भगवन मेरे मन में एक महान शंका है
यदि आज्ञा हो तो पुंछु

राम सुग्रीव से हां हां सुग्रीव अवश्य पुछौ

सुग्रीव राम से भगवन क्या बिना देह और प्राणों के बिना कटी हुई भुजा कुछ लिख सकती है

राम सुग्रीव से हां सुग्रीव पति धर्म बड़ी शक्ति है
सुग्रीव राम से यदि इतनी शक्ति है तो इनके पति का सिर हसे तो हमारा सदैंह दूर हो

राम सुग्रीव से .....सुलोचना यदि यही इच्छा करेगी तो अवश्य हंसेगा

सुलोचना का गाना आ गया परीक्षा का अवसर हंस दे मेरे सरकार कैसे
अटकी है नाव किनारे पर हंस दे मेरे सरकार के सर

हंस दीजिए हे नाथ हस दीजिए नहीं तो मेरा विश्वास कटता है मेरे पति धर्म की महिमा कम होती है क्या लक्ष्मण के बाणौं ने इतना शिथिल कर दिया है
रोकर हंस दीजिए प्राणनाथ
प्रभु के सामने मुझे लज्जित न कीजिए
यदि मैंने सच्चे मन से वचन से आपकी पूजा की है तो आपको जरूर हंसना पड़ेगा

सिर का हंसना बोलो सती सुलोचना की जय

सुलोचना राम से अच्छा प्रभु अब आज्ञा दीजिए
और पति के दर्शन करने दीजिए

राम सुलोचना से धन्य हो सती सुलोचना तुम धन्य हो निसंदेह

जो स्त्रियां छल कपट छोड़कर सच्चे मन से पति की सेवा करती है

वह संसार में यश प्राप्त करके भवसागर तैरती हैं....
पर्दा...

रावण का दरबार चालू

रावण मंत्री से मंत्री जी कल को सारी सेना को
आज्ञा जारी करो
कल मुझे राम लक्ष्मण को खत्म करना है
मैं आज प्रतिज्ञा करता हूं
जब तक राम लक्ष्मण का सीर काट ना लाऊंगा तब तक
चैन से नहीं बैठूंगा

मंत्री रावण से लंकापति नरेश आप कुछ चिंता न करें
अभी आपके एक बेटा और भी है जो पाताल लोक में
राज्य कर रहा है आप उसे शिव मंत्र से उसे यहां बुला
सकते हैं

रावण मंत्री से ठीक है तुम सब जाओ और मुझे अब
शिवमंत्र करने दो
सबका जाना
रावण का मंत्र पढ़ना ओम भूर्भुव स्व भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो न ओम शिव मंत्रजाप आए नमः तमेव माता च
पिता त मेव बंधु च सखा तमेव तमेव विद्या चदरणीमय
तमेव तमेव सखे सुखम देव देव ओम

हई रावण अपने पिता रावण से प्रणाम पिता जी तुमने
मुझे किस लिए याद किया है
और अब किसको जीतने का निश्चय किया है
रावण हई रावण से खड़े होकर तुम आ गए बेटा आओ
पधारो
और मेरे दिल की व्यथा सुनाऊ

हई रावण रावण से कहो पिताजी कुशल तो हो ऐसा क्या संकट आया है
जो मुझे इतनी शीघ्रता से बुलाया है

रावण अहिरावण से उदास होकर क्या बताऊं बेटा कुछ समय से अयोध्या के दो राजकुमार पंचवटी पर आए हुए
एक दिन उन मूर्खो ने तुम्हारी बुआ शूर्पणखा के नाक कान काट डाले
जब खर-दूषण उसकी सहायता के लिए गए तो
उनको भी मार डाला मैंने यह समाचार पाया तो
राम की स्त्री सीता को चुरा लाया इसी छेड़-छाड़ में
कुंभकरण मेघनाथ अक्षय कुमार आदि योद्धा मारे गए
इस बदले की भावना ने मुझे व्याकुल बनाया है
इसीलिए तुम्हें बुलाया है

हई रावण रावण से पिताजी धर्म और नीति को छोड़कर कुमार्ग पर चलने में भलाई नहीं है
पिताजी मेरा आपके सामने बोलने का फर्ज नहीं था
फिर भी मैंने यह सच्ची बात कही है

रावण अहिरावण से बेटा मैंने तुम्हें उपदेश देने के लिए नहीं
सहायता करने के लिए बुलाया है और बेटा होकर तुमने यही कर्तव्य निभाया है

हई रावण रावण से ऐसा ना कहो पिताजी
मैं तुम्हारे लिए प्राण भी दे सकता हूं अच्छा पिताजी तुम अब बताओ क्या चाहते हो

रावण हई रावण से है बेटा तुम्हें ब्रह्द देवी का वरदान हैं
कि तुम हनुमान के अतिरिक्त और किसी से ना मारे

जाओगे
इसीलिए प्रातकाल संग्राम में चले जाओ
और लक्ष्मण तथा राम को ठिकाने लगाऔं

अहिरावण रावण से इससे तो यही अच्छा है
अब रात्रि में दोनों को चुरा ले जाऊं और देवी के भेंट
चढ़ाऊं जिससे सारा काम बन जाए
और देवी भी खुश हो जाए

रावण हई रावण से हंसकर वाह वाह बेटा वाह
यह और भी सुंदर है
अच्छा आधी रात्रि का समय आने वाला है
इसलिए रामा दल में चले जाओ और मन का भय
मिटाओ

हई रावण रावण से अच्छा पिताजी मैं जाता हूं
जब तुम्हें प्रकाश दिखाई दे तो जान लेना
हई रावण राम लक्ष्मण को हर कर ले जा रहा हैं

रामचंद्र जी का कैंप राम सुग्रीव लक्ष्मण हनुमान अंगद

राम विभीषण से प्यारे विभीषण जी अब तो रावण के
पास रही क्या गया होगा
या तो जानकी जी को लेकर
रावण शरण में आएगा
या और योद्धाओं की तरह
आप भी मारा जाएगा

विभीषण राम से नहीं भगवन अभी उसके बेटे और भी हैं
और सगे संबंधीयौं की तरफ भी नजर दौड़ा अएगा

राम विभीषण से क्या उसके बेटे और भी हैं

विभीषण राम से हां भगवन अभी उसके दो और बेटे बाकी है
एक तो पाताल लोक में राज्य करता है
और दूसरा बहूबली पुर में साम्राज्य करता है

हनुमान राम से भगवन अभी आधी रात होने को आई है आपकी क्या आज्ञा

राम हनुमान से अच्छा सब आराम करें
हनुमान तुम पहरे पर सावधान रहना

हनुमान राम से भगवन आप निश्चिंत होकर सो जाइए

..... सबका सो जाना आधा पर्दा करना

अहिरावण स्टेज पर आकर

ओहो भीतर कैसे जाऊ
और कौन सी युक्ति से राम लक्ष्मण को चुराऊ .
मेरा शत्रु वानर बड़ी सावधानी से पहरा दे रहा है
और अपने प्रकोप में सब ले रहा है

कुछ सोचकर अब यही उचित है
की विभीषण का भेष बनाऊ
और बंदर को धोखा दे
परकोट में घुस जाऊं

हई रावण की जगह विभीषण का आना
पर्दा खुलना
विभीषण का आना हुआ भवसागर से पार करो
हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम काठ की माला हाथ में

लंगड़ा कर चलना

हनुमान का बोलना कौन हो तुम वहीं खड़े रहो आगे कहां आते हो

हई रावण हनुमान की जय हो प्रभु जानकी नाथ की जय हो ....

आगे की लाइट ऑफ करनी है

हनुमान हई रावण से कौन हो भाई आधी रात को रामा दल में क्या काम है

हई रावण हनुमान से हनुमान जी आप मुझे जानते नहीं मैं हूं विभीषण

हनुमान खड़ा होकर हई रावण से प्यारे विभीषण जी आप इस समय तक कहां थे

हई रावण हनुमान से हनुमान जी आप मुझे जानते नहीं मैं हूं विभीषण

हनुमान हई रावण से मुझे कुछ संकोच है
विभीषण की तीन निशानी है
वह आप मुझे दिखाएं और बताएं कि आप कहां से आ रहे हैं

हई रावण हनुमान से प्यारे हनुमान जी आप निशानी देख सकते हैं और मैं समुंदर तट पर संध्या करने चला गया था वहां कुछ देर हो गई.....

तीन निशानी पूछना नंबर एक लंगड़ा कर चलना नंबर दो माला में 108 मनके नंबर 3 विभीषण की गर्दन पर काला तिल था

हनुमान हई रावण से अच्छा प्यारे विभीषण चले जाइए

कैंप में अहिरावण का बैटरी से दोनों को अचेत करना और राम लक्ष्मण को उठाकर रफूचक्कर होना

कुछ देर बाद सब का उठना और इधर उधर देखना

हनुमान सुग्रीव से महाराज भगवन कहां है ना ही लक्ष्मण जी दिखाई देते हैं

सुग्रीव हनुमान से हनुमान जी पहरे पर तो आप ही थे क्या रात को कोई आया था

हनुमान सुग्रीव से क्या बताऊं महाराज रात को और तो कोई नहीं आया था
केवल विभीषण जी संध्या करके लौटे थे

विभीषण नहीं नहीं मैं तो यहीं पर था

हनुमान विभीषण से यह आप कैसे कह सकते हैं
मैंने सव्य आपको जब आधी रात को आऐ तब देखा है यही रूप और यही बोली.

विभीषण हनुमान से बस मैं समझ गया प्रभु को पाताल का राजा
हई रावण हर कर ले गया

संसार में बस वह इतना चालाक राक्षस है

जो मेरा रूप और बोली बोलना जानता है

अंगद विभीषण से उदास होकर
तो अब क्या होगा प्रभु को कैसे ढुडं पाएंगे

विभीषण अंगद से बस जिसमें बल हो वह सीधा पाताल लोक जाएं और हई रावण को मार कर प्रभु को छुड़ा लावे

सुग्रीव विभीषण से तो ऐसा काम हनुमान के सिवा और कोई नहीं कर सकता

हनुमान सुग्रीव से हां हां मैं ही जाऊंगा और चौदह भवन और तीन लोको में जहां भी होंगे वहीं से खोज लाऊंगा

सुग्रीव हनुमान से धन्य हो केसरी नंदन तुम धन्य हो

हनुमान सबसे अच्छा मैं जाता हूं तुम सब यहां सावधान रहना

9 दिन शुरू पाताल नगर का द्वार मकरध्वज

राम राम हनुमान का दंगल में से आना और स्टेज पर मकरध्वज का रोकना

मकरध्वज हनुमान से कौन है जी इस तरह नगर में घुसा जा रहा है

हनुमान मकरध्वज से तू कौन है जो मार्ग मैं रोडा अटका रहा है

मकरध्वज हनुमान से तू जानता नहीं मैं पवन
पुत्र ..हनुमान का पुत्र हूं

हनुमान मकरध्वज से हैरान होकर है है क्या कहा हनुमान
का पुत्र तेरा नाम क्या है

मकर ध्वज हनुमान से मकरध्वज

हनुमान मकरध्वज से अरे मूर्ख ऐसे खोटे वचन क्यों
बोलता है
मेरे स्वपन में भी पुत्र नहीं है

मकरध्वज हनुमान से तो क्या आप ही हनुमान है

हनुमान मकरध्वज से हां पवन पुत्र हनुमान मैं ही हूं और
तूने ऐसी झूठी बात क्यों बनाई

मकरध्वज हनुमान से पिताजी यह झूठी बात नहीं है
मैं बिल्कुल सत्य कह रहा हूं
सुनिए जिसमें आप लंका को जला कर समुंदर के ऊपर
से उड़ते हुए जा रहे थे
उस समय आप के शरीर में से पसीना टपक कर समंदर
में जा गिरा और उसे एक मछली ने निगल लिया
बस उसी के गर्भ से मैंने जन्म पाया और फिर हई रावण
की सेवा के लिए पाताल लोक चला आया

हनुमान मकरध्वज से हे पुत्तर देर होने से काम बिगड़
जाएगा इसीलिए मुझे तू जाने दे

मकरध्वज हनुमान से नहीं पिताजी मैं विश्वासघात नहीं
कर सकता आप वापिस लौट जाइए

मैं कदापि भीतर नहीं जाने दूंगा

हनुमान मकरध्वज से अरे हट मेरा रास्ता छोड़ दीवार की तरह क्यों अड़ा खड़ा है

मकरध्वज हनुमान से आगे अकड़कर नहीं महाराज यह नहीं हो सकता या तो मुझे मल युद्ध में हराना होगा नहीं तो वापिस जाना होगा

हनुमान मकरध्वज से अच्छा तो आ पहले तेरा बल ही देख लु
दोनों का ही मल युद्ध होना

मकरध्वज का हार जाना मकर ध्वज को रस्सी से बांध कर आगे प्रवेश करना.... पर्दा उठना ....

देवी का भवन
भवन में हनुमान का बैठ जाना

हई रावण मंत्री से मंत्री जी अब देवी को खुश करने के लिए सब पुजारियों को बुलाया जाए

मंत्री हई रावण से जैसी आज्ञा हो महाराज

हई रावण मंत्री से जाओ उन दोनों तपस्वियों को जल्दी ले आओ देवी भेट लेने के लिए बड़ी देर से खुश है

मंत्री हई रावण से जैसी आज्ञा हो महाराज

राम लक्ष्मण को लाना पर्दे पर

हई रावण मंत्री से मंत्री इन से पूछ लिया जाए कुछ खाना

हो या किसी से मिलना हो या किसी को बुलाना हो तो
यह कार्य हम कर सकते हैं अब इनका आखरी वक्त है

मंत्री राम से तुम्हें कुछ खाना है या किसी को बुलाना है तो
हम उसे भुला सकते हैं
और आपकी इच्छा पूरी कर सकते है

राम मंत्री से ना मुझे कुछ खाना है ना किसी को बुलाना
बस आप मेरी तीन आवाज मेरे छोटे भाई भरत को लगा
दीजिए.

मंत्री का आवाज लगाना कोई भरत लाल आयोध्या का
रहने वाला हाजिर हो
आज तुम्हारे भाई मरते समय याद कर रहे हैं

तीन आवाज देना इसी तरह

मंत्री लक्ष्मण से तुम्हें कुछ खाना हो या किसी को भुलाना
हो तो हम आपकी इच्छा पूरी कर सकते है

लक्ष्मण मंत्री से मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं आप
तीन आवाज हनुमान को लगा दीजिए

मंत्री का आवाज लगाना कोई हनुमान मेरी आवाज सुनता
हो तो हाजिर हो
आपको मरते समय लक्ष्मण याद कर रहे हैं

तीन आवाज इसी तरह लगाना

तीसरी आवाज पर हनुमान का बाहर आना गरज कर
बोलो सियापति रामचंद्र की जय

हई रावण हनुमान से कौन हो तुम

हनुमान हई रावण से तेरा काल औ दुष्ट

हई रावण हनुमान से चल हट मेरे कार्य में विघ्न ना डालं

हनुमान हई रावण से औ दुष्ट पापी चंडाल
लात मारकर अब नर्क में डेरा डाला

दोनों की लड़ाई हई रावण का मारे जाना
राम लक्ष्मण को कंधे पर बैठाकर ले जाना

रावण का दरबार

रावण मंत्री से हंसकर रात्रि के प्रकाश से सिद्ध होता की
हई रावण उन दोनों तपस्वियों को चुरा कर ले गया
और सारी वानर सेना को धोखा दे गया
हंसकर वाह मेरे बेटे वाह वाह... .

दोहा राम तो है चीज क्या
काल भी भयभीत हो
जिसके ऐसे बेटे हो
क्यों नहीं उनकी जीत हो हाहाहाहाहाहा

दूत रावण से महाराज की जय हो श्रीमान अनर्थ हो गया

रावण दूत से क्या हुआ क्यों इतने घबरा रहे हो

दूत रावण से महाराज आपका बेटा हई रावण
हनुमान के हाथों मारा गया

रावण दूत से बड़ा अनर्थ हुआ

दोहा अफसोस आरजुओं की
बस्ती उजड़ गई
कैसी बनी थी बात
बनकर बिगड़ गई

उदास होना

मंत्री रावण से महाराज शांति कीजिए इतने निराश न होइए

रावण मंत्री से महामंत्री जी अब किस बात पर शांति करूं और कैसे धीर धरू

मंत्री रावण से महाराज जरा विचार न कीजिए
आपका पुत्तर बली नारायण तक

बहबलीपुर में राज्य कर रहा है
जिसे आपने ने पैदा होते ही
समुंद्र में बहा दिया था
रावण मंत्री से शाबाश मंत्रीवर खूब याद दिलाया और एंन मौके पर याद दिलाया
अच्छा तुम जल्दी जाओ
और उसे सब हाल सुनाकर
जल्दी बुला लाओ

मंत्री रावण से जैसी आज्ञा हो महाराज

नारायण तक दरबार

नारायणतक मंत्री से महामंत्री दरबार में गाने वाली पेश करो .

मंत्री नारायणतक से जो आज्ञा महाराज
गाने वाली दरबार में हाजिर हो

नारायणतक गाना सुनकर
मेरी धडकनो ने कंपा दिया है
लोक और सुर धाम को
जानते हैं सारे आज नारायणतक के नाम को

मंत्री नारायणतक से महाराज की जय हो
लंका से एक दूत आया है
जो आपके नाम संदेश लाया है

मंत्री नारायणतक से कुछ नहीं पूछो महाराज आज लंका
पर बड़ी आपत्ति आई है
शत्रुओं की सेना चारों ओर से मंडरा रही है

नारायणतक दूत से ऐसा कौन है हीऐ का अंधा है
जिसने पर युद्ध करने की ठानी है

दूत नारायणतक से महाराज
राम और लक्ष्मण दोनों अयोध्या के राजकुमारो ने
बढ़ा ही अनर्थ कर डाला
और लंका के सारे योद्धाओं को
मार डाला
इसलिए हमें तुम्हारी सहायता की जरूरत है
इसीलिए महाराज आप हमारे साथ चलें

नारायणतक दूत से अछा दो राजकुमारों का इतना साहस
की किसी का भी भय ना खाऐ
अच्छा मै इसी वक्त चलता हूं

दोहा कौन है जो आ गए
तगं अपनी जान से
नासमझ बाजी लगा बैठे
अपने प्राणो से

मौत से टकराएगा तो
नाश होता जाएगा
सामने जो आ गया
भूमि पर सोता जाएगा

रामा दल सुग्रीव विभीषण राम लक्ष्मण हनुमान अंगद

विभीषण राम से महाराज की जय हो
है प्रभु रावण का पुत्र नारायण तक
लड़ने के लिए आ रहा है
शायद रावण उसे बुला कर लाया है

राम विभीषण से हैरान होकर क्या रावण का कोई पुत्तर
नारायण तक भी है भी है

विभीषण राम से है भगवन आजकल वह बहबलीपुर का
राजा है और बड़ा पराक्रमी योद्धा है

राम हनुमान से अच्छा प्यारे हनुमान जी तुम लक्ष्मण
सहित चले जाओ और मार्ग में उसका अहंकार मिटाओ

हनुमान राम से जैसी आज्ञा हो प्रभु दोनों का लड़ाई में
जाना

नारायणतक मंत्री से हनुमान को देखकर मंत्री जी यह
कौन है जो सामने से अकड़ता हुआ आ रहा है

मंत्री नारायणतक से महाराज यह

हनुमान नाम का एक बंदर है और यह बड़ा वीर है ईसी ने
एक बार लंका को जलाया था
और हईरावण को मारकर दोनों भाइयों को बचाया है

नारायण तक मंत्री से हंसकर हा हा हा अब अच्छा हुआ
पहले मुहूर्त पर ही शिकार मिल गया

हनुमान नारायणतक से और दुष्ट इतना क्यों उछल रहा है
देखता हूं तुझे कौन बचाता है

दोनों की लड़ाई हनुमान का बेहोश होना

लक्ष्मण नारायण तक से बस बस वो कायर क्यों इतनी
बातें बना रहा है यदि वीर है तो
कर्म क्यों नहीं दिखाता

नारायण तक लक्ष्मण से अरे मूर्ख यह वह मेघनाथ नहीं
जो तुम्हारे धोखे में आ जाएगा

दोहा चाहता है जी तेरा जाने को यम के धाम को
छोड़ जाएगा यहां रोता हुआ राम को

लक्ष्मण नारायणतक बस बस जो अन्याय अब जीवन
की आस छोड़ दे

दोहा खेर थी जब तक तुझे
रावण ने बुलाया ना था
जी रहा था तब तलक
सामने तू आया नहीं था

दोनों की लड़ाई लक्ष्मण का मूर्छित होना

सुग्रीव नारायण तक से वो कायर क्या तो अब बच कर जाएगा
रावण को बुला तेरी लाश उठाकर ले जाएगा

नारायण तक सुग्रीव से अब सामने आ गया है तो अपना कुछ पराक्रम दिखा

दोहा तू तो चीज ही क्या है
जब योद्धा मारे जाते हैं
इसलिए दुनिया से कैसे सुरमा जाते हैं

दोनों की लड़ाई सुग्रीव का राम के पास पहुंचना

सुग्रीव राम से भगवन आज नारायण तक ने तो बड़ा ही अनर्थ कर रखा है

राम सुग्रीव से प्यारे सुग्रीव घबराओ नहीं मैं ही उस दुष्ट का अभिमान तोडूंगा

लक्ष्मण राम से हां भैया उस दुष्ट का जल्दी संहार कीजिए
और वानर सेना की शांति का उपाय कीजिए
नहीं तो वो दुस्ट सबको साहस हीन कर देगा

राम सबसे तुम घबराओ मत मैं अभी उस पापी का सिर काट कर दिखाता हूं

राम का लड़ाई में जाना अंदर से नारद मुनि का आना

नारद नारायण नारायण नारायण नारायण

राम नारद से प्रणाम मुन्नी वर आइए मुनि जी पधारिए

नारद राम से नारायण नारायण नमस्कार भगवन
कहिए इतने रात्रि तक क्या विचार हो रहा है
राम नारद से क्या बताएं मुनि वर कई दिनों से युद्ध हो रहा है
परंतु रावण का बेटा नारायण तक मरने में नहीं आता है
नारद राम से यह इस तरह से नहीं मरेगा इसे ब्रह्मा का वरदान है इसलिए यह एक ही उपाय से मर सकता है
राम नारद से रहे क्या उपाय है मुनिवर

नारद राम से सुनिए भगवन कथा एक समय रावण के राज्य में 72 राक्षस पैदा हुए
तो रावण ने अपने गुरु शुक्राचार्य को बुलाकर जन्म शगुन पूछा
शुक्राचार्य ने कहा कि इस लग्न के बालक मुलो से उत्पन्न हुए यदि घर में रहेंगे तो अपने पिताओं का नाश कर देंगे
यह सुनते ही रावण ने सबको समुंदर में डलवा दिया परंतु वह बालक वटवृक्ष के सहारे पलने लगे

उन्होंने बड़े होने पर ब्रह्मा जी का तप किया तो ब्रह्मा जी ने प्रसन्न होकर उन्हें बहबलीपुर में बसा दिया

उन्होंने रावण के पुत्र नारायनतक को राजा बना दिया
उन्हीं के साथ उसी जगह सुग्रीव का बेटा भी तप कर रहा था
एक दिन नारायणतक ने ददीबल को खूब मारा
तो ददीबल ने बदला लेने के लिए ब्रह्मा जी का तप किया
तो ब्रह्मा ने खुश होकर वरदान दिया कि जाओ तुम्हारे हाथ से नारायण तक की मृत्यु होगी
हे भगवन आप सुग्रीव के बेटे ददी बल को बुलाएं और इस राक्षस को ठिकाने लगाएं

राम नारद से परंतु हे मुनिवर अब ददीबल रहता कहां है

नारद राम से भगवन वह धौलागिरी पर्वत पर आप का भजन कर रहा है

राम हनुमान से प्यारे हनुमान जी आप जल्दी जाएं और धौलागिरि पर्वत से ददीबल को ले आए

हनुमान राम से जैसी आज्ञा हो भगवन

हनुमान का ददीबल को बाहर की तरफ़ से लेके आना

ददी बल राम से चरणों में गिरकर

कृपासिंधु भगवन की जय हो

राम ददीबल से चिरंजीव रहो ददीबल

ददीबल सुग्रीव से प्रणाम पिता जी

सुग्रीव ददी बल से चिरंजीव रहो पुत्तर कहो बेटा कुशल से तो हो

ददीबल सुग्रीव से हां पिताजी प्रभु का अनुग्रह और आपका आशीर्वाद है
सुग्रीव ददीबल से हे बेटा तुम जानते ही हो कि आजकल नारायण तक से युद्ध चल रहा है
वह तुम्हारे हाथों ही मारा जाएगा

ददीबल सुग्रीव से पिता जी आप फ़िक्र ना करें मैं उस दुष्ट को कदापि नहीं छोडूंगा

युद्धभूमी नारायण तक और ददीबल

नारायण रामा दल गरज कर आओ सिंग के शिकारों
अपनी अपनी गुफाऔं से निकल कर आओ

दोहा जी चुके बहुत
अब प्राणों की रक्षा छोड़ दो
नाश का दिन आ गया
जीने की आशा छोड़ दो

ददीबल नारायण तक से प्यारे मित्र नारायण तक कहो
आनंद से तो हो

नारायणतक ददीबल से कोन ददीबल कहो तुम यहां कहां

ददीबल नारायण तक से मैंने सुना है कि आप रावण का
पक्ष ले कर तुम भी भगवन से बैर करने चले आए

नारायण तक ददी बल से प्यारे दधीबल हम दुश्मन से
प्रीत नहीं किया करते और ना बैरी का कभी मान लिया
करते
यह रीती भी तुमने ही निकाली है जो अपने बाली के शत्रु
कोअपनी आबरु बेच डाली है

ददी बल नारायणतक से अरे मुर्ख तेरी नीति कूल का मान
नहीं कूल नाश करने वाली है

दोहा रखकर लंका की आशाओं को रोने से बचा
तू बचा सकता है तो कुल का नाश होने से बचा

नारायणतक ददीबल से
बस बस मैं समझ गया कि तु मेरी नरमी से नहीं मानेगा
मेरे हाथों को अवश्य कष्ट देगा

दोहा इस परम शिक्षा का फल सिखाता हूं तुझे
देख अब भूमि की सैंया पर सुलाता हूं तुझे

ददी बल नारायण तक सेअच्छा यदि तेरी यही इच्छा है तो आ शिक्षा के द्वारा नहीं मानता तो संग्राम के द्वारा अपने बुरे कर्मों का फल पा

दोनों की लड़ाई नारायण तक का मारा जाना इसी सीन पर

राम ददीबल से धन्य हो ददीबल तुम धन्य हो तुम ने बड़ी वीरता का काम किया और सब की चिंता को हर लिया है

पर्दा बंद

रावण का दरबार

रावण मंत्री से मंत्री दरबार में गाना पेश किया जाए
जिससे हमारा रंग जमीन और दिल की कली खिली जाए

मंत्री रावण से जैसी आज्ञा हो महाराज
गाने वाली बुलाकर और गाना सुन कर

रावण मंत्री से प्यारे मंत्री वर आज बड़ा खुशी का दिन है आज मेरा बेटा नारायण तक लड़ाई में गया है राम और लक्ष्मण का सिर अवश्य काटेगा हा हा हा

दूत रावण से महाराज की जय हो नारायण तक लड़ाई में मारा गया

रावण दूत से क्या बकते हो तुम्हारी जबान ठिकाने नहीं है

दूत रावण से मैं सच कह रहा हूं महाराज

रावण दिल में बड़ा ही अनर्थ हुआ है ऐसे ऐसे व्यक्ति लड़ाई में मारे गए अफसोस
रावण मंत्री से महामंत्री सताकी इसी समय सेना को तैयार करो
मैं देखता हूं वह तपस्वी के बच्चे कितने गहरे पानी में है

मंत्री रावण से जैसी आज्ञा हो महाराज
रावण का लड़ाई में जाना

रामा दल

राम लक्ष्मण सुग्रीव हनुमत
विभीषण अंगद जामवंत

सुग्रीव राम से भगवन आज तो रावण समय लड़ाई के लिए आया है इसीलिए बादल सा छा रहा है

राम सुग्रीव से प्यारे सुग्रीव कोई चिंता की बात नहीं आखिर रावण कोई खुदा तो नहीं

रावण ललकार कर जरा सामने आओ आज तुझमैं किस की मौत की बारी है
हनुमान रावण से खबरदार होजा क्यों इतना उछलता है

रावण हनुमान से बुज दिल होशियार हो जा क्यों इतना अकड़ता है

हनुमान रावण से तू भी मरने के लिए तैयार हो जा दोनों की मल युद्ध से लड़ाई

रावण ने हनुमान को मुक्का मारना हनुमान का जमीन पर हाथ टिकना

हनुमान का रावण के मुक्का मारना रावण का पीछा जमीन पर टिकना

हनुमान का हनुमान का बेहोश होना
लक्ष्मण रावण से संभल जा अब तेरे काल का संदेश आ गया

रावण लक्ष्मण से आ गया मुझे भी अफसोस था कि तू मेघनाथ को मार कर जिंदा चला गया

लक्ष्मण रावण से बाण छोड़कर मेघनाथ को तो तूने रो लिया लेकिन तुझे कौन रोएगा

रावण लक्ष्मण से वो होशियार हो जा

लक्ष्मण रावण से वोअधर्मी मरने को तैयार हो जा

दोनों की लड़ाई लक्ष्मण का मूर्छित होकर गिरना

सुग्रीव रावण से औ बेईमान क्यों शेर की तरह विफर रहा है तुझे पता नहीं तेरे सामने सुग्रीव अड़ रहा हैं

रावण सुग्रीव से हा हा यह दूसरे तीस मारखा बोले बाप ने मारी मेंढकी .बेटा तीरंदाज अपनी स्त्री के लिए सिर घूमता रहा अब अंगुली के खून लगा कर शहीदों में शामिल होना चाहता हैं भुजदील कहीं का

सुग्रीव रावण से अधिक बक बक न लगा वीरों की तरह

मुकाबले पर आ

दोनों की लड़ाई सुग्रीव का मूर्छित होना

रावण का एक तरफ होना

विभीषण रावण से भगवन युद्ध में बड़ा घमासान हो रहा है
जिस और रावण का हाथ घूमता है सब को नष्ट किए बगैर नहीं रहता है

राम विभीषण से प्यारे विभीषण रावण एक प्रत्यक्ष काल है
अब वह सिर पर कफन बांध कर आया है
मगर अब रावण को जितनी देर जिंदा रहना था रह लिया
अब यह सुरपुर की हवा जरूर खाएगा

राम विभीषण का लड़ाई में जाना

रावण राम से गरज कर आओ तपस्वी आज मैं तेरे खून से अपने बेटों का बदला लूंगा

दोहा बाघ कर जान छिपने से
बच सकती नहीं
आज बचाऐ तुझे
ऐसी कोई शक्ति नहीं

राम-रावण से हे रावण तू इतनी भूल कर रहा है
यदि किसी से भी नहीं डरता तो मृत्यु के चक्कर से तो डर

दोहा नाश होने से तू अपने को बचा सकता नहीं
जान ले रावण की

ओर को मिटा सकता नहीं

राम का गाना रावण से मिलमा दशानन हो होशियार अब जाएगा मारा
रावण तपस्वी को हो होशियार आ गया काल तुम्हारा
राम वीपर जी साधो अपनी क्रिया को
सूत समझाने त्रिया को
चुरा रघुकुल की नार वंश नष्ट किया सारा़़़़़
रावण जो विप्रो की राजदुलारी
क्षत्रि कह उन्हें महतारी
तेरा क्या था अधिकार नाक कत्ल कर डाला
राम मांगे थी कामदेव की भिक्षा
इस हेत देई थी शिक्षा
कह सूत्र को भरतार आप तने थी धारा़़़
रावण बहना को कुटिल बताते
और अपना दोस् छिपाते
जान तुझे बदकार पिता ने घर से टारा़़़़़
राम अब वाद विवाद मिटाओ
ले शस्त्र युद्ध में आओ
करूं मैं तेरा उद्धार हो भव नील से पारा़़़
रावण मैं युद्ध करू डट डट के
नहीं भागू रण से हटके
खुला मुक्ति का द्वारा कोई न रोकन हारा़़

रमायण पेज 188

रावण राम से नाटक हे तपस्वी तु मुझे क्या ज्ञान सिखाता है
अरे मूर्ख देख मैंने सब देवताओं की शक्ल बिगाड़ दी
स्वर्ग के देवता भी मेरी इच्छा से अपना पेट पालते हैं

राम-रावण से वो हठधर्मी अब वो दिन जा चुके और विनाश के देवता तेरी गर्दन दबा चुके
हो पापी होशियार हो जा

मैं यह पहला बाण तुझे ब्राह्मण समझकर चरणों में नमस्कार करता हूं
रावण राम से तू भी होशियार हो जा और मरने के लिए तैयार हो जा

दोनों की लड़ाई रावण का नहीं मरना

सुग्रीव राम से भगवन जल्दी खत्म कीजिए
राम सुग्रीव से क्या करूं सुग्रीव इस दुष्ट के जितने सीस काटता हूं उतने ही उत्पन्न हो जाते हैं

विभीषण राम से भगवन इसने कई बार शीश काट काट कर भगवान शंकर का पूजन किया है इस तरह नहीं मर सकता

राम विभीषण से तो अब फिर क्या करना चाहिए

विभीषण राम से सुनिए भगवन
दोहा इस तरह यह नहीं मर सकता किसी हथियार से तीर से बर्छी भाला ढाल से और तलवार से
नाभि में है इसके अमृत कुंड जानना चाहिए
यह मरेगा तब इसे पहले सुखाना चाहिए
राम विभीषण से ओहो यह भेद अब अग्निबाण से इस कुंड को सुखाता हूं और भूमि का नाश मिटाता हूं

दोनों की लड़ाई रावण का बेहोश होना

राम लक्ष्मण भैया लक्ष्मण यद्यपि रावण से हमारी तकरार थी फिर भी पुराना तजुर्बे कार था आप इनके पास जाओ और उपदेश ले लाभ उठाओ
लक्ष्मण राम से जी जैसी आज्ञा हो भगवन

लक्ष्मण रावण के सिर की तरफ खड़े होना
लक्ष्मण रावण से लंकेश हमारी तुम्हारी जो दुश्मनी थी वह समाप्त हो गई अब हमें उपदेश देकर कृतार्थ करें रावण चुप

राम लक्ष्मण से भैया नीति का उल्लंघन कर के उपदेश कैसे पा सकते हो गुरु का निरादर कर के लाभ कैसे उठा सकते हो
जाओ चरणों की ओर खड़े हो कर पुकारो

लक्ष्मण राम से बहुत अच्छा भगवन

लक्ष्मण रावण से पैरों की तरफ खड़े होकर महात्मन मेरी प्रार्थना स्वीकार कीजिए कोई उत्तम शिक्षा दीजिए

रावण लक्ष्मण से आंखें खोलकर वीर लक्ष्मण तुम सव्यं अपने ज्ञान से जगत का कल्याण करते हो किंतु मेरा अनुभव करके मेरा सम्मान करते हो तो अच्छा सुनो

रावण का दोहा सिखाना ज्ञान तुमको
दीप सूरज को दिखाना
तुम्हारी ज्ञान शक्ति को
वेदों ने बखाना
सुनना सीख अपनों की
न ध्यात नीति पर
महा कुल सम्मान खोना
धर्म की जड़ कटाना है
समझना बल अधिक अपमान सदा अभिमान में रहना
यह अपने आप पैरों पर कुल्हाड़ी चलाना है
बुरा है काम काम छोड़ देता कल पर
भंवर में बीच के खुद अपनी नौका को गिराना है

लक्ष्मण रावण से धन्य हो ज्ञान के पुंज रावण तुम धन्य हो

रावण लक्ष्मण से अच्छा लक्ष्मण व भैया विभीषण प्यारे भगवन मैं तुम्हारे कहे में आता तो आज यह दिन नहीं देखना पड़ता भगवन अब बोला नहीं जाता प्राण पखेरू उड़ना चाहते हैं अच्छा हाय राम राम राम विदा

रावण का समाप्त होना

जय श्रीराम जय श्रीराम जय श्रीराम

प्रदीप कुमार घोड़ेला अनिल सिंह काटीवाल और सुनील हौदखासिया